एसआईआर के खिलाफ संसद परिसर में प्रदर्शन - 12

रूस भारी व्यापार घाटे पर भारत की चिंता को दूर करने के लिए तैयार - 12

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा के इलाज के लिए ब्रिटेन से आएंगे चिकित्सक - 13

जीत के लिए कोहली-रोहित पर देश की नजरें, दोनों ने विश्व कप के लिए अपना दावा किया पुख्ता -14

26.0° अधिकतम तापमान | 16.0° न्यूनतम तापमान
सूर्योदय 06:41 | सूर्यास्त 05:16

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

कानपुर नगर

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण
लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष त्रयोदशी 12:26 उपरांत चतुर्दशी विक्रम संवत 2082

बुधवार, 3 दिसंबर 2025, वर्ष 4, अंक 103, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 5 रुपये

ब्रीफ न्यूज

बम की धमकी के बाद विमान को मुंबई में उतारा गया

मुंबई/हैदराबाद। कुवैत से हैदराबाद आने वाली इंडिगो की एक उड़ान को बम की धमकी मिलने के बाद मार्ग परिवर्तित करते हुए मुंबई में मंगलवार को आपातकाल स्थिति में उतारा गया। सूत्र ने बताया कि इंडिगो की उड़ान संख्या 6ई1234 के लिए पूर्ण आपातकाल घोषित कर दिया गया। हैदराबाद हवाई अड्डे को मंगलवार सुबह छह बजकर 33 मिनट पर इस विमान के लिए बम की धमकी से संबंधित ईमेल प्राप्त होने के कारण इसका मार्ग परिवर्तित कर दिया गया था। बम खतरा आकलन समिति (बीटीएसी) हैदराबाद हवाई अड्डे पर पहुंची और इसे गंभीर खतरा घोषित किया।

10.42 करोड़ की 45,984 ई-सिगरेट जब्त, तीन गिरफ्तार

नई दिल्ली। राजस्व आसूचना निदेशालय (डीआरआई) के अधिकारियों ने तूतीकोरिन में 10.42 करोड़ रुपये मूल्य की 45,984 ई-सिगरेट जब्त कीं और तस्करी के इस गिरोह में शामिल तीन लोगों को गिरफ्तार किया। वित्त मंत्रालय ने बताया कि खुफिया जानकारी मिली थी कि ई-सिगरेट की तस्करी में शामिल एक गिरोह तूतीकोरिन बंदरगाह के रास्ते छाते की आड़ में चीन से ई-सिगरेट से भरे एक कंटेनर को भारत में आयात करने की साजिश रच रहा है, जिसके बाद डीआरआई के अधिकारियों ने तूतीकोरिन बंदरगाह पर कंटेनर को रोक लिया। जांच के दौरान कुछ डिब्बों में छाते भरे हुए पाए गए जबकि एक बड़े हिस्से में उनके पीछे छिपी ई-सिगरेट बरामद की गईं।

मुरादाबाद में 10वीं के छात्र ने शिक्षक पर किया चाकू से हमला

मुरादाबाद। यहां के जीजी हिंदू इंटर कॉलेज में 10वीं में पढ़ने वाले एक छात्र ने शिक्षक को चाकू मारकर घायल कर दिया। पुलिस घायल शिक्षक की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर छात्र की तलाश कर रही है। मंगलवार सुबह 9:20 बजे भौतिक विज्ञान के शिक्षक अरुण कुमार त्यागी कॉलेज पहुंचे तो गेट पर छात्र ने पीछे से चाकू से वार कर दिया। हालांकि उस समय शिक्षक को अहसास नहीं हुआ। स्कूल के चौकीदार रामनरेश ने देख लिया। हाथ में खून लगा तो वह चौंक गए।

गतिरोध खत्म...बनी सहमति, 8 को वंदे मातरम् व चुनाव सुधार पर चर्चा 9 को

नई दिल्ली, एजेंसी

सरकार ने लोकसभा में चुनाव सुधारों पर चर्चा से जुड़ी विपक्ष की मांग को मंगलवार को स्वीकार कर लिया, जिससे शीतकालीन सत्र के शुरुआती दो दिनों से जारी गतिरोध के खत्म होने के आसार हैं। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के साथ सत्तापक्ष और विपक्ष के नेताओं की बैठक में यह सहमति बनी कि राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् की रचना के 150 साल पूरा होने के विषय पर सोमवार को तथा चुनावों सुधारों के मुद्दे पर मंगलवार एवं बुधवार को चर्चा होगी। इस बैठक के बाद कार्य मंत्रणा समिति (बीएसी) की भी बैठक हुई, जिसमें इन विषयों पर चर्चा कराने पर मुहर लगाई गई। यह भी तय किया गया कि आगामी सोमवार को सदन में वंदे मातरम पर चर्चा की शुरुआत प्रधानमंत्री मोदी करेंगे।

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने एक्स पर पोस्ट किया, लोकसभा अध्यक्ष की अध्यक्षता में हुई सर्वदलीय बैठक के दौरान सोमवार आठ दिसंबर को दोपहर 12 बजे से राष्ट्रीय गीत ''वंदे मातरम'' की 150वीं वर्षगांठ पर लोकसभा में चर्चा और मंगलवार नौ दिसंबर को दोपहर 12 बजे से चुनाव सुधार पर चर्चा करने का निर्णय लिया गया है। बीएसी की बैठक के बाद लोकसभा में कांग्रेस के मुख्य सचेतक कोडिकुनिल सुरेश ने संवाददाताओं से कहा, बीएसी की बैठक के बाद वंदे मातरम और चुनाव सुधारों पर चर्चा के बारे में फैसला किया गया। सोमवार को वंदे मातरम पर चर्चा होगी और इस चर्चा की शुरुआत प्रधानमंत्री करेंगे। इसके बाद मंगलवार और बुधवार को चुनाव सुधारों पर चर्चा होगी तथा जरूरत पड़ने पर समय बढ़ाया जा सकता है। मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मुद्दे पर लोकसभा में सोमवार और मंगलवार को गतिरोध की स्थिति बनी रही। विपक्षी दलों के सदस्यों ने इस मुद्दे पर सदन में हंगामा किया। सोमवार को संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत हुई।

शीतकालीन सत्र

- सदन में वंदे मातरम पर चर्चा की शुरुआत प्रधानमंत्री मोदी करेंगे

मणिपुर जीएसटी विधेयक संसद से मंजूर

संसद ने मंगलवार को मणिपुर माल एवं सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2025 को मंजूरी दे दी जो इस संबंध में लाए गए अध्यादेश की जगह लेगा। उच्च सदन ने वित्त मंत्री सीतारमण के जवाब के बाद विधेयक को ध्वनिमत से लौटा दिया। लोकसभा ने एक दिन पहले ही इस विधेयक को मंजूरी दी थी।

सरकार भारत टैक्सी एप करेगी लॉन्च

सहकारिता मंत्री अमित शाह ने संसद को बताया सरकार जल्द भारत टैक्सी एप लॉन्च करेगी, जिसका उद्देश्य देश के वाणिज्यिक वाहन चालकों को निजी कंपनियों पर निर्भरता से मुक्त करना है। एप से अनुकूल यात्रा के लिए मोबाइल फोन पर बुकिंग, पारदर्शी किराया, वाहन ट्रैकिंग, बहुभाषी इंटरफेस व अन्स सेवाएं शामिल हैं।

कारोबारियों को जीएसटी व स्टांप ड्यूटी पर छूट, हर मंडल में दिव्यांग पुनर्वास केंद्र

योगी कैबिनेट की 20 प्रस्तावों पर मुहर, निजी अस्पताल प्रोत्साहन नीति पुनर्परीक्षण के लिए वापस

- अयोध्या में आधुनिक मंदिर संग्रहालय कानपुर व बरेली में पेयजल सुधार परियोजनाओं को मंजूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में विकास, पर्यटन, औद्योगिक निवेश, दिव्यांग कल्याण, शहरी पेयजल, खेल और सामाजिक पुनर्वास से जुड़े 20 महत्वपूर्ण प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। निजी अस्पताल प्रोत्साहन नीति का प्रस्ताव पुनर्परीक्षण के लिए वापस भेजा गया।

लोक भवन में दो घंटे चली मंत्रिपरिषद बैठक में कुल 21 प्रस्ताव रखे गए। सबसे बड़ा निर्णय हर मंडल में दिव्यांग पुनर्वास केंद्र स्थापित करने का रहा। अयोध्या में आधुनिक मंदिर संग्रहालय, वाराणसी में राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र और कानपुर व बरेली में पेयजल सुधार परियोजनाओं को मंजूरी मिली। कारोबारियों को जीएसटी और स्टांप ड्यूटी पर छूट से 3 हजार करोड़ के निवेश का रास्ता साफ हुआ।

वित्त व संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि 18 मंडल मुख्यालयों में नए जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र खोलने की अनुमति दी गई। इन केंद्रों पर सर्वे, पहचान, प्रमाणपत्र, नैदानिक सेवाएं, कृत्रिम अंग, प्रशिक्षण व उपकरण वितरण जैसी सभी सुविधाएं एक ही जगह उपलब्ध होंगी। अयोध्या को वैश्विक सांस्कृतिक गंतव्य के रूप में विकसित करने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए कैबिनेट ने 52.102 एकड़ में वर्ल्ड-क्लास मंदिर संग्रहालय बनाने का निर्णय लिया। यह परियोजना टाटा सन्स के सीसीआर फंड से बनेगी, इसी के द्वारा चलाई जाएगी। संग्रहालय का दायरा बढ़ाते हुए 27.102 एकड़ अतिरिक्त भूमि निःशुल्क हस्तांतरित किए जाने को मंजूरी दी गई। मंदिर प्राण प्रतिष्ठा और ध्वजारोहण के बाद अयोध्या में रोज दो से चार लाख पर्यटक पहुंच रहे हैं, ऐसे में यह संग्रहालय एक नया वैश्विक आकर्षण बनेगा।

लोकभवन में आयोजित मंत्रिपरिषद की बैठक में उपस्थित मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व अन्य।

बरेली और कानपुर को 582.74 करोड़

शहरी पेयजल व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए अमृत–2.0 के तहत बरेली और कानपुर की 582.74 करोड़ रुपये की दो मेगा जल परियोजनाओं को मंजूरी दी गई। बरेली में 92% आबादी तथा कानपुर के ईस्ट–साउथ जोन के 33 वार्ड लाभान्वित होंगे।

3000 करोड़ के निवेश प्रस्तावों को रफ्तार

उद्योग क्षेत्र में एसजीएसटी–स्टांप ड्यूटी में छूट के तहत मेरठ की पसवारा पेपर्स को 65.67 लाख रुपये का लाभ स्वीकृत किया गया। शाहजहांपुर और मथुरा की औद्योगिक इकाइयों को भी प्रोत्साहन लाभ मंजूर हुए। इससे 3000 करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्तावों को गति मिलेगी।

यह हैं कैबिनेट के प्रमुख फैसले

1. हर मंडल में जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र (डीडीआरसी)
2. अयोध्या में 52.102 एकड़ में वर्ल्ड-क्लास मंदिर संग्रहालय
3. खिलाड़ियों के प्रशिक्षण/प्रतियोगिता/यात्रा को 'ड्यूटी' माना जाएगा
4. वाराणसी सिगरा स्टेडियम साई को सौंपकर राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र
5. बरेली पेयजल पुनर्गठन परियोजना के लिए 265.95 करोड़ रुपये
6. कानपुर ईस्ट–साउथ जोन पेयजल पाइपलाइन विस्तार के लिए 316.78 करोड़
7. एसडीएसटी–स्टांप ड्यूटी में छूट, तीन औद्योगिक इकाइयों को लाभ
8. 3000 करोड़ से अधिक के औद्योगिक निवेश को हरी झंडी
9. चंदौली में 29.67 किमी 4-लेन सड़क के लिए 4.91 अरब रुपये
10. कानपुर में 45,000 वर्गमीटर भूमि मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल हेतु
11. अमेठी में 70.885 हेक्टेयर औद्योगिक पार्क
12. जेल मैनुअल–2022 में संशोधन–जातिगत भेदभाव पर सख्त प्रावधान
13. पेंशन अध्यादेश को अधिनियम में परिवर्तित करने का निर्णय
14. उद्योगों पर प्रदूषण शुल्क/नियम संशोधन
15. इंटीग्रेटेड टाउनशिप नीति–2005 एवं 2014 में संशोधन–रुकी परियोजनाएं पूरी होंगी
16. शहरी विकास विभाग की भूमि आवंटन योजनाएं
17. नगर निकाय अधोसंरचना सुधार योजनाएं
18. राजस्व/प्रशासनिक नियम परिवर्तन
19. परिवहन व सड़क सुरक्षा संशोधन प्रस्ताव
20. स्वास्थ्य ढांचे विस्तार हेतु भूमि/अनुमोदन स्वीकृत

देश के नागरिक गरीबी से जूझ रहे, घुसपैठियों के लिए क्या रेड कार्पेट बिछाए जाएं

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने देश में रह रहे रोहिंग्या के कानूनी दर्जे पर मंगलवार को तीखा सवाल करते हुए पूछा कि क्या घुसपैठियों के स्वागत के लिए रेड कार्पेट बिछाना चाहिए जबकि देश के अपने नागरिक गरीबी से जूझ रहे हैं। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने मानवाधिकार कार्यकर्ता रीता मनचंदा की ओर से दायर बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर सुनवाई करते हुए ये तीखी टिप्पणियां कीं। इस याचिका में आरोप लगाया गया है कि यहां अधिकारियों की हिरासत से कुछ रोहिंग्या लापता हो गए हैं। अब मामले की सुनवाई 16 दिसंबर को होगी।

याचिका में अधिवक्ता ने आरोप लगाया कि मई में दिल्ली पुलिस ने कुछ रोहिंग्या को पकड़ा था, वे कहां हैं, इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि अगर उनके पास भारत में रहने का कानूनी दर्जा नहीं है तो वे घुसपैठिए हैं। उत्तर भारत में हमारी सीमा बहुत संवेदनशील है। अगर कोई घुसपैठिया आता है, तो क्या हम उनका यह कहकर स्वागत करेंगे कि हम उन्हें सभी सुविधाएं देना चाहते हैं? न्यायालय ने कहा कि उन्हें वापस भेजने में क्या समस्या है?

- रोहिंग्या मामले में शीर्ष कोर्ट ने की तीखी टिप्पणी

क्या रोहिंग्या शरणार्थी घोषित के हकदार

सीजेआई ने कहा कि क्या रोहिंग्या शरणार्थी घोषित किए जाने के हकदार हैं? अगर हां, तो उन्हें कौन-सी सुरक्षा, विशेषाधिकार प्राप्त हैं? दूसरा मुद्दा यह है कि अगर रोहिंग्या शरणार्थी नहीं हैं और घुसपैठिए हैं, तो क्या उन्हें निर्वासित करने की केंद्र और राज्यों की कार्रवाई उचित थी। अगर रोहिंग्या को घुसपैठिया माना भी गया है, तो क्या उन्हें अनिश्चित काल तक हिरासत में रखा जा सकता है या उन्हें उचित शर्तों के साथ जमानत पर रिहा किया जा सकता है।

हर बुधवार को सुनवाई

पीठ ने याचिकाओं को तीन समूहों में विभाजित किया है। उन पर हर बुधवार को सुनवाई तय करेगा। पीठ ने संकेत दिया कि जो लोग अवैध रूप से दाखिल हुए हैं और उन्हें निर्वासित करने की सरकार की जिम्मेदारी के प्रश्न पर वह केवल सिद्धांत निर्धारित कर सकती है।

संचार साथी एप को जब चाहें, फोन से कर सकते हैं डिलीट : संचार मंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी

नए स्मार्टफोन में सरकारी एप संचार साथी को अनिवार्य रूप से इंस्टॉल करने के निर्देश पर उठी गोपनीयता संबंधी आशंकाओं के बीच संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मंगलवार को स्पष्ट किया कि उपभोक्ता चाहें तो इस एप को मोबाइल से हटा सकते हैं और पंजीकरण न किए जाने तक यह सक्रिय नहीं होगा। सिंधिया ने कहा कि सरकार का उद्देश्य लोगों को धोखाधड़ी और मोबाइल चोरी की घटनाओं से बचाने के लिए उपलब्ध साधनों की जानकारी देना है। अगर आप इसे हटाना चाहें, तो हटा दें।

सरकार ने 28 नवंबर को फोन विनिर्माता कंपनियों को निर्देश दिया था कि वे सभी नए फोन में 'संचार साथी' को इंस्टॉल करके बिक्री के लिए जारी करें और उसकी कार्यक्षमता सीमित न होने दें। इसके साथ ही पहले से इस्तेमाल हो रहे फोन में भी इसे सॉफ्टवेयर अपडेट के जरिये भेजने को कहा गया है। एप पर आए इस आदेश के बाद विपक्ष ने इसे जासूसी करने वाला एप बताते हुए सरकार पर ग्राहकों की गोपनीयता भंग करने का आरोप लगाया है। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने इसे अनिवार्य किए जाने की आलोचना करते हुए कहा, लोगों को यह अधिकार होना चाहिए कि वे सरकार की निगरानी के बिना निजी संदेश भेज सकें।

- गोपनीयता संबंधी आशंकाओं के बीच ज्योतिरादित्य सिंधिया ने किया स्पष्ट

अनिवार्यता पर एप्पल सैमसंग करेंगी बात

नई दिल्ली। अग्रणी फोन विनिर्माता एप्पल एवं सैमसंग संचार साथी एप को मोबाइल फोन में अनिवार्य रूप से इंस्टॉल करने संबंधी सरकारी आदेश पर सरकार से चर्चा करेंगी। दूरसंचार विभाग के निर्देश में कहा है कि 90 दिनों के भीतर सभी नए मोबाइल फोन में इस एप को इंस्टॉल करना होगा। यह देश के भीतर विनिर्मित या बाहर से आयातित सभी फोन पर लागू होगा। वहीं मौजूदा फोन या अनबिके फोन में एप को सॉफ्टवेयर अपडेट के जरिये इंस्टॉल करने को कहा गया है।

बस में आग, तीन लोग जिंदा जले

संवाददाता, बलरामपुर

बलरामपुर में हादसा

अमृत विचार : सोमवार आधी रात दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। सोनौली से दिल्ली जा रही 45 नेपाली यात्रियों से भरी बस ट्रक से टकरा गई। ट्रक की टक्कर के बाद बस में आग लग गई। 3 लोग जिंदा जल गए और 24 झुलस गए। इनमें 6 की हालत गंभीर है, जिन्हें बहराइच मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। 2 मृतकों की अब तक पहचान नहीं हो पाई है। बताया जाता है कि टक्कर इतनी भीषण थी कि बस घिसटती हुई 100 मीटर दूर हाईटेंशन लाइन वाले बिजली के खंभे से टकरा गई। खंभा टूटकर बस पर गिर गया। बस में करंट दौड़ गया। शॉर्ट सर्किट हुआ और आग लग गई। पुलिस के अनुसार बस दिल्ली की ओर जा रही थी, तभी दूसरी तरफ से आ रहे ट्रक ने उसमें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर के बाद बस हाईटेंशन लाइन से टकरा गई, जिससे शॉर्ट सर्किट हुआ और आग लग गई। बस में बैठे यात्री शीशे तोड़कर किसी तरह बाहर निकले। सूचना पर पुलिस व फायर ब्रिगेड की टीम ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया। बस में सवार अधिकांश यात्री नेपाल निवासी थे। बस चालक व कंडक्टर लापता है। तीनों मृतकों में से एक महिला की पहचान राधा 60 वर्ष निवासी गुल्मी नेपाल के रूप में हुई है।

सेवानिवृत्ति भ्रष्ट आचरण के लिए सुरक्षा कवच नहीं : हाईकोर्ट

विधि संवाददाता, प्रयागराज

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सरकारी विभागों में बढ़ती सुविधा व पक्षपात आधारित भ्रष्ट आचरण पर अंकुश लगाने के लिए नियमों को और कठोर करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा कि ऐसे मामलों में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को भी जांच के दायरे से बाहर नहीं किया जा सकता है। उक्त आदेश न्यायमूर्ति मंजू रानी चौहान की एकलपीठ ने सेवानिवृत्त जेई विपिन चंद्र वर्मा की याचिका को खारिज करते हुए पारित किया। दरअसल याची के खिलाफ एक मौजूदा विधायक के रिश्तेदार द्वारा दाखिल शिकायत के आधार पर सेवानिवृत्ति के बाद उनके खिलाफ जांच शुरू की गई थी, जिसे वर्तमान याचिका में चुनौती दी गई थी। याची 30 जून 2025 को सेवानिवृत्त हुए थे। उनके खिलाफ वर्ष 2015–2022 की अवधि में कथित अनियमितताओं को लेकर सितंबर 2025 में नोटिस जारी किया गया था। नोटिस से पहले अप्रैल 2025 में विधानसभा अध्यक्ष के समक्ष शिकायत दर्ज की गई थी, जिसके आधार पर जिला मजिस्ट्रेट ने जांच की। याची की ओर से तर्क दिया गया कि शिकायत राजनीतिक रूप से प्रेरित है। साथ ही सेवा समाप्त होने के बाद नियोक्ता–कर्मचारी संबंध नहीं रहता। इसलिए उन्हें कोई नोटिस नहीं दिया जाना चाहिए। इसके अलावा सिविल सेवा विनियमन के विनियमन 351-ए के अनुसार चार वर्ष से पूर्व घटित घटनाओं पर विभागीय जांच नहीं चल सकती। हालांकि राज्य की ओर से तर्क दिया गया कि 23 अगस्त 2025 की जांच रिपोर्ट में वर्ष 2022 से संबंधित अनियमितताएं स्पष्ट पाई गईं। जो चार वर्ष की सीमा अवधि के भीतर आती हैं, इसलिए जांच वैध है। अंत में कोर्ट ने पाया कि कार्यवाही वैध और समय-सीमा के भीतर है, साथ ही विनियमन 351-ए द्वारा प्रतिबंधित नहीं है।

- अदालत ने कहा- भ्रष्टाचार के मामले में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को जांच के दायरे से बाहर नहीं किया जा सकता

एसटीएफ का बर्खास्त सिपाही गिरफ्तार

लखनऊ। फेंसेडिल कफ सिरप तस्करी गिरोह का तीसरा मुख्य आरोपी एसटीएफ का बर्खास्त सिपाही आलोक सिंह मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया गया। उसे एएसपी लालप्रताप की टीम ने सुशांत गोल्फ सिटी इलाके में स्थित मॉल के पास से दबोचा। सात दिन पहले हुए अमित सिंह की गिरफ्तारी के बाद आलोक ने कोर्ट में सरेंडर की अर्जी डाल चुका था। एसटीएफ ने उसके खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया था। आलोक जौनपुर के पूर्व बाहुबली सांसद धनंजय सिंह का करीबी है। एसटीएफ एएसपी के मुताबिक आलोक तीसरा मुख्य आरोपी है। चंदौली के बलुआ स्थित कैथी का रहने वाला है। लखनऊ में वह राजेंद्रनगर में रहता था।

बदलाव | केंद्र सरकार ने आदेश किए जारी, देशभर के राजभवन अब कहलाएंगे लोकभवन

पीएमओ का नाम अब सेवा तीर्थ, केंद्रीय सचिवालय कर्तव्य भवन

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री कार्यालय के नए परिसर को अब 'सेवा तीर्थ' के नाम से जाना जाएगा। केंद्रीय सचिवालय कर्तव्य भवन होगा, जबकि देश भर के राजभवन अब लोकभवन कहलाएंगे। केंद्र सरकार के अधिकारियों ने बताया कि सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना के तहत बन रहे परिसर का निर्माण कार्य अपने अंतिम चरण में है। इसे पहले 'एग्जीक्यूटिव एन्क्लेव' के रूप में जाना जाता था।

प्रधानमंत्री कार्यालय के अलावा निर्माणाधीन परिसर में मंत्रिमंडल सचिवालय, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय और 'इंडिया हाउस' के कार्यालय भी शामिल होंगे, जो आने वाले

गणमान्य व्यक्तियों के साथ उच्च स्तरीय वार्ता का स्थल होगा। अधिकारियों ने बताया कि 'सेवा तीर्थ' एक ऐसा कार्यस्थल होगा, जिसे सेवा की भावना को प्रतिबिंबित करने के लिए डिजाइन किया गया है और जहां राष्ट्रीय प्राथमिकताएं मूर्त रूप लेंगी। उन्होंने कहा कि भारत के सार्वजनिक संस्थान एक शांत लेकिन गहन बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। अधिकारियों के मुताबिक शासन का विचार 'सत्ता' से 'सेवा' और 'अधिकार' से 'उत्तरदायित्व' की ओर बढ़ रहा है। यह परिवर्तन केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक भी है। राज्यों के राज्यपालों के आधिकारिक आवास 'राजभवन' का भी नाम भी बदलकर 'लोक भवन' रखा जा रहा है। केन्द्रीय सचिवालय का नाम कर्तव्य भवन है, जो एक विशाल प्रशासनिक केंद्र है, जिसका निर्माण इस विचार के इर्द-गिर्द किया गया है कि सार्वजनिक सेवा एक प्रतिबद्धता है। ये बदलाव एक गहरे वैचारिक परिवर्तन का प्रतीक हैं। भारतीय लोकतंत्र सत्ता की बजाय जिम्मेदारी और पद की बजाय सेवा को चुन रहा है। नामों में बदलाव मानसिकता में भी बदलाव है।

नाम कल्याण का बोध न कि विशिष्टता का

अधिकारियों के मुताबिक यह नाम कल्याण का बोध कराता है न कि विशिष्टता का। यह प्रत्येक निर्वाचित सरकार के भविष्य के कार्यों की याद दिलाता है। सरकार ने हाल ही में राष्ट्रपति भवन से इंडिया गेट तक वृक्षों से घिरे मार्ग के पूर्ववर्ती नाम 'राजपथ' को बदलकर 'कर्त्तव्य पथ' किया था। प्रधानमंत्री के आधिकारिक आवास का नाम 2016 में बदलकर लोक कल्याण मार्ग कर दिया गया था।

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 3 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

शिवराजपुर में खेत से लोहे के गर्डर चोरी

शिवराजपुर। किसान के खेत में लगे विज्ञापन होल्डिंग के लिए लोहे के 14 गर्डर चोरी हो गये। इस पर किसान ने थाने में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। क्षेत्र के काकूपुर रब्बन गांव निवासी अभिषेक बाजपेई ने थाने में दी गई तहरीर में बताया कि हाईवे के नजदीक उनके खेत में प्रिया एडवरटाइजिंग के लिए पनकी कल्याणपुर निवासी मनोज त्रिवेदी के द्वारा 14 लोहे के गर्डरलगाए गए थे, जोकि 29 नवंबर शनिवार को रात में खेत से गायब हो गए इस मामले में थाना प्रभारी वरुण शर्मा ने बताया कि गाटर चोरी की तहरीर प्राप्त हुई है।

सिपाही को बंधक बना लाठियों से पीटा

हमीरपुर। थाना क्षेत्र के उमराहट गांव में शिकायत की जांच करने गए सिपाही को महिलाओं व उनके परिजनों ने बांधकर बुरी तरह पीटा। उमराहट गांव के पुरवा निवासी चौकीदार फूल सिंह निषाद के लड़के का पड़ोसी लाखन निषाद के पुत्रों योगेश और मुकेश से विवाद हो गया। मंगलवार शाम मामले की जांच करने सिपाही आशीष मौर्या पहुंचे। इससे नाराज योगेश व उसके भाई मुकेश सहित उनके परिवार की महिलाओं ने सिपाही पर हमला बोल दिया। उसे पकड़कर बांध दिया और लाठी डंडों से पीटा। इस मामले की सूचना पर पुलिस अधीक्षक डॉ. दीक्षा शर्मा सहित भारी पुलिस बल गांव पहुंचा। घटना में घायल सिपाही आशीष मौर्या के साथ योगेश और उसके भाई मुकेश को जिला अस्पताल भेजा गया। मामले की जांच की जा रही है।

खेत पर गए किसान का शव सड़क किनारे पड़ा मिला

डेरापुर थाना क्षेत्र के उमरी बुजुर्ग गांव के पास का मामला

संवाददाता, चौबेपुर

अमृत विचार। क्षेत्र के देवकली गांव में सोमवार शाम बाइक से खेत पर गए किसान का शव मंगलवार सुबह पड़ोस के बाचीपुर गांव के पास बाइक समेत मार्ग किनारे खेत में पड़ा मिला। घटना की जानकारी पर एसीपी समेत थाना पुलिस मौके पर पहुंची। फॉरेंसिक टीम द्वारा साक्ष्य जुटाए जाने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। आशंका है कि किसी वाहन की टक्कर लगने से किसान की मौत हुई है। घटना की जानकारी होने पर परिजनों में कोहराम मच गया।

देवकली गांव निवासी हिमांशू कटियार (40) पुत्र स्व. भूपनारायण खेती किसानी करता था। सोमवार शाम करीब 6:30 बजे वह अपनी बाइक द्वारा खेतों पर फसल देखने के लिए गया था। देर रात तक घर वापस न लौटने पर परिजनों ने उसकी खोजबीन शुरू की, लेकिन उसका कुछ पता नहीं लग सका। मंगलवार सुबह शिवली -सकरवां मार्ग पर बाचीपुर गांव के पास घनश्याम यादव के खेत में युवक का शव व बाइक पड़ी देख ग्रामीणों ने मामले की सूचना थाना पुलिस को दी। जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल की जांच पड़ताल शुरू की। थोड़ी ही देर में मृतक की पहचान हिमांशू कटियार के रूप में हो गई। घटना की जानकारी परिजनों को दी गई तो उनमें कोहराम मच गया। घर वालों द्वारा मामला संदिग्ध बताए जाने पर फॉरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया गया। इस दौरान एसीपी बिल्हौर मंजय सिंह भी घटनास्थल पर पहुंचे और जांच पड़ताल की। पुलिस पूछताछ में परिजनों ने बताया कि मंजय फसल देखने के लिए बाइक द्वारा खेत पर गया था। एसीपी बिल्हौर मंजय सिंह ने बताया कि प्रथम दृश्टया किसी वाहन की टक्कर लगने से युवक की मौत हुई है। फॉरेंसिक टीम द्वारा साक्ष्य एकत्र कराए गए हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद स्थिति पूरी तरह से स्पष्ट हो सकेगी।

घटनास्थल पर मौजूद ग्रामीण और परिजन। अमृत विचार

गडाथा रोड पर मिला अज्ञात अधेड़ का शव

- **घाटमपुर।** घाटमपुर के रेउना थाना क्षेत्र के अंतर्गत घुघआ पुल से पांच सौ मीटर गडाथा रोड पर एक अधेड़ व्यक्ति का शव पड़ा मिला। शव को देखकर अंदाजा लगाया जा रहा है कि हत्या कर शव फेंका गया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव के शिनाख्त कराने का प्रयास किया। परंतु शव की शिनाख्त नहीं हो सकी। थाना प्रभारी अनुज राजपूत ने बताया की शव का पंचनामा कर उसे पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

समाजसेवी ममता मिश्रा की याद में बनेगा ब्लड बैंक

शिवराजपुर। छह दिसंबर को कस्बा के बर्राजपुर स्थित प्राथमिक विद्यालय में स्वर्गीय ममता मिश्रा की याद में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक राहुल बच्चा सोनकर भी मौजूद रहेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रयासरत रहने वाली अधिवक्ता ममता मिश्रा का निधन 12 नवंबर को हो गया था। वह समाज कल्याण के विभिन्न कार्यों में अपना योगदान देती रहीं। उनके परिवार के मुताबिक बर्राजपुर गांव के प्राथमिक विद्यालय जहां से उन्होंने स्वयं अपने जीवन की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की वहां पर स्मार्ट क्लासरूम, इंटरनेट और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सामग्री की व्यवस्था ममता मिश्रा मेमोरियल ट्रस्ट के तत्वावधान में की जाएगी। इसके अतिरिक्त एक ब्लड बैंक की स्थापना कर जरूरतमंदों की सहायता करने की योजना है।

कस्बे के बर्राजपुर के रहने वाले अधिवक्ता स्व. मथुरा प्रसाद त्रिवेदी की पुत्री ममता मिश्रा जिनकी ससुराल चौबेपुर के रौतापुर कला गांव में है। उनके पुत्र पीयूष मिश्रा ने बताया कि उनका लक्ष्य 100 स्कूलों में 55 इंच साइज की 100 एलइडी टीवी व वाई-फाई की सुविधा उपलब्ध कराना है। उनका यह नेक कार्य चौबेपुर ब्लाक एवं शिवराजपुर ब्लॉक के कई स्कूलों में शुरू भी किया जा चुका है।

लोगों को संबोधित करते सपा नेता। अमृत विचार

'निष्पक्ष व पारदर्शी हो एसआईआर प्रक्रिया'

संवाददाता बिल्हौर

अमृत विचार। समाजवादी पार्टी (सपा) के बिल्हौर विधानसभा अध्यक्ष विनय यादव ने मंगलवार को शिवराजपुर ब्लॉक के जैतपुर सहित कई गांवों का दौरा कर एसआईआर से संबंधित कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान, उन्होंने अपनी टीम के साथ घर-घर जाकर 2003 की मतदाता सूची से विवरणों का सत्यापन किया और फॉर्म जमा करने की एसआईआर प्रक्रिया की जांच की।

विनय यादव ने ग्रामीणों को एसआईआर प्रक्रिया के महत्व के बारे में बताते हुए जागरूक किया और कहा कि यह लोकतांत्रिक अधिकारों को सुरक्षित रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने चेतावनी दी कि सूची में सही ढंग से नाम दर्ज न होने पर मतदाता मतदान से वंचित हो सकते हैं।

पीडीए पर फोकस और भाजपा पर आरोप: विनय यादव ने पार्टी कार्यकर्ताओं से विशेष रूप से पीडीए (पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक) वर्ग के मतदाताओं की मदद करने की अपील की, ताकि उनके वोट का अधिकार सुरक्षित रहे। उन्होंने कहा, किसी भी योग्य मतदाता का नाम सूची से न कटने पाए। इस दौरान उन्होंने सत्ताधारी भाजपा पर गंभीर आरोप लगाए। कहा कि भाजपा एसआईआर प्रक्रिया के नाम पर पीडीए समाज के मताधिकार को कमजोर करने का प्रयास कर रही है। विनय यादव ने जिला प्रशासन से भी एसआईआर प्रक्रिया को निष्पक्ष और पारदर्शी ढंग से संचालित करने की अपील की। इस दौरान प्रधान पिंटू यादव, वीरेंद्र सिंह यादव, रामलखन यादव सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

वृद्धा के साथ मारपीट व दुष्कर्म का लगाया आरोप

घाटमपुर। घाटमपुर के सजेती थाना क्षेत्र में गांव के एक युवक द्वारा वयोवृद्ध महिला के साथ मारपीट की घटना के बाद परिजनों ने अब दुष्कर्म का आरोप लगाया है। मामले में विभिन्न संगठनों के लोगों ने भी सजेती थाने जाकर इंस्पेक्टर से नाराजगी जताई।

90 वर्षीय महिला गांव के बाहर घर बनाकर अपने पति के साथ रहती थी लेकिन तीन साल पहले पति की मौत के बाद महिला अब यहां अकेली रहती हैं और गांव में रहने वाला उसका छोटा बेटा ही उसे खाना लेकर जाता है। बेटे ने बताया कि 30 नवंबर की रात गांव के चिनका द्वारा मां के साथ मारपीट की गई थी लेकिन जब वह पत्नी के साथ यहां पहुंचा तो उसने देखा कि मां के प्राइवेट पार्ट में गंभीर चोटे हैं और खून निकल रहा है साथ ही उसके शरीर में घिसटने के निशान हैं। बेटे का आरोप है कि आरोपित ने वृद्धा के साथ दुष्कर्म किया है। बजरंग दल के शुभम सौर्य, विहिप के राजेश अवस्थी सहित अन्य पदाधिकारियों ने आरोप लगाया कि पुलिस मामले को दबाने में जुटी है, पीड़ित की शिकायत पर उन्हें ही धमकाया जा रहा है। बाद में पदाधिकारी सजेती थाने पहुंचे और इंस्पेक्टर से नाराजगी जताई। इंस्पेक्टर ने बताया कि आरोपित पर मारपीट की रिपोर्ट दर्ज हो चुकी है। पुलिस ने वृद्धा का मेडिकल कराकर मामले में धाराएं बढ़ाने का आश्वासन दिया है।

मंदिर के गर्भगृह पर गंदगी करने का आरोप

संवाददाता, घाटमपुर

अमृत विचार। घाटमपुर के रेउना के बिछीपुर स्थित शिवहरि धाम में विगत सोमवार को दूसरे धर्म के दो युवक बाइक से पहुंचे, युवक जूते पहने हुए मंदिर के गर्भगृह के अंदर घुस गए। मंदिर परिसर में काम कर रही लड़कियों व वहां के व्यवस्थापक एवं मंदिर ट्रस्टी के विरोध करने पर युवकों ने मंदिर के ट्रस्टी के साथ हाथपाई की थी। ट्रस्टी ने इसकी जानकारी पुलिस व बजरंग दल और हिन्दू जागरण मंच के कार्यकर्ताओं को दी। कार्यकर्ताओं संग मंदिर के ट्रस्टी ने घाटमपुर एसीपी कृष्णकांत यादव घटना की सूचना दी।

सूचना पर मंगलवार को सभी लोग मंदिर परिसर पहुंचे, जहां पर मंदिर ट्रस्टी शिवकुमार द्विवेदी के द्वारा एसीपी घाटमपुर को ज्ञापन देकर उक्त युवकों के खिलाफ शिकायत पत्र सौंपकर कार्रवाई करने की मांग की है। रेउना पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपी युवकों के खिलाफ कई धाराओं में मामला दर्ज किया है और दोनों आरोपियों को जेल भेजा है।

घाटमपुर के रेउना थाना क्षेत्र के बिछीपुर गांव के शिवहरि धाम स्थित बाबा भूतेश्वर महादेव मंदिर स्थित है। मंदिर के ट्रस्टी शिवकुमार द्विवेदी ने जानकारी देते हुए पुलिस को बताया कि कस्बा रेउना के दो युवक निजामी पुत्र शकील व उसका चचेरा भाई चार अन्य साथी धाम परिसर में स्थित भूतेश्वर महादेव मंदिर के गर्भगृह के अंदर जूते पहनकर घुस गए। जिसके बाद युवकों ने गर्भगृह के अंदर गंदगी करना शुरू कर दिया। इसका विरोध वहां पर मौजूद भक्तों ने किया तो युवकों ने गालियां देना शुरू कर दिया। इसका विरोध मंदिर के ट्रस्टी शिव कुमार द्विवेदी ने किया तो युवकों ने उनके साथ भी अभद्रता की। शिवकुमार द्विवेदी ने घटना की शिकायत पुलिस को तहरीर देकर की है।

रेउना पुलिस और घाटमपुर एसीपी कृष्णकांत यादव ने मौके पर पहुंच कर जांच पड़ताल की। एसीपी ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है। दो आरोपियों को गिरफ्तार जेल भेज दिया गया है। अन्य की तलाश जारी है।

एसीपी कृष्णकांत यादव को ज्ञापन सौंपते बजरंगदल व हिजामं के पदाधिकारी।

बजरंगदल व हिजामं ने की शेष आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग

- बजरंगदल के जिला संयोजक शुभम शौर्य अग्निहोत्री और हिन्दू जागरण मंच के जिला संयोजक राकेश अवस्थी ने भूतेश्वर मंदिर में मुस्लिम युवकों द्वारा की गई घटना का विरोध करते हुए घाटमपुर एसीपी कृष्णकांत को ज्ञापन सौंपकर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने कहा कि शेष आरोपियों को भी जल्द गिरफ्तार किया जाये अन्यथा आंदोलन किया जायेगा। इस मौके पर रामकुमार द्विवेदी, सुशील कुमार पांडे, रवि शंकर अग्निहोत्री, राजेश अवस्थी, बजरंग दल विभाग संयोजक शुभम शौर्य अग्निहोत्री, राजेश अवस्थी, अरुण बाबा, सोनू पटेल, कुमार गौरव, जीतू अवस्थी, आशीस शुक्ला, ओम नारायण अग्निहोत्री, , धर्मेंद्र कुमार मिश्रा, धर्मेंद्र प्रताप सिंह, केशव सिंह परमार आदि मौजूद रहे।

हादसे में मां-बेटी के घायल होने की रिपोर्ट

रसूलाबाद। नेहरू नगर के नहर कॉलोनी निवासी नरेंद्र सिंह ने तहरीर में बताया कि 23 नवंबर री रात्रि 11:30 बजे वह स्कॉर्पियो गाड़ी से झींझक में निमंत्रण से पत्नी गुड्डी देवी व पुत्री अंजल के साथ लौट रहा था। दशहरा गांव के पास ऑटो चालक ने उसकी कार में टक्कर मार दी, जिससे पत्नी गुड्डी और पुत्री एंजल को गंभीर चोटें आई हैं। थाना प्रभारी सतीश कुमार सिंह ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है।

एसआईआर में पूरी सावधानी बरतें

संवाददाता कानपुर देहात

अमृत विचार। जिलाधिकारी कपिल कुमार सिंह ने बताया कि वोटर लिस्टों के गणना प्रपत्रों का शत-प्रतिशत डिजिटाइजेशन एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिसके लिए बूथ लेवल अधिकारियों द्वारा जिम्मेदारी से कार्य पूर्ण करना अनिवार्य है। जिन बूथ लेवल अधिकारियों द्वारा गणना प्रपत्रों का शत-प्रतिशत डिजिटाइजेशन पूर्ण कर दिया गया है, उनके द्वारा बूथ लेवल एजेंटों के साथ प्राप्ति (रिसीविंग) सहित तत्काल बैठक आयोजित किए जाने के निर्देश दिए गए हैं।

जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि जैसे-जैसे बूथ लेवल अधिकारी गणना प्रपत्रों का डिजिटाइजेशन पूर्ण करते जाएं, वैसे-वैसे संबंधित बूथों के लिए नियुक्त सभी बूथ लेवल एजेंटों के साथ बैठक कर कार्यवाही पूर्ण की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि बूथ लेवल अधिकारियों एवं बूथ लेवल एजेंटों की बैठकों से संबंधित कार्यवृत्त, उपस्थिति, पावती, फोटोग्राम्स (लेटिट्यूड-लॉन्गिट्यूड सहित) तथा बूथ लेवल एजेंट के वीडियो टेस्टिमोनियल (अधिकतम 30 सेकंड) अनिवार्य रूप से तैयार कर कार्यालय को उपलब्ध कराए जाएं।

जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि सभी बूथ लेवल अधिकारी ईएसआई नेट एप में अनुमोदन, शीट्स, बुकलेट एवं डुप्लीकेट नियुक्तियों की सूचियाँ डाउनलोड करके बैठक के समय बूथ लेवल एजेंटों को उपलब्ध कराएं।

दिये निर्देश | डीसीपी पश्चिम दिनेश त्रिपाठी ने अरौल थाने का वार्षिक निरीक्षण किया

अपराधियों से सख्ती से निपटें : डीसीपी

संवाददाता, बिल्हौर

अमृत विचार। कानपुर कमिश्नरेट के डीसीपी पश्चिम दिनेश त्रिपाठी ने अरौल थाने का वार्षिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने पुलिस स्टेशन की गहनता से जांच-पड़ताल की। साथ ही कानून व्यवस्था को मजबूत करने तथा जनता के प्रति पुलिस की कार्यशैली को बेहतर बनाने के निर्देश दिये।

मंगलवार को डीसीपी पश्चिम दिनेश त्रिपाठी अरौल थाने का वार्षिक निरीक्षण करने पहुंचे। इस दौरान वहां पर एसीपी मंजय सिंह और थाना प्रभारी जर्नादन यादव मौजूद रहे। निरीक्षण के दौरान उन्होंने थाना प्रभारी से अपराधियों से सख्ती से निपटने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि किसी प्रकार की अपराधिक गतिविधियां क्षेत्र नहीं होनी चाहिये।

उन्होंने निरीक्षण के दौरान मालखाना, असलहाखाना, बंदीगृह (लॉकअप), और सभी प्रशासनिक व कानूनी अभिलेखों (जैसे एफआईआर, जीडी, चार्जशीट आदि) का अवलोकन किया। उन्होंने रिकॉर्ड के समुचित रखरखाव और डिजिटलीकरण का निर्देश दिया। साथ ही थाने के परिसर, कार्यालयों और आवासीय क्वार्टरों की स्वच्छता पर विशेष जोर दिया।

निरीक्षण के बाद, डीसीपी दिनेश त्रिपाठी ने अरौल थाने के समस्त स्टाफ को कई महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि संगठित अपराधों, अवैध शराब के व्यापार और जुए पर सख्ती से लगाम लगायें। अपराधियों पर गुंडा एक्ट और गैंगस्टर एक्ट के तहत प्रभावी कार्रवाई करने पर जोर दिया। उन्होंने पुलिसकर्मियों को जनता के साथ सौहार्दपूर्ण और संवेदनशील व्यवहार रखने के लिए कहा। थाने पर आने वाले हर फरियादी की बात को गंभीरता से सुनकर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

अरौल थाने का निरीक्षण करते डीसीपी पश्चिम दिनेश त्रिपाठी। अमृत विचार

कार्यालय : जिला कार्यक्रम अधिकारी, चित्रकूट।

पत्रांक :– 1296/जि0का0अधि0/ बा0वि0परि0/ विज्ञप्ति / 2025–26 दिनाँक :– 15 नवम्बर, 2025

पूर्व चयन के शेष रिक्त आंगनवाड़ी कार्यकत्री के पदों पर सीधी भर्ती हेतु विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पूर्व चयन के शेष रिक्त आंगनवाड़ी कार्यकत्री के पदों पर सीधी भर्ती हेतु शासनादेश संख्या–I/1092245/2025/3313/58–1–2025(1917687). दिनांक 17.09.2025 में वर्णित व्यवस्थानुसार जनपद के ग्रामीण परिक्षेत्रों में संचालित बाल विकास परियोजनाओं में आंगनवाड़ी कार्यकत्री के मानदेय पर आधारित रिक्त पदों पर नियुक्ति हेतु सीधी भर्ती प्रकिया के तहत विभागीय वेब साइट http://upanganwadibharti.in पर ऑनलाइन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते है। रिक्त पदों का परियोजनावार विवरण निम्नवत् है:–

क्र0सं0	परियोजना का नाम	ग्रामीण/शहरी	रिक्त पदों का विवरण
			आंगनवाड़ी कार्यकत्री
1	कर्वी	ग्रामीण	01
2	रामनगर	ग्रामीण	02
3	मानिकपुर	ग्रामीण	04
4	मऊ	ग्रामीण	01
		कुल योग–	08

उपरोक्त पदों का ग्रामसभा/आंगनवाड़ी केन्द्रवार विवरण एवं आरक्षण सहित अर्हता का पूर्ण विवरण जनपद के कलेक्ट्रेट, विकास भवन, तहसील एवं विकास खण्ड इत्यादि कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा की गई है साथ ही विभागीय वेबसाइट http://upanganwadibharti.in पर अपलोड है।

विज्ञापित पदों की अर्हता एवं आवेदन पत्र भरने हेतु विशेष निर्देश:–

1. विज्ञापित पदों हेतु केवल महिला अभ्यर्थी ही पात्र होगें।
2. रिक्त पदों (आंगनवाड़ी कार्यकत्री) हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता इण्टरमीडिएट एवं उसके समकक्ष तथा अधिकतम शैक्षिक योग्यता परास्नातक के आधार पर मेरिट तैयार की जायेगी।
3. आवेदिका को रिक्त पद के वार्ड/ग्राम सभा की स्थाई निवासी होना अनिवार्य होगा। ग्राम सभा में उक्त श्रेणी में पात्र अभ्यर्थी उपलब्ध न होने की स्थिति में सम्बन्धित न्याय पंचायत का स्थायी निवासी होना अनिवार्य होगा। नगरीय क्षेत्र में रिक्त पदों पर आवेदन करते समय ऑनलाइन जारी निवास प्रमाण पत्र में सम्बन्धित वार्ड क्रमांक/संख्या एवं सम्बन्धित वार्ड का नाम अनिवार्य रूप से अंकित होना चाहिए।
4. निवास व जाति प्रमाण पत्र के सम्बन्ध में तहसील से ऑनलाइन डिजिटल हस्ताक्षर से निर्गत अद्यतन निवास व जाति प्रमाण पत्र ही मान्य होंगे, जिनका ऑनलाइन सत्यापन संभव हो।
5. कार्यकत्री पद के लिए आवेदिका की न्यूनतम 18 वर्ष एवं अधिकतम आयु 35 वर्ष के मध्य होना चाहिए। आयु की गणना हेतु कट ऑफ तिथि 01 जुलाई, 2025 होगी।
6. कार्यकत्री पद पर भर्ती हेतु बी0पी0एल0 श्रेणी के आवेदिकाओं को वरीयता प्रदान की जायेगी। बी0पी0एल0 श्रेणी का निर्धारण समाज कल्याण अनुभाग–2 उत्तर प्रदेश शासन के शासनादेश संख्या–22/2015/2123/26–2–2015 दिनांक 14 सितम्बर 2015 (यथा संशोधित) के अनुसार किया जायेगा।
7. आय प्रमाण पत्र के सम्बन्ध में उ0प्र0 शासन के राजस्व अनुभाग–9 द्वारा निर्गत शासनादेश संख्या–3959/1–9–11–राज0–9 दिनांक 30.09.2011 (यथा संशोधित) के क्रम में सक्षम स्तर से निर्गत आय प्रमाण पत्र ही मान्य होगें, जिनका ऑनलाइन सत्यापन संभव हो।
8. विधवा हेतु ग्राम पंचायत अधिकारी / सम्बन्धित नगर निकाय द्वारा निर्गत मृत्यु प्रमाण पत्र एवं परिवार पंजिका की प्रमाणित नकल मान्य होगी।
9. तलाकशुदा एवं परित्यक्ता के सम्बन्ध में मा0 न्यायालय द्वारा निर्गत विधिक आदेश मान्य होंगे।
10. विज्ञापित पदों हेतु केवल विभागीय वेबसाइट http://upanganwadibharti.in पर ऑनलाइन आवेदन पर फार्म निर्धारित समयावधि के अन्दर ही स्वीकार्य होगें। ऑफलाइन आवेदन पत्र किसी भी दशा में मान्य/ स्वीकार नही किये जायेगें।
11. आवेदन पत्र विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध फार्मेट ऑनलाइन व सही–सही सावधानी पूर्वक भरे जायेंगे। आवेदिका द्वारा अभिलेखों के स्व हस्ताक्षरित प्रति जो स्वच्छ व पठनीय हो पोर्टल http://upanganwadibharti.in पर अपलोड की जायेगी, जिनका उल्लेख उनके द्वारा ऑनलाइन फार्म में किया गया होगा। कोई भी आवेदन या अभिलेख/प्रपत्र ऑफ लाइन या डाक द्वारा मान्य नहीं होगे। यदि आवेदन करने में कोई त्रुटि होती है या कोई तथ्य/आँकड़े/ शैक्षिक अभिलेखों के प्राप्तांक/पूर्णांक गलत या कूट रचित पाये जायेंगे तो अभ्यर्थन निरस्त कर दिया जायेगा।
12. विज्ञापित पदों हेतु ऑनलाइन आवेदन करने की अन्तिम तिथि दिनांक 06.12.2025 की मध्य रात्रि 12:00 बजे तक होगी।
13. उपरोक्त विज्ञापित पदों की अर्हता एवं आवेदन करने की प्रकिया सहित विस्तृत प्रपत्र एवं सूचना विभागीय वेबसाइट http://upanganwadibharti.in पर उपलब्ध है साथ ही अधिक जानकारी हेतु विकास खण्ड के बाल विकास परियोजना कार्यालय अथवा विकास भवन में जिला कार्यक्रम अधिकारी (बाल विकास विभाग) कार्यालय से कार्यालय दिवस में निर्धारित समयानुसार जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
14. रिक्त पदों की संख्या घट–बढ़ सकती है। रिक्त पदों पर भर्ती करने अथवा न करने/भर्ती निरस्त करने का अधिकार चयन समिति में निहित होगा।

(पी0डी0 विश्वकर्मा)
जिला कार्यक्रम अधिकारी /
नियुक्ति प्राधिकारी
चित्रकूट।

न्यूज ब्रीफ

तीन जगहों से सोलर पैनल व सामान चोरी

सिकंदरा। थाना क्षेत्र के गोपालपुर गांव में खेतों पर लगे तीन किसानों के सौर ऊर्जा पैनल और जीन स्टार्टर चोरी हो गए। राजेश कटियार ने बताया कि नलकूप के इलेक्ट्रानिक सामान व जीन चोर ले गए। राजेन्द्र कटियार और मिरगांव के सुधीर कटियार के भी नलकूप से स्टार्टर, जीन व अन्य सामान चुरा ले गए। थाना प्रभारी दिनेश कुमार गौतम ने बताया कि जांच-पड़ताल हो रही है।

बिजली कर्मियों के खिलाफ प्रदर्शन

सिकंदरा। मंगलवार दोपहर युवा शक्ति सामाजिक संगठन और ग्रामीणों ने तहसील में नारेबाजी के साथ प्रदर्शन किया और बिजली कर्मियों पर वसूली के गंभीर आरोप लगाए। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवी यादव के नेतृत्व में प्रदर्शनकारियों ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। कहा कि बिजली कर्मचारी अवैध उगाही कर रहे हैं, जिससे लोगों में आक्रोश है। प्रदर्शनकारियों ने एसडीएम से दोषी कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग उठाई।

छात्र-छात्राओं को दिए गए कॅरियर के टिप्स

कानपुर देहात। मिशन रोजगार अभियान के तहत जिला सेवायोजन कार्यालय की ओर से राजकीय इंटर कॉलेज रनियां में मंगलवार को कॅरियर काउंसिलिंग कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें काउंसलर रामजी एवं वरुण त्रिवेदी ने छात्र-छात्राओं को इंटर के बाद विषयों और उनमें रोजगार के अवसरों की जानकारी दी। छात्र-छात्राओं के प्रश्नों का उत्तर दिया गया। कार्यशाला में राजकीय इंटर कॉलेज की प्रधानाचार्य किरण वर्मा, अनुज यादव, विनोद कुमार आदि रहे।

सीओ ने मिशन शक्ति केंद्र का लिया जायजा

राजपुर। मंगलवार रात क्षेत्राधिकारी प्रिया सिंह ने मिशन शक्ति केंद्र का जायजा लिया। सीओ ने मिशन शक्ति से संबंधित रजिस्टरों की जांच की। उन्होंने कार्रवाई पर विस्तृत चर्चा की और थानाध्यक्ष के साथ महिला आरक्षियों से बातचीत कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि महिलाओं से संबंधित सभी शिकायतों पर त्वरित और संवेदनशीलता से कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। प्रत्येक महिला से विनम्रतापूर्वक व्यवहार किया जाए, उनकी बात धैर्यपूर्वक सुनी जाए और कार्रवाई की जाए। इस दौरान सिकंदरा थाना प्रभारी दिनेश कुमार गौतम भी मौजूद रहे।

पूर्व सभासद लक्ष्मी गुप्ता का निधन

कानपुर देहात। अकबरपुर नगर पंचायत की पूर्व सभासद लक्ष्मी गुप्ता का मंगलवार की दोपहर को निधन हो गया। वह लगभग 50 वर्ष की थीं। करीब एक साल से वह गंभीर बीमारी से जूझ रहीं थीं। उनके पति और शहर के जाने-माने समाजसेवी संजय कौशल ने बताया कि मंगलवार को दोपहर करीब एक बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। दोपहर बाद उनका अंतिम संस्कार हुआ। बड़ी संख्या में लोग इसमें शामिल हुए।

समझौते से इंकार पर एफआईआर दर्ज

रसूलाबाद। दहेज को लेकर मारपीट कर प्रताड़ित करने में ऐच्छिक ब्यूरो के सामने सुलह-समझौता करने से इनकार करने पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। बिलहा की शांति देवी ने पुलिस को प्रार्थना पत्र में बताया कि उसके पति नीतू, ससुर मंसाराम, सास अशोकी देवी, ननद रोशनी व भूरी, देवर अनूप दहेज की मांग को लेकर मारपीट करते हैं। थाना प्रभारी सतीश कुमार सिंह ने बताया कि मामले की रिपोर्ट संबंधित धाराओं में दर्ज कर ली गई है। इसकी विवेचना उप निरीक्षक कीर्ति प्रकाश कनौजिया करेंगे।

दो ब्लाकों में टॉस्क फोर्स की बैठकें हुईं

कानपुर देहात। सरवनखेड़ा और झींझक ब्लॉक में बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के अंतर्गत टास्क फोर्स की बैठक हुई। झींझक में बैठक के दौरान खंड विकास अधिकारी द्वारा बताया गया कि मिशन वात्सल्य योजनान्तर्गत ब्लॉक बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की बैठकों का मुख्य उद्देश्य बच्चों के अधिकारों, सुरक्षा और कल्याण को सुनिश्चित करना है। इसमें कमजोर बच्चों की पहचान करना, उन्हें देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाली विभिन्न परिस्थितियों में सहायता प्रदान करना, जैसे कि गोद लेना, दत्तक ग्रहण, पालक देखभाल, और वित्तीय सहायता देना शामिल है।

तेज रफ्तार कार की टक्कर से स्कूटी सवार मां-बेटे की मौत

कल्याणपुर-शिवली रोड पर बाघपुर क्षेत्र में हुआ हादसा, परिवार में मचा कोहराम

संवाददाता, शिवली

अमृत विचार: कल्याणपुर-शिवली रोड पर सोमवार की देर रात तेज रफ्तार स्कॉर्पियो गाड़ी ने स्कूटी में टक्कर मार दी, जिससे स्कूटी सवार मां-बेटे की मौके पर ही मौत हो गई। दोनों नौबस्ता कानपुर से घर लौट रहे थे। हादसे की सूचना से परिवार में कोहराम मच गया। शिवली पुलिस ने स्कॉर्पियो गाड़ी को अपने कब्जे में ले लिया है।

रूरा थाना क्षेत्र के गहलौ जर्बी गांव के रहने वाले गेंदालाल की पत्नी केशकली (52) अपने बेटे शैलेंद्र कुमार (27) के साथ सोमवार की दोपहर अपनी बेटी दीक्षा की ससुराल कानपुर नगर के गल्ला मंडी नौबस्ता गई तीं। बेटी से मुलाकात करने के बाद वह सोमवार की रात करीब 10 बजे स्कूटी से वापस गांव लौट रही थीं, तभी कल्याणपुर- शिवली रोड पर बाघपुर क्षेत्र में शिवली की ओर से जा रही तेज रफ्तार स्कार्पियो गाड़ी ने स्कूटी में टक्कर मार दी, जिससे मां-बेटे गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने दोनों घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा, जहां डॉक्टर सुरभि ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। मौत की खबर घर पहुंचते ही परिवार में चीख-पुकार मच गई। गेंदालाल ने बताया कि बेटा शैलेंद्र घर में ही बुक स्टॉल और किराना की दुकान चलाता था। साथ ही वह सरकारी नौकरी की तैयारी भी कर रहा था। मां-बेटे की मौत से बहन दीक्षा, रूबी, भाई शिवम, पिता गेंदालाल रो-रो कर बिलखते रहे। पुलिस ने स्कॉर्पियो गाड़ी को कब्जे में लेकर जांच-पड़ताल शुरू कर दी है। पुलिस ने शवों का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। शिवली थाना प्रभारी प्रवीन कुमार ने कहा कि तहरीर के आधार पर कार्रवाई होगी।

शैलेंद्र कुमार।

केशकली।

- कानपुर में बेटी से मिलकर बेटे के साथ लौट रही थी महिला
- बुक स्टाल चलाता था बेटा, पुलिस ने स्कॉर्पियो गाड़ी पकड़ी

पीछे से टक्कर के बाद स्कॉर्पियो गाड़ी में फंसी स्कूटी। अमृत विचार

ट्रक की खूनी रफ्तार से बुजुर्ग की गई जान, चचेरा बड़ा भाई घायल

संवाददाता, शिवली

- शिवली क्षेत्र के केसरी निवादा गांव के पास हुआ हादसा
- अंतिम संस्कार में शामिल होकर खेरेश्वर घाट से लौट रहे थे

अमृत विचार: तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक में टक्कर मार दी, एक बुजुर्ग की मौत हो गई, जबकि चचेरा बड़ा भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को सीएचसी में भर्ती कराया गया है। शिवली पुलिस ने ट्रक को कब्जे में ले लिया है।

रूरा थाना क्षेत्र के गुलाब सिंह पुरवा भटौली निवासी मदन सिंह पुत्र कृपाल सिंह (62) अपने चचेरे बड़े भाई गौतम पुत्र जयमल (65) के साथ मंगलवार को अंतिम संस्कार में शामिल होने शिवराजपुर के खेरेश्वर घाट गए थे। देर शाम घर वापस लौटते समय शिवली थाना क्षेत्र के केसरीनिवादा गांव के पास मोटरसाइकिल रोककर पेशाब करने लगे। इसी बीच पीछे से आए तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी, जिससे गौतम की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि चचेरा भाई मदन सिंह गंभीर रूप से घायल हो गया।

सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा। घायल मदन सिंह ने बताया कि गांव के ही कप्तान सिंह की मां रुमाली का निधन हो गया था। खेरेश्वर घाट पर अंतिम संस्कार के बाद वापस लौट रहे थे, तभी ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। मौत से पत्नी कपूरी देवी, भाई मकरंद सिंह, मुलायम सिंह, उमेश सिंह, पुत्री सुदामा, सुधा, ज्योति, पुत्र जितेन्द्र, दिलीप, राजकिशोर, पवन बिलखते रहे। थाना प्रभारी प्रवीण यादव ने बताया कि ट्रक को कब्जे में ले लिया गया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

इसी ट्रक ने बुजुर्ग की जिंदगी छीन ली, जिसे पुलिस ने पकड़ लिया है। अमृत विचार

अतिक्रमण हटा, जाम से मिली राहत

संवाददाता, रसूलाबाद

अमृत विचार: कस्बे में सड़क तक फैले अतिक्रमण को मंगलवार को चिह्नित कर तत्काल हटाने के निर्देश दिए गए। इसके साथ ही अवैध रूप से खड़े ऑटो, ई रिक्शा ,ठिलिया और दुकानों के बाहर तक फैले सामान को हटवाया गया, जिससे लोगों को जाम से राहत मिली।

पुलिस क्षेत्राधिकारी सौरव वर्मा के नेतृत्व में एसएसआई राम सिंह, कस्बा इंचार्ज प्रमोद दीक्षित ने भारी पुलिस बल के साथ यह अभियान चलाया। पुलिस टीम ने कस्बे में पैदल भ्रमण कर सड़कों तक फैले अतिक्रमण को हटवाया और आए दिन जाम का सबब बन रहे वाहनों को भी हटाया गया। पुलिस के द्वारा चलाए गए इस अभियान से स्थानीय लोगों ने राहत महसूस की है। कस्बा प्रभारी प्रमोद दीक्षित ने दुकानदारों और वाहन चालकों को चेतावनी दी कि भविष्य में दोबारा अतिक्रमण करने पर उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सड़क पर अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ आगे भी अभियान चलाकर सख्त कार्रवाई की जाएगी। स्थानीय लोगों ने भी पुलिस की इस पहल का स्वागत किया और कहा कि इससे कस्बे में जाम की समस्या काफी कम होगी।

मंगलवार को रसूलाबाद कस्बे में अतिक्रमणकारियों को चेतावनी दी गई । अमृत विचार

रफ्तार की मार, तीन लोग घायल, एक रेफर

रसूलाबाद। कस्बे के बिषधन रोड पर एक ऑटो ने बाइक सवार युवकों को टक्कर मार दी, जिससे दोनों लोग गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों के सिर में गंभीर चोटें आई हैं। घायल युवक फर्रुखाबाद के निवासी बताए जा रहे हैं। वे रसूलाबाद से अपने घर वापस जा रहे थे। घायल मैकू ने बताया कि वे अपनी मां के यहां से वापस जा रहे थे। जावेद भी साथ था। उन्हें सीएचसी में भर्ती कराया गया है, जहां उपचार चल रहा है। ऑटो चालक मौके से फरार हो गया। उधर, माल का पुरवा निवासी सूरज लाल (60) अपने खेतों से धान काटकर पैदल घर लौट रहे थे। इसी दौरान एक बाइक की टक्कर से वे सड़क से उछलकर खेतों में जा गिरे। इस पर खेतों में काम करने वाले लोगों ने दौड़कर उन्हें उठाया और उनके परिजनों को इसकी सूचना दी। बाद में एंबुलेंस की मदद से उन्हें सीएचसी रसूलाबाद लाया गया, जहां डॉक्टर नरेश चंद्रा ने उनका उपचार किया। उनके सिर में गंभीर चोट होने के कारण उन्हें हैलट अस्पताल कानपुर रेफर किया गया है।

नौकरी का झांसा दे शारीरिक शोषण

कानपुर देहात। मंगलपुर थाना क्षेत्र के एक गांव की महिला ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसकी शादी वर्ष 2018 में हुई थी। पति ने दूसरी शादी कर ली, जिसका मामला न्यायालय में विचाराधीन है।

इसी दौरान झींझक के ओमनगर में रहने वाले डेरापुर के महोई निवासी शिववर्धन सिंह सेंगर से संपर्क हुआ। वह इटावा में प्रतियोगी परीक्षा की कोचिंग कर रही थी, वहीं वह भी उसी के साथ रहकर कोचिंग करने लगा। इसके बाद उसने शादी का झांसा दिया और डेढ़ वर्ष तक शारीरिक संबंध बनाता रहा। उसने यह भी झांसा दिया कि उसकी अच्छी पहुंच है, वह लेखपाल में नौकरी लगवा देगा। नौकरी के नाम पर काफी पैसा भी लिया। अब पैसे मांगने पर वापस नहीं कर रहा है। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू की है। मंगलपुर इंस्पेक्टर महेश कुमार ने बताया कि पीड़िता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है।

दुष्कर्म पीड़िता ने की जान देने की कोशिश

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

- गांव के युवक ने घर लौट रही युवती के साथ किया था रेप
- आरोपी गिरफ्तार, एएसपी बोले लापरवाही की होगी जांच

अमृत विचार: रूरा थाना क्षेत्र के एक गांव में दुष्कर्म पीड़िता युवती ने आत्महत्या का प्रयास किया। इलाज जारी है मगर उसकी हालत अभी भी नाजुक है। घटना को लेकर इलाके में सनसनी रही। लोगों ने मामले में दुष्कर्म के आरोपी के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की। दूसरी तरफ, परिजनों द्वारा दी गई तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लिया है। उससे पूछताछ की जा रही है।

परिजनों के अनुसार घटना करीब डेढ़ माह पुरानी है। 10 अक्टूबर को पीड़िता किसी काम से पड़ोस में गई थी। इसके बाद घर लौट रही थी। इस दौरान गांव के ही रहने वाले एक युवक ने उसे रास्ते में रोक लिया। इसके बाद एक बंद कमरे में ले गया और जबरन दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया। घटना से सदमे में आई युवती ने उसी दिन फंदा लगाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। परिजन गंभीर हालत में उसे रूरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए, जहां से डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल और फिर कानपुर हैलट अस्पताल रेफर कर दिया। परिजनों का कहना है कि उनकी बेटी का लंबे समय से इलाज चल रहा है, लेकिन हालत में कोई सुधार नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि आरोपी कई महीनों से युवती के साथ छेड़छाड़ और अश्लील हरकतें कर रहा था।

परिजनों ने कहा कि आरोपी पर कड़ी कार्रवाई हो और पीड़िता को न्याय मिले, क्योंकि उसकी हालत बेहद गंभीर है और वह जिंदगी और मौत की जंग लड़ रही है। मामले में अपर पुलिस अधीक्षक राजेश पांडेय ने बताया कि परिजनों की तहरीर के आधार पर आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है। उससे विस्तृत पूछताछ की जा रही है। साथ ही विभागीय जांच टीम गठित की गई है, जो यह जांच करेगी कि मामले में कहीं कोई लापरवाही तो नहीं हुई। एएसपी ने कहा कि दोषी पाए जाने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस ने ठगी की रकम वापस कराई

राजपुर। क्षेत्र में साइबर क्राइम के दो मामलों में साइबर सेल ने तत्कालिक कदम उठाकर पीड़ितों को रकम वापस कराई है।

पैलावर निवासी राजकिशोर शर्मा के फोन में 15 अक्टूबर को कॉल आई। कॉलर ने लेबर कार्ड अपडेट करने का झांसा दिया और ओटीपी भेजकर जानकारी हासिल कर ली, जिससे 9396 रुपये एकाउंट से निकलने का मैसेज आया। उसने हेल्पलाइन नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज करा दी। साइबर हेल्प डेस्क ने साइबर अपराधी के वॉलेट और बैंक अकाउंट को डेबिट फ्रीज कराया और राजकिशोर के खाते में 9396 रुपये वापस कराए।

उधर, जैनपुर के आकाश पुत्र महेन्द्र पाल सिंह के साथ फ्रॉड हुआ। मोबाइल पर इंस्टाल व्हाट्स-एप पर ई चालान के नाम से एपीके फाइल की लिंक आई। कहने पर आकाश ने लिंक खोला तो मोबाइल हैक हो गया। इसके बाद साइबर अपराधी ने बैंक खाते से 55,949 रुपये अपने खातों में ट्रांसफर कर लिए। आकाश ने भी 1930 पर शिकायत दर्ज कराई। राजपुर थाने की साइबर हेल्प डेस्क ने नंबर से साइबर अपराधी का पता लगाया और अकाउंट फ्रीज करा रकम वापस कराई।

भूमि के विवाद में दो पक्षों में झगड़ा

रसूलाबाद। थाना क्षेत्र के मौजमपुर गांव में बुवाई करते समय गांव के ही कुछ लोगों ने कुल्हाड़ी व हंसिया से बाबा- नाती पर हमले का मामला सामने आया है। इसमें पांच लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ है।

दूसरे पक्ष की महिला ने गेहूं व बरसीम की फसल ट्रैक्टर से जोत कर नष्ट करने और विरोध करने पर मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। रामपाल सिंह ने बताया कि वह नाती मनीष उर्फ मानवेंद्र प्रताप व अरुण कुमार के साथ गेहूं की बुवाई करने गया था। गांव के ही दिनेश, बृजेश, सुमित, वैभव व सचिन ने कुल्हाड़ी-हसिया व लाठी-डंडों से हमला किया। उधर, गीता देवी पत्नी बृजेश कुमार ने रामपाल सिंह, ललित, अरुण, मनीष, पवन, आकाश व कुछ अज्ञात पर रिपोर्ट लिखाई है।

अधिवक्ता एसएन गुप्ता का निधन

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचार: अकबरपुर की ऐतिहासिक श्रीरामलीला समिति और अधिवक्ता समिति के पूर्व अध्यक्ष एसएन गुप्ता का सोमवार देर रात निधन हो गया। मंगलवार को शिवराजपुर के खेरेश्वर गंगा घाट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके निधन की खबर लगते ही बड़ी संख्या में लोग उनके आवास पर पहुंचे और शोक संतप्त परिवार को सांत्वना प्रदान की।

वकालत के साथ सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय रहने वाले सत्यनारायण गुप्ता (65) काफी समय से अस्वस्थ थे। हाल में उनकी तबीयत और भी खराब हो गई थी। सोमवार रात करीब दस बजे अचानक हालत बिगड़ गई। परिजन उन्हें लेकर कानपुर जा रहे थे तभी रास्ते में सांसें थम गईं। उनके निधन की सूचना मिलते ही हजारों की संख्या में लोग उनके अंतिम दर्शनों को उनके आवास पर एकत्र हो गए नम आंखों से सभी ने अपने प्रिय समाजसेवी को विदाई दी।

भाजयुमो के पूर्व जिलाध्यक्ष और पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष जितेंद्र सिंह गुड्डन, वरिष्ठ अधिवक्ता सुरेंद्र पाल शर्मा, पूर्व अध्यक्ष दिलीप सिंह यादव, सभासद जहान सिंह यादव, सामाजिक कार्यकर्ता कंचन मिश्रा, पूर्व प्रधान महेश गुप्ता सहित सर्वेश कुमार कौशल, विपिन चंद दीक्षित, महेश प्रसाद ओमर, रूपेश कुमार, प्रमोद मिश्रा, शिव करन सिंह सेंगर, मो शफीक कुर्रेशी, गोपाल चंद श्रीवास्तव, मदन मोहन शुक्ला, अमित श्रीवास्तव आदि पहुंचे और बेटे सत्यम ओमर सहित अन्य परिवारी जनों को सांत्वना प्रदान की। दोपहर में सदर तहसील में शोकसभा का आयोजन किया गया।

एसएन गुप्ता के निधन पर अधिवक्ता समिति में शोकसभा हुई। अमृत विचार

राज्यमंत्री पहुंचीं | दौड़, लंबी कूद और कबड्डी की हुईं प्रतियोगिताएं, बच्चों को सौंपे गए प्रमाणपत्र

खेल स्पर्धा में बेटियों ने दिखाया दमखम

संवाददाता, शिवली

अमृत विचार: अकबरपुर रनियां विधायक खेल प्रतियोगिता का आयोजन शेखूपुर के खेल मैदान पर किया गया। प्रतियोगिता का उद्घाटन व पुरस्कार वितरण राज्यमंत्री,विधायक प्रतिभा शुक्ला ने किया। उन्होंने इस मौके पर कहा कि सबको स्वस्थ रखने में खेलकूद का बहुत महत्व है।

प्रतियोगिता में सब जूनियर 100 मीटर दौड़ बालक वर्ग में आयुष यादव प्रथम रहे।जब कि 800 मी बालक वर्ग में शोभित प्रथम रहे। सब जूनियर बालिका वर्ग में साक्षी प्रथम व 800 मीटर वर्ग में लक्ष्मी प्रथम रही। जूनियर 100 मी वर्ग में सौरभ कुमार प्रथम 400 मीटर दौड़ में नितिन पाल प्रथम रहे। 1500 मीटर दौड़ में अंकित प्रथम व सीनियर वर्ग में 200 मीटर दौड़ में अंकित,400 मीटर दौड़ में शनि व 1500 मीटर बालक वर्ग में अजीत यादव प्रथम रहे। सीनियर कबड्डी वर्ग में अकबरपुर की टीम विजेता रही। सब जूनियर बालक वर्ग लंबी कूद में में अंश प्रथम रहे। वही सब जूनियर वर्ग में लंबी कूद में नंदिनी प्रथम रही। जूनियर वर्ग में लंबी कूद में फैजान प्रथम रहे। सीनियर वर्ग में बालक वर्ग में नितिन पास प्रथम रहे। इस मौके पर एसडीएम राजकुमार पांडेय,ग्राम प्रधान किरण देवी,जिला युवा कल्याण अधिकारी देवेंद्र कुमार,राज बाबू अग्निहोत्री, गिरीश तिवारी,शेखर तिवारी, हर्षित तिवारी,छोटू अग्निहोत्री, आशीष अग्निहोत्री उपस्थित रहे। कार्यक्रम प्रभारी सुश्री नैनसी कौशल रही। संचालन विष्णु मिश्र ने किया।

खेलकूद की विजेता बेटी को प्रमाण पत्र देतीं राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला। अमृत विचार

मैदान पर गिट्टी साफ दिख रही थी।

मैदान पर बिखरी गिट्टी पैरों को दे रही थी चुभन

- खेल मैदान तैयार करने में युवा कल्याण विभाग के जिम्मेदारों ने लापरवाही बरती। मैदान की गिट्टी तक साफ नहीं की गई। वॉलीबाल ग्राउंड पर गिट्टी छितरा रही थी, जो खिलाड़ियों के पैरों पर चुभन पैदा कर रही थी।

कार्यालय नगर पंचायत अकबरपुर जनपद कानपुर देहात

पत्र संख्या–1153/एन0पी0ए0/2025–26 दिनांक– 02.12.2025

ई–निविदा सूचना

समस्त ठेकेदारों/फर्मों को सूचित किया जाता है कि नगर पंचायत अकबरपुर में राज्य वित्त आयोग के अन्तर्गत प्रस्तावित कार्यों हेतु दिनांक– 26.12.2025 को अपरान्ह 3:30 बजे तक निविदायें ई–टेण्डरिंग वेबसाइट www.etender.up.nic.in पर आमंत्रित करती है। जो उसी दिन अपरान्ह 4:30 बजे खोली जायेंगी। निविदाओं का निर्धारित शुल्क कार्यालय नगर पंचायत अकबरपुर में जमा कराकर जमा रसीद संलग्नकों सहित अपलोड की जानी आवश्यक है। 2 प्रतिशत अर्नेष्ट मनी नकद एन0एस0सी0 अथवा एफ0डी0आर0 जो अधिशाषी अधिकारी नगर पंचायत अकबरपुर के नाम बन्धक हो अपलोड करना अनिवार्य है। किसी भी निविदा को बिना कोई कारण बताये निरस्त/स्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी को होगा। प्रस्तावित कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है।

क्र0 सं0	कार्य का नाम	आगणन/ अनुमानित धनराशि	अर्नेष्ट मनी 2 प्रतिशत	निविदा प्रपत्र का मूल्य	कार्यावधि
1	वार्ड नं0 2 मा0 कांशीराम नगर आलमचन्द्रपुर में रमेश पाण्डेय के मकान से मुन्नू पाण्डेय के मकान तक इण्टरलाकिंग रोड व नाली निर्माण कार्य।	299700.00	6000.00	300.00	3 माह
2	वार्ड नं0 7 अम्बेडकर नगर में बजाज शोरूम से नसीब खान के मकान तक इण्टरलाकिंग रोड व नाली निर्माण कार्य।	950300.00	20000.00	1000.00	3 माह
3	वार्ड नं0 7 अम्बेडकर नगर में इंदल यादव के मकान से राजवीर सिंह के मकान तक इण्टरलाकिंग रोड व नाली निर्माण कार्य।	1417600.00	29000.00	1400.00	3 माह
4	वार्ड नं0 7 अम्बेडकर नगर में टी0एन0 पाण्डेय के मकान से हीशंकर गौतम के मकान (सीएचसी के पास) तक इण्टरलाकिंग रोड व नाली निर्माण कार्य।	1162900.00	24000.00	1200.00	3 माह
5	वार्ड नं0 7 अम्बेडकर नगर में अनिल शुक्ला के मकान से गजेन्द्र सिंह के मकान (आर0पी0एस0 स्कूल के पास) तक इण्टरलाकिंग रोड व नाली निर्माण कार्य।	880400.00	18000.00	900.00	3 माह
6	वार्ड नं0 7 अम्बेडकर नगर में मदन तिवारी के मकान से रोहित यादव के मकान तक इण्टरलाकिंग रोड व नाली निर्माण कार्य।	328800.00	7000.00	300.00	3 माह
7	वार्ड नं0 10 लोहिया नगर में सुनील पासवान के मकान से इरफान खान के मकान तक सी0सी0 रोड व नाली निर्माण कार्य।	914000.00	19000.00	900.00	3 माह
8	वार्ड नं0 12 बजरंग नगर में मेवालाल कुशवाहा के मकान से पप्पू यादव के मकान तक इण्टरलाकिंग रोड व नाली निर्माण कार्य।	667400.00	14000.00	700.00	3 माह
9	वार्ड नं0 16 कन्हैया नगर ललित कमल के मकान से भूरा मास्टर के मकान तक इण्टरलाकिंग रोड व नाली निर्माण कार्य।	336900.00	7000.00	300.00	3 माह

(आशीष कुमार)
अधिशासी अधिकारी
नगर पंचायत अकबरपुर
कानपुर देहात

(दीपाली सिंह)
अध्यक्ष
नगर पंचायत अकबरपुर
कानपुर देहात

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 3 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

12 बड़े बकायेदारों ने कराया पंजीकरण

शुक्लागंज, अमृत विचार। बिजली बिल राहत योजना के पहले चरण के तहत मंगलवार को बिजली विभाग ने आजाद नगर और चंपापुरवा में शिविरों का आयोजन किया। शिविरों में बड़े बकायेदारों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और योजना का लाभ लेने के लिए पंजीकरण कराया। एसडीओ राजेंद्र प्रसाद के नेतृत्व में लगाए गए दोनों कैंपों में कुल 12 बड़े बकायेदारों ने ओटीएस के तहत अपना पंजीकरण पूरा कराया। विभाग ने बताया कि शिविरों के दौरान उपभोक्ताओं को योजना की शर्तों व लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। पंजीकरण के साथ विभाग ने ढाई लाख रुपये का राजस्व भी वसूल किया। एसडीओ ने बताया कि आने वाले दिनों में भी कैंप लगाकर अधिक से अधिक उपभोक्ताओं को योजना का लाभ दिलाया जाएगा।

वालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन कल

उन्नाव, अमृत विचार। शहर के लखनऊ बाईपास स्थित पं. दीनदयाल उपाध्याय स्पोर्ट्स स्टेडियम में जूनियर बालक वर्ग में 4 दिसंबर को वालीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन होगा। इसमें 18 वर्ष तक के बालक प्रतिभाग कर सकते हैं। जिला क्रीड़ाधिकारी मुकेश कुमार सब्बरवाल ने बताया कि प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए खिलाड़ी पंजीयन करा सकते हैं। इसके लिए उन्हें आधार कार्ड की फोटोकापी व मूल प्रति, दो पासपोर्ट साइज की फोटो व बैंक पासबुक की फोटो कॉपी लाना होगा। अन्य जानकारी के लिए खिलाड़ी जिला खेल कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

विद्युत बिल संशोधन कैंप का लिया जायजा

नवाबगंज, उन्नाव, अमृत विचार। ब्लाक क्षेत्र के गांव सरांय जोगा में विद्युत बिल राहत योजना के तहत विशेष कैंप लगाया गया। मंगलवार को मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के मुख्य अभियंता इंजीनियर बीके आर्य पहुंचे। उन्होंने योजना के क्रियान्वयन की स्थिति का जायजा लिया। साथ ही विभागीय अभियंताओं को जरूरी दिशा-निर्देश दिए। अजगैन एसडीओ रुद्र प्रताप ने बताया कि इस योजना के अंतर्गत कैंप में 21 उपभोक्ताओं का बिल संशोधन किया गया। इनका 5.20 लाख बिल बकाया था। जिन्हें शासन की योजना के तहत 2.52 लाख से अधिक की छूट दी गई।

कुएं में उतराता मिला लापता वृद्ध का शव

हसनगंज। हसनगंज कोतवाली क्षेत्र की मोहान चौकी अंतर्गत शंकरपुर गांव निवासी छेदीलाल (65) पुत्र टिक्कन करीब आठ दिन पहले अचानक लापता हो गए थे। तभी से परिजन उनकी तलाश कर रहे थे। मंगलवार को क्षेत्र के अहिरन बगिया नामक बाग स्थित कुआं में उनका शव उतराता मिला। बेटे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच के बाद शव कुएं से निकलवाकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया। चौकी इंचार्ज अनिल कुमार साहू ने बताया कि बेटे की सूचना पर जांच के बाद शव कुएं से निकलवाकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा गया है। बताया कि बेटे के अनुसार वह मंदबुद्धि था।

गौशालाओं का सीवीओ ने किया निरीक्षण

नवाबगंज। सीवीओ (मुख्य पशु चिकित्साधिकारी) ने नगर पंचायत स्थित कान्हा गौशाला व आसपास की गौशालाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने मवेशियों के लिए हरे चारे का पर्याप्त स्टॉक व सफाई व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। नवाबगंज स्थित कान्हा गौशाला के निरीक्षण में सीवीओ डॉ. विनोद कुमार को 224 मवेशी मिले। इनकी टैगिंग भी हो गई थी। उन्होंने मवेशियों के पीने के पानी व्यवस्था देखने के साथ ठंड से बचाव के लिए लगाए गए तिरपाल देखे। सीवीओ ने ईओ अनिल कुमार को औसत खपत के आधार पर तीन दिन पहले ही भूसा मंगवाने की व्यवस्था करने को कहा।

घायल व्यक्ति की नकदी पुलिस ने लौटाई

उन्नाव। बीती 29 नवंबर को दही थानाक्षेत्र के पुरवा मार्ग स्थित दरोगा खेड़ा के राजकीय कृषि गोदाम प्रभारी प्रशांत पटेल पुत्र प्रताप निवासी केदारीपुर थाना मितौली लखीमपुर खीरी गोदाम से लौटते समय सड़क हादसे में गंभीर घायल हुए थे। एसओ ज्ञानेंद्र सिंह ने उन्हें जिला अस्पताल भिजवाया था। प्रशांत की बाइक में एक बैग मिला था जिसमें 3 लाख 56 हजार 610 रुपये मिले थे। इस पर उन्हें सुरक्षित करते हुए पुलिस ने इसकी जानकारी घायल के परिजनों को दी थी। मंगलवार को राजकीय कृषि बीज भंडार बिछिया के गोदाम प्रभारी सचिन पाल पुत्र कलपू पाल निवासी अग्निहोत्री नगर मकड़ी खेड़ा थाना कल्यानपुर कानपुर नगर व घायल प्रशांत का छोटा भाई योगेश थाने पहुंचे। जिस पर दही थाना के दरोगा मो. रफीक अहमद व अन्य पुलिस कर्मियों ने नगदी उनके सुपुर्द की। दही पुलिस के कार्य की सराहना लोग सोशल मीडिया पर भी कर रहे है।

अतिक्रमण ने बिगाड़ दी शहर की सूरत, पैदल चलना भी मुश्किल

सदर बाजार, बड़ा चौराहा, छोटा चौराहा, सब्जी मंडी व गांधी नगर तिराहा पर अतिक्रमण के कारण सड़क पर वाहनों की आवाजाही में बाधा

शुभम निगम, उन्नाव

सुबह बाजार खुलने से पहले बड़ा चौराहा का नजारा। अमृत विचार

बाजार खुलने के बाद बड़ा चौराहा का नजारा। अमृत विचार

बाजार खुलने से पहले धवन रोड का नजारा। अमृत विचार

अमृत विचार। शहर की यातायात व्यवस्था पूरी तरह अतिक्रमण की भेंट चढ़ चुकी है। प्रमुख बाजारों व सड़कों पर सुबह बाजार खुलने के साथ ही नजारा बदल जाता है और 40 फुट चौड़ी सड़क चंद घंटों में सिमटकर 10 से 15 फुट की रह जाती है। दुकानदारों द्वारा फुटपाथ व सड़कों पर किए गए अवैध कब्जों के चलते यह स्थिति उत्पन्न हुई है। जिसने शहर की 'सूरत' बिगाड़ दी है।

शहर की सदर बाजार, बड़ा चौराहा, छोटा चौराहा, सब्जी मंडी व गांधी नगर तिराहा पर अतिक्रमण के कारण सड़क पर वाहनों की आवाजाही मुश्किल हो गई है। रही-सही कसर सड़क किनारे अव्यवस्थित ढंग से खड़े वाहन पूरी कर देते हैं। जिससे अक्सर लंबा जाम लगता है और स्थिति इतनी विकराल हो जाती है कि लोगों का पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है। सुबह 10 बजे के बाद मुख्य बाजार की सड़कों पर चलना किसी चुनौती से कम नहीं होता। दुकानदार अपना सामान बाहर तक फैला देते हैं और पार्किंग की जगह न होने से वाहन सड़क पर खड़े हो जाते हैं। 40 फीट की सड़क कब 10 फीट की रह जाती है पता ही नहीं चलता। नगर पालिका और प्रशासन द्वारा समय-समय पर अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाए जाते हैं लेकिन इन अभियानों का असर केवल कुछ दिनों तक ही सीमित रहता है। अभियान समाप्त होते ही स्थिति जस की तस हो जाती है।

आपातकाल में नहीं पहुंच पाती एंबुलेंस व दमकल

शहर की सबसे व्यस्ततम धवन रोड पर बाजार खुलते ही 20 से 25 फुट की सड़क अतिक्रमण की भेंट चढ़ जाती है। जिससे यहां पैदल चलना भी दूभर हो गया है। लोगों के अनुसार दुकानदारों द्वारा सड़क पर सामान फैलाने के साथ ही सड़क पर लगी दुकानों से आवाजाही पूरी तरह से बाधित हो जाती है। जिससे यहां किसी भी दुर्घटना या आगजनी की स्थिति में दमकल व एंबुलेंस का पहुंचना असंभव है। लोगों ने कहा कि यह स्थिति किसी भी समय बड़े हादसे का कारण बन सकती है। स्थानीय निवासियों नेअतिक्रमण हटाने और आपातकालीन रास्ता सुनिश्चित करने की मांग की है।

जाम से निजात दिलाने को हटाया गया अतिक्रमण

संवाददाता, शुक्लागंज (उन्नाव)

टेंपो स्टैंड के पास से अतिक्रमण हटवाते इंस्पेक्टर और पालिका कर्मी। अमृत विचार

अमृत विचार। शुक्लागंज में बीते कई वर्षों से सुबह-शाम लगने वाले भीषण जाम से निजात दिलाने के लिए प्रशासन ने सख्त कदम उठाए हैं। एसपी के निर्देश के बाद मंगलवार को पुलिस व नगर पालिका की संयुक्त कार्रवाई में नो-पार्किंग जोन से सवारी वाहन खदेड़े गए और टेंपो स्टैंड के पास के अतिक्रमण हटाए गए।

शुक्लागंज में नवीन पुल के पास रोज लग रहे जाम से निपटने के लिए एसपी ने सोमवार को समस्या स्थलों का निरीक्षण कर गंगाघाट कोतवाली पुलिस को सख्त निर्देश दिए थे। इसके तहत मंगलवार सुबह से पुलिस ने पोनी रोड तिराहे सहित आसपास के नो-पार्किंग जोन में अनाधिकृत रूप से खड़े वाहनों को हटाना शुरू किया। वाहन चालकों को टेंपो स्टैंड पर ही वाहन खड़ा करने व सवारियां लेने-उतारने के निर्देश दिए गए। उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी दी गई। दोपहर में नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुकेश कुमार मिश्रा, जेई घनश्याम मौर्या और पुलिस टीम ने संयुक्त रूप से बालूघाट मोड़ के पास स्थित टेंपो स्टैंड के आसपास जेसीबी की मदद से अस्थाई अतिक्रमणों को तुरंत हटवा दिया। दोबारा अतिक्रमण न करने की हिदायत भी दी गई।

इस दौरान थाना प्रभारी सुनील सिंह भी मौके पर पहुंचे और यातायात कर्मियों को निर्देशित किया। उन्होंने बताया कि सुबह के पीक आवर्स के दौरान वह स्वयं मौजूद रहेंगे और भारी वाहनों के प्रवेश को रोककर जाम की स्थिति पर नियंत्रण का प्रयास करेंगे। प्रशासन की इस कार्रवाई से नागरिकों को जाम से काफी राहत मिलने की उम्मीद है।

लाखों के गबन की जांच करने जिला अस्पताल पहुंची लखनऊ की टीम

उन्नाव, अमृत विचार। जिला अस्पताल की रोगी कल्याण समिति के खाते से 19 लाख 98 हजार रुपये गबन के मामले में मंगलवार को लखनऊ की दो सदस्यीय टीम पहुंची और वहां पर मौजूद अभिलेख देखे।

बता दें कि शहर के मोहल्ला जुराखन खेड़ा निवासी विनय यादव जिला अस्पताल में वार्ड ब्वाय के पद पर तैनात था। वह ट्रेजरी संबंधी कार्य के साथ मेडिकोलीगल का भी काम देख रहा था। वह बीती 18 मार्च से अनुपस्थित चल रहा था। तत्कालीन सीएमएस डॉ. आरए मिर्जा ने जब रोगी कल्याण समिति के बैंक खाते की डिटेल निकलवाई तो अप्रैल 2024 से मार्च 2025 तक 19,98,606 रुपये बैंक खाते में जमा न किए जाने की पुष्टि हुई थी। इसके बाद यह मामला उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के पास पहुंचा था। इस पर उन्होंने अपर निदेशक स्वास्थ्य को इसकी जांच कराकर कार्रवाई के निर्देश दिये थे। इसके बाद अपर निदेशक डॉ. जीपी गुप्ता ने जांच टीम गठित कर दोबारा जांच कराई और पटल प्रभारी वरिष्ठ लिपिक को निलंबित कर दिया था। इसी मामले में मंगलवार को वरिष्ठ लेखाधिकारी राधेश्याम सोनी व सयुक्त निदेशक वीपी सिंह जिला अस्पताल पहुंचे। जहां उन्होंने सीएमएस डॉ. राजीव गुप्ता के साथ बैठक कर गबन से जुड़े अभिलेखों की जांच की। वहीं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों से भी बात की। जांच अधिकारियों ने बताया कि मामले की जांच कर इसकी पूरी रिपोर्ट बनाकर अपर निदेशक को दी जाएगी। इसके बाद वहीं से आगे की कार्रवाई की जाएगी।

जांचे अभिलेख

- रोगी कल्याण समिति के खाते से हुआ था 19.98 लाख का गबन

दो दोषियों पर कोर्ट ने लगाया जुर्माना

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। चोरी व आबकारी अधिनियम के मामलों की अंतिम के बाद कोर्ट ने दो दोषियों को जेल में बिताई गई अवधि की सजा के साथ जुर्माना लगाया है।

माखी पुलिस ने 28 फरवरी-2009 को थानाक्षेत्र के बिरची गांव निवासी रामकिशोर के पास से चोरी के सोलर पैनल बरामद होने पर उसे जेल भेजा था। वहीं 13 अप्रैल-2020 को माखी पुलिस ने थानाक्षेत्र के पावा गांव निवासी अनिल कुमार के पास से अवैध रूप से बनाई गई 20 कच्ची शराब बरामद की थी। इस पर पुलिस ने उसे भी जेल भेजा था। मंगलवार को दोनों मुकदमों की अंतिम सुनवाई के बाद कोर्ट ने रामकिशोर व अनिल कुमार को दोषी ठहराया गया। जिन्हें जेल में बिताई गई अवधि की सजा के साथ राम किशोर पर 4000 व अनिल पर 2000 का जुर्माना लगाया गया।

सफाई न होने से फोरलेन का नाला चोक, दुकानदार परेशान

शुक्लागंज, अमृत विचार। फोरलेन पर स्थित मुख्य नाले की समय से सफाई न होने का खामियाजा स्थानीय लोगों और दुकानदारों को भुगतना पड़ रहा है। नगर पालिका द्वारा बरसात से पहले चलाया गया सफाई अभियान आधा-अधूरा ही रहा, जिसका परिणाम यह है कि अब नाला जगह-जगह से चोक हो चुका है। नाले के जाम होने से गंदा पानी उफनकर सड़कों और दुकानों के सामने भरने लगा है, जिससे राहगीरों के साथ व्यापारियों को भी भारी परेशानी उठानी पड़ रही है।

कुछ दिन पहले सरस्वती टाकीज के सामने नाला चोक होने से गंदा पानी भर गया था। व्यापारियों ने इसे बड़ी समस्या बता साफ-सफाई की मांग की थी। जिस पर 'अमृत विचार' ने इस मुद्दे को प्रमुखता से प्रकाशित भी किया था। इसके बावजूद पालिका प्रशासन ने नाला साफ कराने के बजाय फोरलेन पर टाकीज के सामने गाड़ी धुलाई करने वाले को नोटिस थमा दिया। जिससे लोगों में रोष भी देखने को मिला। इस संबंध में एसबीएम प्रभारी अनूप शुक्ला ने बताया कि अंबिकापुरम क्षेत्र में नालों की सफाई का कार्य कराया जा रहा है और जल्द ही पूरे फोरलेन नाले की सफाई कराई जाएगी।

नाले का पत्थर टूटने से पलटने से बची दमकल

नाले का पत्थर टूटने से एक ओर झुकी फायर बिग्रेड की गाड़ी। अमृत विचार

शुक्लागंज, अमृत विचार। गंगाघाट कोतवाली के सामने फोरलेन मार्ग पर नाले का पत्थर काफी दिनों से टूटा पड़ा था, लेकिन नगर पालिका द्वारा इसकी मरम्मत न किए जाने से मंगलवार दोपहर बड़ा हादसा होने से बच गया। आमद कराने कोतवाली पहुंच रही दमकल की गाड़ी टूटे पत्थर के कारण अचानक नाले में धंस गई, जिससे वाहन एक ओर तेज़ी से झुक गया।

मंगलवार दोपहर करीब डेढ़ बजे फायर कर्मी मनोज वर्मा दमकल वाहन लेकर कोतवाली के अंदर आमद कराने जा रहे थे। 5000 लीटर पानी भरा होने के कारण वाहन का भार अधिक था, ऐसे में गाड़ी पलटने की आशंका बढ़ गई।

स्थिति संभालने के लिए फायर कर्मियों ने टैंकर में भरा पानी खाली किया, जिससे हजारों लीटर पानी बहकर बर्बाद हो गया। इसके बाद जेसीबी की मदद से वाहन को सुरक्षित बाहर निकाला गया। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस स्थान पर पहले भी नाला ढहने या पत्थर टूटने की घटनाएं हो चुकी हैं, लेकिन पालिका प्रशासन ने ध्यान नहीं दिया।

ब्लॉक स्तरीय खेलकूद में उमेश व अंशिका रहीं अव्वल

विजयी मुद्रा में बैठे खिलाड़ी व खड़े अतिथि। अमृत विचार

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। विकासखंड बीघापुर की ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन रामनाथ इंटर कॉलेज रुझेई के खेल मैदान में हुआ। इसमें ब्लॉक के सभी संकुलों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

समारोह का शुभारंभ निवर्तमान खंड शिक्षाधिकारी शुचि गुप्ता ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर किया। इसमें जिला व्यायाम शिक्षिका निशा तोमर, ब्लॉक अध्यक्ष राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ धीरज प्रताप सिंह आदि गणमान्य लोग मौजूद रहे। प्रतियोगिता में 400 मीटर दौड़ (बालक वर्ग) में उमेश, मयंक व राजू ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी वर्ग की बालिकाओं में अंशिका, वंदना व सिमर सफल रहीं। 50 मीटर दौड़ में शशांक, आर्यन, लवकुश (बालक वर्ग) व प्रियांशी, वर्तिका, अंशिका (बालिका वर्ग) ने पदक जीते। कबड्डी प्रतियोगिता में घाटमपुर की टीम प्रथम रही। संचालन व व्यवस्था सभी एआरपी व शिक्षकों ने संभाली। अंत में विजयी छात्र-छात्राओं व टीमों को सम्मानित कर समारोह का समापन किया गया।

सिटी डायरी

6 दिसंबर से शुरू होगा तीन दिवसीय सनातन धर्म सत्संग समारोह

बैठक में मौजूद लोग।

सफीपुर, उन्नाव, अमृत विचार। सनातन धर्म सत्संग समिति के तत्वाधान में आयोजित होने वाला तीन दिवसीय सनातन धर्म सत्संग समारोह इस बार 6 दिसंबर से कस्बे के मोटेश्वर महादेव मंदिर समीप भगवती चरण वर्मा पार्क में होगा। इस दिन नगर में भव्य शोभायात्रा निकालकर सनातनियों में उत्साह जगाने का काम किया जाएगा। 73वें सत्संग समारोह को भव्यता देने के लिए मंगलवार को भिनकीपुर धाम के महंत राम स्वारूप ब्रह्मचारी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित कर रूपरेखा बनाई गई। उन्होंने बताया कि ब्रह्मलीन सन्त गरिया स्वामी की प्रेरणा से इस कार्यक्रम की नींव रखी गई थी। बाद में स्वामी रमेशाश्रम महराज आदि सन्त महात्माओं के निर्देश पर इस सन्त सम्मेलन का आयोजन होता आ रहा है। यह कार्यक्रम इस वर्ष तेहतरवां वर्ष पूरा करेगा। इस दौरान चेयरमैन प्रतिनिधि सौरभ बाजपेई, संयोजक राजू स्वर्णकार, सौरभ ओमर, डाक्टर संजीव अग्निहोत्री, भाजपा नेता कमलेश गुप्ता, कौशल, उमेश गुप्ता, पंडित महावीर शुक्ला, विहिप के बद्री मिश्रा, सुरेन्द्र, इन्नू लोधी आदि मौजूद रहे।

कमरे में फंदे से लटका मिला युवक का शव

दिनेश (फाइल फोटो)

उन्नाव, अमृत विचार। शहर की कांशीराम कालोनी में युवक ने फंदे से लटककर जान दे दी। घटना के समय घर पर अकेला था। सदर कोतवाली अंतर्गत कांशीराम कालोनी निवासी दिनेश (28) पुत्र स्व. कल्लू शादी व अन्य मांगलिक कार्यक्रम में हलवाई के साथ सहयोगी का काम करता था। सोमवार देर रात उसका शव साड़ी के फंदे से कमरे में लटका मिला। गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के हैबतपुर गांव निवासी रिश्तेदार के यहां मांगलिक कार्यक्रम से लौटी मां फूल कुमारी ने बेटे को लटका देख शोर मचाया। पड़ोसियों की मदद से फंदा काटकर उसे जिला अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। बड़े भाई राजेश ने बताया कि दिनेश चार भाइयों में तीसरे नंबर पर था। छोटे भाई महेश ने कालोनी के एक युवक पर आरोप लगाया कि उसके पास दिनेश काम करता था। सोमवार को वह अपने रुपए मांगने गया। जिस पर उसने थप्पड़ मारकर भाई को भगा दिया। इससे उसने आत्महत्या कर ली। दरोगा सभाजीत सिंह ने जांच के बाद शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा। इसमें उसकी हैंगिंग से मौत होने की पुष्टि हुई। कोई चोट नहीं मिली है। कोतवाली प्रभारी चंद्रकांत मिश्रा ने बताया कि युवक एक कैटरिंग ठेकेदार के पास काम करता था। उसी में कुछ रुपए के लेनदेन का विवाद था। जांच की जा रही है।

सरैयां स्कूल के सामने जल निगम की ओर से इस तरह कराई गई खोदाई।

सरैयां प्राथमिक स्कूल के सामने गहरा गड्ढा छात्रों के लिये बना खतरा

शुक्लागंज। सरैयां प्राथमिक विद्यालय के पास रेलवे ओवरब्रिज निर्माण के दौरान करीब छह माह पहले अमृत योजना की भूमिगत पेयजल पाइपलाइन क्षतिग्रस्त हो गई थी। अब विभाग द्वारा उस पाइपलाइन को नए मार्ग से बिछाने का कार्य शुरू कराया गया है। स्थानीय लोगों ने बताया कि कई बार श्रमिकों से गड्ढे को ढकने या घेराबंदी करने का अनुरोध किया गया, लेकिन कोई व्यवस्था नहीं की गई। प्रधान शिक्षिका मंजूलता ने खंड शिक्षाधिकारी जगदीश श्रीवास्तव को भी इसको लेकर शिकायत की है।

कान्हा गौशाला का पशु धन प्रसार अधिकारी ने किया निरीक्षण, टैगिंग के निर्देश

गौशाला का निरीक्षण करती पशु धन प्रसार अधिकारी, ईओ व अन्य। अमृत विचार

शुक्लागंज। गगनी खेड़ा नेतुआ स्थित कान्हा गौशाला का निरीक्षण मंगलवार को पशु धन प्रसार अधिकारी नीतू यादव ने किया। इस दौरान उन्होंने गौशाला की व्यवस्थाओं का विस्तृत परीक्षण किया और गोवंशों की स्थिति का मौके पर मूल्यांकन किया। निरीक्षण के दौरान ईओ मुकेश मिश्रा व जेई घनश्याम मौर्या भी मौजूद रहे। अधिकारियों ने गौशाला में संरक्षित 234 गोवंशों की वास्तविक स्थिति देखी। इसके बाद उन्होंने चारा-पानी की उपलब्धता का बारीकी से जायजा लिया।

लिया संज्ञान | **यात्रियों की दिक्कतों को देखते हुए पुलिस ने चार बजे काम बंद करा दिया**

डामरीकरण के चलते हाईवे पर पूरे दिन रेंगे वाहन

संवाददाता, शुक्लागंज, उन्नाव

हाईवे पर जाम से कतारों में खड़े वाहन। अमृत विचार

अमृत विचार। लखनऊ-कानपुर हाईवे पर एनएचएआई द्वारा कराए जा रहे डामरीकरण कार्य ने मंगलवार को यात्रियों की मुश्किलें बढ़ा दीं। सुबह से शुरू हुआ डामरीकरण का कार्य दोपहर होते-होते जाम का रूप लेता गया और पूरे दिन हाईवे पर वाहन रेंगते हुए चलते रहे।

मंगलवार सुबह करीब दस बजे त्रिभुवन खेड़ा से जाजमऊ पुल के बीच एनएचएआई की टीम ने डामरीकरण का कार्य शुरू कराया। काम के दौरान सड़क की एक लेन पर संकेतक लगाकर मशीनें खड़ी कर दी गईं, जिससे मार्ग संकरा हो गया। कुछ ही देर में वाहन धीमे पड़ गए और हाईवे पर लंबा जाम लग गया। स्थिति बिगड़ते देख जाजमऊ चौकी पुलिस मौके पर पहुंची और वाहनों को एक-एक कर निकालने का प्रयास शुरू किया। पुलिस के प्रयासों से यातायात धीरे-धीरे चलता रहा, लेकिन शाम के समय वाहनों का दबाव बढ़ने से जाम की समस्या फिर गंभीर हो गई। बढ़ती अव्यवस्था और यात्रियों की दिक्कतों को देखते हुए जाजमऊ चौकी पुलिस ने हस्तक्षेप कर करीब चार बजे डामरीकरण का काम बंद करा दिया। काम रुकते ही धीरे-धीरे यातायात सामान्य होने लगा और हाईवे पर वाहनों की रफ्तार वापस पटरी पर आई।

अमृत विचार

कानपुर महानगर

www.amritvichar.com

कानपुर, बुधवार, 3 दिसंबर 2025

सुविचार

उन सभी कारणों को भूल जाएं कि कोई कार्य नहीं होगा, आपको केवल एक अच्छा कारण खोजना है कि यह कार्य सफल होगा!

डॉ. राबर्ट

कानपुर के प्रमुख समाचार

- बुजुर्ग-लाचार मां के सामने बेटे की हत्या-II
- गड़बड़ी पर नहीं, मामला सुलटाने पर ध्यान -III
- दो प्रश्न गलत आए, परीक्षा निरस्त की -IV

आज का मौसम

प्रदूषण और शाम और सुबह धुंध भी नमी के कारण बनी रहेगी । बारिश की कोई संभावना नहीं है ।

26.0⁰	16.0⁰
अधिकतम तापमान	न्यूनतम तापमान
सूर्योदय 06 : 41	सूर्यास्त 05 : 16

अनुराग हेल्थ केयर प्रा.लि.

•ICU •NICU DIALYSIS
• MODULAR OT

दूरबीन विधि से आपरेशन अब कम खर्च में

सीजीएचएस, मेडीक्लेम व आयुष्मान कार्ड मान्य

117/क्यू/702,
शारदा नगर, कानपुर
9889538233, 7880306999

शहर में आज

- **जागरुकता रैली :** पुष्पा खन्ना मेमोरियल सेंटर द्वारा विश्व दिव्यांग दिवस पर जागरुकता रैली कारगिल पार्क मोतीझील से प्रात : 10 बजे ।
- **शांति पाठ :** पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल के आत्मा की शांति के लिए उनके आवास पोखरपुर में शांति पाठ प्रात : 11 बजे ।
- **ज्ञापन :** समाजवादी पार्टी द्वारा एसआईआर को लेकर जिलाधिकारी को ज्ञापन मध्याह्न 12 बजे ।
- **राहत किट वितरण :** भारतीय उद्योग व्यापार मंडल द्वारा बढ़ते हार्ट की समस्या को देखते हुए भारत माता प्रतिमा स्थल घंटाघर में तीन दवाओं की किट का वितरण दोपहर 1 बजे ।
- **बैठक :** श्री गुरु सिंह सभा कानपुर महानगर की बैठक और पत्रकार वार्ता अशोक नगर में सुबह 11 .30 बजे ।

वैन की टक्कर से दो छात्र घायल

कानपुर। खलासी निवासी रजनीश कुमार नवाबगंज स्थित एक प्राइवेट स्कूल में गार्ड हैं । उन्होंने बताया कि सोमवार सुबह तेज रफ्तार वैन ने स्कूल के बाहर दो छात्रों सूर्यांश व प्रियनश को टक्कर मार दी । चालक वैन लेकर मौके से फरार हो गया । थाना प्रभारी नवाबगंज ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर चालक की तलाश की जा रही है ।

सिविल लाइंस में बनेगा मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल

मैकराबर्ट मेमोरियल हास्पिटल की 45 हजार वर्ग मीटर जमीन केडीए को हस्तांतरित

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार हुई कैबिनेट बैठक में कानपुर को दो बड़ी सौगातें मिलीं हैं। सिविल लाइन के दि जार्जिना मैकराबर्ट मेमोरियल हास्पिटल की जमीन पर मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के निर्माण का रास्ता खुला है। सिविल लाइंस स्थित नजूल की 45 हजार वर्ग मीटर भूमि को केडीए को हस्तांतरित करने संबंधी प्रस्ताव पर मुहर लग गई है। अब केडीए पीपीपी मॉडल पर यहां मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का निर्माण करेगा। वहीं कानपुर में पेयजल व्यवस्था को बेहतर करने के लिए 316.78 करोड़ रुपये के प्रस्ताव को भी स्वीकृति मिली है।

सिविल लाइंस स्थित भूखंड संख्या 14/112 पर ब्रिटिश शासनकाल में 16 मार्च 1816 को दि मैकराबर्ट मेमोरियल हास्पिटल बना था। यहां लगे शिलापट के अनुसार जेम्स स्कार्जी मेस्टन ने पत्नी की याद में इस हॉस्पिटल को बनवाया था। इसके संचालन के लिए ट्रस्ट बनाया गया था और 11 सदस्यों की कमेटी भी बनाई गई थी। आजादी के बाद भी हॉस्पिटल को चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से संचालित किया जा रहा था।

2021 अगस्त माह में ट्रस्ट ने जिला प्रशासन को जमीन वापस कर दी थी। इसके बाद जिला प्रशासन ने यहां मल्टी स्पेशियलिटी हास्पिटल के निर्माण व संचालन का प्रस्ताव बनाया था। प्रस्ताव को शासन ने स्वीकार किया था, जिसे मंगलवार को कैबिनेट की बैठक में मंजूरी दे दी गई।

16 मार्च 1816 को दि मैकराबर्ट हास्पिटल बना था

2021 में ट्रस्ट ने जिला प्रशासन को जमीन लौटाई

11 सदस्यों की कमेटी और ट्रस्ट चलाता था अस्पताल

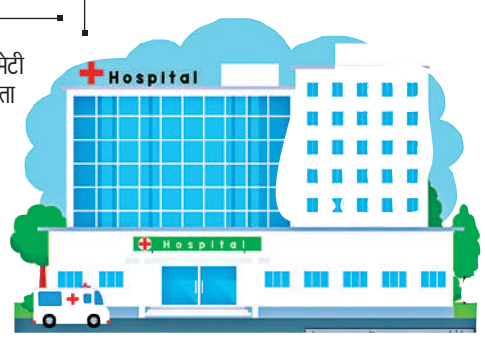

- केडीए पीपीपी मॉडल पर मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का करेगा निर्माण, कैबिनेट बैठक में प्रस्ताव को मिली स्वीकृति
- शासन ने साफ कहा यह निर्णय केवल अपवाद, भविष्य में इस तरह का हस्तांतरण नहीं बनेगा नजीर

कर्मचारियों में जगी आस

कैबिनेट के फैसले के बाद हॉस्पिटल के कर्मचारियों की भी आस जगी है। कर्मचारियों का कहना है कि नर्स, आया, वार्ड ब्वाय, गार्ड आदि हैं, जो अभी अस्पताल परिसर में ही निवास कर रहे हैं। कमेटी विवाद के कारण कर्मचारी परेशान हैं। अस्पताल भी बंद ही है।

केडीए खाका करेगा तैयार

- केडीए मल्टी स्पेशियलिटी हास्पिटल का खाका तैयार करेगा। इसके बनने से पश्चिम क्षेत्र के लोगों को इलाज के लिए हैलट हॉस्पिटल तक दौड़कर नहीं जाना पड़ेगा। केडीए के मुख्य नगर नियोजक मनोज कुमार ने बताया कि जमीन के हस्तांतरण की जानकारी मीडिया के माध्यम से हुई है, अब शर्तों के आधार पर जानकारी तैयार की जायेगी। जिसके बाद कंसलटेंट का चयन करना होगा। क्योंकि निर्माण कार्य पीपीपी मॉडल पर होना है। इसको ध्यान में रखकर शासन के निर्देशों का पालन किया जायेगा।

भाजपा सरकार लगातार स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर करने के लिए प्रतिबद्ध है। मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल बनने से शहर में स्वास्थ्य सुविधा और बेहतर हो जाएगी। लोगों को शहर में ही उच्च स्तरीय इलाज मिल सकेगा। बड़ी आबादी को इसका लाभ मिलेगा।

– रमेश अवस्थी सांसद

राज्य और केंद्र दोनों ही सरकारें आम जनता के हित में काम कर रही हैं। यही वजह है कि मूलभत सुविधाओं को देने के लिए शहर के दो मुख्य प्रस्तावों को कैबिनेट की बैठक में स्वीकृत किया गया। इससे शहर को बड़ा लाभ मिलेगा।

– देवेंद्र सिंह भोले, सांसद

मैकराबर्ट अस्पताल की शानदार इमारत। अमृत विचार

हस्तांतरण निर्णय केवल अपवाद, उदाहरण नहीं

- उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश के अनुपालन में दि जार्जिना मैकरावर्ट मेमोरियल हॉस्पिटल की भूमि को पीपीपी के आधार पर मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल स्थापित किये जाने को केडीए के पक्ष में हस्तान्तरित किए जाने का प्रस्ताव उपलब्ध कराया गया था। पूर्व में विशेष परिस्थितियों एवं लोकहित में नजूल भूमि का आवंटन व हस्तानान्तरण मुख्यमंत्री की सहमति से और मंत्रीपरिषद की स्वीकृति के बाद ही आवंटन या हस्तान्तरित किया गया है। प्रमुख सचिव अमृत अभिजात की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में साफ कहा नजूल की भूमि का यह हस्तांतरण निर्णय केवल अपवाद है। भविष्य में इस तरह का हस्तांतरण उदाहरण नहीं बनाया जा सकेगा।

316.78 करोड़ रुपये से 33 वार्डों के लोगों को मिलेगा शुद्ध पेयजल

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। शहर में पूरब और दक्षिण क्षेत्र में रहने वाली बड़ी आबादी तक जल्द पेयजल लाइनों से शुद्धजल की आपूर्ति हो सकेगी। मंगलवार को दोनों क्षेत्रों में आने वाले 33 वार्डों के लिए बनाई गई पेयजल योजना के लिए 316.78 करोड़ रुपये के प्रस्ताव को कैबिनेट की बैठक में मुहर लग गई। अब योजना को स्वीकृति मिलने के बाद कार्य शुरू होगा, जिससे करीब 15 लाख जनता को सीधा लाभ मिलेगा। बता दें कि पहले जवाहर लाल नेहरू नेशनल अरबन रिन्यूवल मिशन के तहत 869 करोड़ रुपये की पेयजल योजना लायी गई थी, लेकिन यह योजना भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई।

जवाहर लाल नेहरू नेशनल अरबन रिन्यूवल मिशन (जेएनएनयूआरएम) योजना के तहत शहर में टंकी, जलाशय बनाने के साथ ही पेयजल लाइन डाली गयी है। लेकिन बीच-बीच में कई इलाकों में पानी की लाइन नहीं है, कई लाइनें आज तक पानी की टंकी व जलाशय से जुड़ी नहीं हैं। इसके साथ ही कई जगह नई पानी की टंकी की जरूरत है। पूरब और दक्षिण क्षेत्र के इन वार्डों में सबसे ज्यादा समस्या है। जिसको लेकर अटल नवीकरण और शहरी रूपान्तरण मिशन-2.0 (अमृत-2.0) योजनान्तर्गत पाइप लाइन विस्तार के लिए 316.78 करोड़ रुपये का प्रस्ताव तैयार किया गया है। भारत सरकार का रुपये 76.10 करोड़, , और निकाय का अंश 45.66 करोड़ रुपये सम्मिलित है।

मंगलवार को हुई कैबिनेट की बैठक में शहर के इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी गई। अब जल्द धन मिलने के बाद जल निगम टेंडर कराकर कार्य शुरू करा सकेगा। काम पूरा होने के बाद जाजमऊ, सनिगवां, चकेरी, यशोदानगर, गुजैनी, दबौली रतनलाल नगर, बर्रा, कर्रही, बारादेवी समेत कई इलाकों को लाभ मिलेगा।

शहर में कई जगह पाइप लाइन का काम चल रहा है। अमृत विचार

- **अमृत 2.0 योजना के तहत ईस्ट एवं साउथ सर्विस डिस्ट्रिक्ट में होगा पाइप लाइन का विस्तार**
- **वार्डों में रहने वाले लोगों को शुद्ध पेयजल पहुंचाने का लक्ष्य, जल जनित रोगों से मिलेगी मुक्ति**

भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ी जेएनएनयूआरएम योजना

- जवाहर लाल नेहरू नेशनल अरबन रिन्यूवल मिशन के तहत 869 करोड़ रुपये की पेयजल योजना लायी गई थी, लेकिन योजना भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई। मुख्य घटिया पाइप लीकेज के कारण गंगा बैराज स्थित वाटर ट्रीटमेंट प्लांट से सभी जगह पानी नहीं पहुंच पाया। 20-20 करोड़ लीटर के दो वाटर ट्रीटमेंट प्लांट बनाए गए थे लेकिन सिर्फ छह करोड़ लीटर जलापूर्ति होती है। बता दें कि शहर में 15 किलोमीटर घटिया पाइप की मरम्मत के लिए नगर निगम ने 138 करोड़ रुपये जल निगम को दिए है। इसका कार्य चल रहा है। जनवरी में काम पूरा करने की योजना है।

कैबिनेट से स्वीकृति मिलने के बाद पेयजल लाइन का विस्तार किया जाएगा, इसके लिए टेंडर कराया जाएगा। दो साल में कार्य पूरा हो पाएगा।

– राहुल तिवारी, सहायक अभियता, जल निगम

15 लाख जनता को सीधा लाभ मिलेगा

76.10 करोड़ भारत सरकार का अंश होगा

182 करोड़ राज्य सरकार का योगदान

10 टंकी

09 जलाशय

63152 कनेक्शन

562 किलोमीटर

यह वार्ड होंगे कवर

- सनिगवां नौबस्ता ईस्ट हंसपुरम, यशोदानगर, तिवारीपुर, श्यामनगर, रामपुरम, जाजमऊ, रविदास पुरम गुजैनी, रतनलाल नगर, बर्रा, छेदीसिंह का पुरवा, उस्मानपुर, कृष्णानगर गांधीग्राम, देहली सुजानपुर, पशुपति नगर, बंसतविहार, बर्रा ईस्ट दामोदर नगर, बर्रा गांव, कर्रही, जरौली, पहाड़पुर।

मेट्रो ने मार्ग यात्रियों के लिए खोला। अमृत विचार

श्री गुरु सिंह सभा में घमासान, कई का इस्तीफा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। बीते दिनों श्री गुरु तेग बहादुर साहिब के गुरु पूरब समारोह की व्यवस्था को लेकर श्री गुरु सिंह सभा कानपुर महानगर में घमासान मचा है। कई पदाधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया है। हालांकि सभा के प्रधान सिमरजीत सिंह का कहना है कि पदाधिकारियों ने नियमों की अवहेलना की है, इसपर प्रश्न किये जाने पर कुछ पदाधिकारियों ने इस्तीफा दिया है।

श्री गुरु सिंह सभा कानपुर महानगर के उपाध्यक्ष अमरजीत सिंह चड्ढा, सुरेंद्र पाल सिंह रुहानी, मनजीत सिंह चड्ढा, गगनदीप सिंह ने अपने पदों से त्यागपत्र दे दिया है। सभा के महामंत्री गुरविंदर सिंह प्रिंस वासु पहले ही अपना त्यागपत्र सौंप चुके हैं।

इन सभी का आरोप है कि सभा के प्रधान एवं कैशियर ने अपने निजी स्वार्थ के लिए पद का दुरुपयोग किया है। इस संबंध में श्री गुरु सिंह सभा कानपुर महानगर के चेयरमैन एवं पूर्व एमएलसी सरदार कुलदीप सिंह से तमाम प्रयास के बाद भी संपर्क नहीं हो सका।

लंगर में लापरवाही, रागी जत्थों ने की शिकायत

श्री गुरु सिंह सभा कानपुर महानगर के महामंत्री गुरविंदर सिंह प्रिंस वासु मोतीझील में आयोजित शहीदी दिवस के मंच पर जत्थों के साथ बैठे थे जबकि पहले से ही कहा गया था कि मंच पर कमेटी का कोई सदस्य नहीं रहेगा। त्यागपत्र देने वालों पर संगत ने कई आरोप लगाये हैं। जिन लोगों को लंगर की व्यवस्था दी गई थी, उन्होंने लापरवाही की। कुछ लोगों ने सभा को अपना हिसाब भी नहीं दिया है। रागी जतेन्दर पाल सिंह खन्ने वाले ने भी प्रिंस वासु की शिकायत की थी।

सिमरनजीत सिंह, प्रधान, श्री गुरु सिंह सभा कानपुर

कीटनाशक विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों पर मारे छापे

कानपुर। रबी सीजन में गुणवत्तायुक्त कीटनाशकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए जिलेभर में कीटनाशक विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों पर छापेमारी की गई। जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह के निर्देश पर छापेमारी के लिए तीन टीमें गठित की गई थीं जिन्होंने कार्रवाई की।

मंगलवार को उप कृषि निदेशक डॉ. आरएस. वर्मा, जिला कृषि अधिकारी प्राची पाण्डेय तथा प्रभारी कृषि रक्षा अधिकारी आरपी. कुशवाहा द्वारा बाशाही नाका सब्जी मंडी, नर्वल, चौबेपुर, बिल्हौर, घाटमपुर एवं बिल्हौर में 50 से अधिक स्थानों पर छापेमारी की गई और संदिग्ध कीटनाशकों के नमूने लिये गये। चार डीलरों को नोटिस दी गई है। सभी रसायनों के नमूने जांच के लिए विभिन्न प्रयोगशालाओं को भेज दिए गए हैं।

सेंट्रल मेट्रो स्टेशन से सीधे रेलवे स्टेशन तक जा सकेंगे

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- **मेट्रो ने मार्ग यात्रियों के लिए खोला, कॉरिडोर-2 की पहली ट्रेन का अनावरण**

अमृत विचार। मेट्रो स्टेशन से रेलवे स्टेशन पहुंचना अब और भी आसान हो गया है। पहले यहां केवल गेट नंबर 2 संचालित था, जिससे यात्रियों को लंबा घुमावदार रास्ता तय करना पड़ता था। अब गेट नंबर-1 को सीधे रेलवे स्टेशन रैंप से जोड़ दिया गया है, जिससे दोनों गेट यात्रियों के उपयोग में आ गए हैं। मंगलवार को प्रबंध निदेशक सुशील कुमार ने रिबन काटकर इस द्वार को यात्रियों के लिए खोला। प्रबंध निदेशक ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कॉरिडोर-1 और कॉरिडोर-2 के निर्माणाधीन मेट्रो स्टेशनों का निरीक्षण भी किया, साथ ही सीएसए परिसर स्थित कॉरिडोर-2 डिपो में अनलोड की गई कॉरिडोर-2 की पहली मेट्रो ट्रेन का भी अनावरण किया।

कानपुर सेंट्रल मेट्रो स्टेशन घंटाघर चौराहे के समीप स्थित है। इसी स्थान पर अमृत भारत योजना के अंतर्गत सात मंजिला रेलवे स्टेशन भवन का विस्तारकार्य भी प्रगति पर है। मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर-1 को रेलवे मार्ग से जोड़ा गया था। यहां लिफ्ट, सीढ़ी और एस्केलेटर उपलब्ध थे, परंतु एस्केलेटर एवं सीढ़ियां यात्रियों को केवल पहले तल तक ही पहुंचा पाती थीं, जिसके आगे निर्माणाधीन भवन की सीढ़ियों का उपयोग करना पड़ता था। इसके समाधान के लिए गेट नंबर-1 को बंद कर, इसे सीधे स्टेशन मार्ग से जोड़ने के लिए नई सीढ़ी एवं एस्केलेटर का निर्माण किया गया, जो अब पूर्ण होकर उपयोग में आ गया है। गेट नंबर-1 के खुलने से यात्रियों को मेट्रो द्वारा निर्मित सीढ़ियों और एस्केलेटर के माध्यम से सीधे ऊपर रेलवे स्टेशन के रैंप तक पहुंचना संभव हो गया है। लिफ्ट पूर्ववत कार्यरत है।

सफर में बाधा | अमौसी-मानक नगर स्टेशन के मध्य भूमिगत मार्ग निर्माण कार्य करेंगे

लखनऊ रेलमार्ग पर मेगा ब्लाक, कई ट्रेनें रद्द की गईं

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। कानपुर लखनऊ रेल खंड पर लखनऊ के पास अमौसी एवं मानक नगर स्टेशनों के बीच भूमिगत मार्ग का निर्माण कार्य होना है। जिसके लिये बुधवार को प्रातः 9.25 बजे से सायं 5.25 बजे तक मेगा ब्लाक लिया जाएगा जिससे कई ट्रेनें निरस्त रहेंगी जबकि कई ट्रेनों का रूट बदलेगा। ये जानकारी उत्तर मध्य जोन के जनसंपर्क अधिकारी अमित सिंह ने दी।

अचानक बदला गाड़ियों का रूट, यात्री परेशान : मंगलवार को कई गाड़ियों का अचानक रूट बदल दिया गया जिससे यात्री परेशान हुए। गाड़ी संख्या 12103 पुणे-लखनऊ एक्सप्रेस मंगलवार को अपने निर्धारित मार्ग के स्थान पर परिवर्तित मार्ग उन्नाव-माखी-बालमऊ-लखनऊ होकर संचालित की गई। गाड़ी संख्या 15066 पनवेल-गोरखपुर परिवर्तित मार्ग उन्नाव-माखी-बालमऊ-लखनऊ रास्ते से चली। गाड़ी संख्या 12173 लोकमान्य तिलक टर्मिनल – प्रतापगढ़ को परिवर्तित मार्ग उन्नाव-माखी-बालमऊ-लखनऊ रास्ते से संचालित किया गया। गाड़ी संख्या 11124 बरौनी-ग्वालियर परिवर्तित मार्ग लखनऊ-आलमनगर-बालामऊ-माखी-उन्नाव रास्ते से चलाई गई। इस दौरान इस गाड़ी को लखनऊ स्टेशन पर ठहराव नहीं दिया गया।

ये गाड़ियां आज निरस्त रहेंगी

- गाड़ी संख्या 11109 वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी- लखनऊ एक्सप्रेस रद्द रहेगी।
- गाड़ी संख्या 11110 लखनऊ-वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी एक्सप्रेस रद्द रहेगी।
- गाड़ी संख्या 51813 वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी-लखनऊ रद्द रहेगी।
- गाड़ी संख्या 51814 लखनऊ-वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी रद्द रहेगी।

आज इस गाड़ी का रूट बदला रहेगा

- गाड़ी संख्या 12589 गोरखपुर-चर्लापल्ली परिवर्तित मार्ग ऐशबाग-लखनऊ जंक्शन,आलमनगर, बालामऊ-माखी-उन्नाव-कानपुर सेंट्रल स्टेशन होते हुए चलेगी लेकिन लखनऊ स्टेशन पर इसका ठहराव नहीं रहेगा।

आज ये गाड़ियां देर से चलेंगी

- गाड़ी संख्या 12104 लखनऊ-पुणे एक्सप्रेस 90 मिनट देरी से संचालित की जाएगी।
- गाड़ी संख्या 15067 गोरखपुर –बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 145 मिनट देरी से संचालित की जाएगी।

www.amritvichar.com
पर भी खबरें पढ़ें

रीवा एक्सप्रेस में आग की सूचना से अफरातफरी

- कानपुर। कानपुर सेंट्रल पर उस वक्त हड़कंप मच गया जब रीवा एक्सप्रेस में आग लगने की सूचना प्राप्त हुई। मंगलवार को रीवा एक्सप्रेस कानपुर सेंट्रल स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 3 पर आई। इस दौरान किसी यात्री ने साधारण कोच में सिगरेट जलाई और उसका ढेर सारा धुआं छोड़ा जो पूरे डिब्बे में फैल गया। धुआं देख एक यात्री ने शोर मचा दिया कि डिब्बे में आग लग गई है जिससे अफरातफरी मच गई और यात्री डिब्बे से बाहर निकल आए। घटना की जानकारी मिलते ही जीआरपी प्रभारी ओम नारायण सिंह एवं आरपीएफ प्रभारी एसएन पाटीदार की अगुवाई में टीम मौके पर पहुंची। इस दौरान सिगरेट पीने वाला यात्री फरार हो गया।

सिटी ब्रीफ

श्री प्रकाश के आवास पर शांति पाठ आज

कानपुर। पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल का निधन दिनांक 28 नवंबर को हो गया था। उनके पुत्र सिद्धार्थ जायसवाल ने बताया कि पिता की आत्मा की शांति के लिए बुधवार 3 दिसंबर को उनके निवास पोखरपुर में हवन एवं शांति पाठ होगा। उन्होंने बताया कि मंगलवार को समाजवादी प्रमुख पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के मित्र रौनक टण्डन उनके आवास पर श्रद्धांजलि देने के लिए पहुंचे और अखिलेश यादव से फोन पर बात कराई। पूर्व सीएम ने पुराने दिनों की याद ताजा करते हुए बताया कि जून 2012 में जब श्रीप्रकाश जायसवाल कोयला मंत्री थे तब उन्होंने और श्री जायसवाल ने मिलकर घाटमपुर स्थित निवेली लिगनाइट के 1980 मेगावॉट पावर प्लान्ट की संयुक्त रूप से नींव रखी थी। अखिलेश ने कहा कि वह जल्द ही सिद्धार्थ से मिलने कानपुर आएंगे।

लोकतंत्र सेनानी का निधन

कानपुर। यशोदानगर के-ब्लाक में लंबी बीमारी के चलते सोमवार देर रात घर पर 75 वर्षीय लोकतंत्र सेनानी नर्वदेश्वर प्रसाद दुबे का निधन हो गया। नर्वदेश्वर प्रसाद दुबे के परिवार में तीन बेटे शिवम, सत्यम और शुभम हैं। सोमवार देर रात अचानक उनकी हालत बिगड़ने के बाद 3.30 बजे उनका निधन हो गया। एसीएम प्रथम भगत सिंह और नौबस्ता थाना प्रभारी बहादुर सिंह ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। तिरंगे में लिपटे उनके पार्थिव शरीर को लेकर परिजन सिद्धनाथ घाट पहुंचे, जहां गार्ड गार्ड ऑफ ऑनर के बीच बेटे शिवम ने मुख्याग्नि दी।

शोहदे से डरी छात्रा ने स्कूल जाना छोड़ा

कानपुर। हनुमंत विहार में शोहदे की हरकतों से परेशान 11वीं की छात्रा ने स्कूल जाना छोड़ दिया। छात्रा की मां ने शोहदे के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। छात्रा की मां के अनुसार इलाके में रहने वाला आकाश गुप्ता आपराधिक प्रवृत्ति का है। जो बेटी के स्कूल आते-जाते समय उसे परेशान करता है। उन्होंने घर पर सीसीटीवी कैमरे लगवा लिए। फिर भी हरकतों से बाज नहीं आया। छह नवंबर को बेटी भाई के साथ लौट रही थी, तभी आरोपी ने रास्ते में रोक लिया और छेड़छाड़ की। बेटे ने विरोध किया तो पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी। हनुमंत विहार थानाध्यक्ष राजीव कुमार सिंह ने बताया कि आरोपी की तलाश की जा रही है।

हंसते हुए मरूंगा, क्योंकि जीते जी मैं रोया बहुत हूं...

कल्याणपुर संवाददाता

अमृत विचार। रुतबा तो मरने के बाद भी रहेगा, देखना जब मैं मरुंगा तो हंसते हुए मरूंगा, क्योंकि जीते जी मैं रोया बहुत हूं। फेसबुक पर स्टोरी लगाकर 2018 बैच के सिपाही ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सिपाही किदवईनगर पीआरवी 1246 में तैनात था, कल्याणपुर के श्यामजीपुरम में रहता था। पुलिस ने जांच-पड़ताल कर शव पोस्टमार्टम भेजा और परिजनों को खबर दी।

मूलरूप से मथुरा के गोवर्धन मढ़ैरा गांव निवासी 30 वर्षीय मान महेंदर पुलिस विभाग में सिपाही थे और मौजूदा तैनाती किदवईनगर पीआरवी में थी। मान महेंदर कल्याणपुर के श्यामजीपुरम में किराए पर पत्नी व बच्चों के साथ रहते थे। बीती 26 नवंबर को उनकी पत्नी कविता जुड़वा बच्चे तेजस व दीपांशु के साथ एक शादी समारोह में शामिल होने मायके मथुरा के नरौली तारसी गांव गई थीं। तब से वह अकेले रह रहे थे। कल्याणपुर पुलिस ने बताया कि मान 2018 बैच के सिपाही थे। आठ माह पूर्व श्यामजीपुरम निवासी पूर्व ब्लाक प्रमुख अजय यादव के मकान में मान परिवार समेत रहने आए थे। सोमवार देर रात कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मंगलवार सुबह मकान की पहली मंजिल पर रहने वाले दरोगा इतेंद्र पाल ने हेलमेट लेने के लिए जब सिपाही के कमरे का दरवाजा खटखटाया तो कोई जवाब न मिलने पर उन्होंने मामले की जानकारी पुलिस को दी। सूचना पर कल्याणपुर थाना प्रभारी राजेंद्र कांत शुक्ला फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। दरवाजा तोड़कर अंदर पहुंचे तो शव लटकता पाया। थाना प्रभारी ने बताया कि परिजनों को सूचना दी गई है।

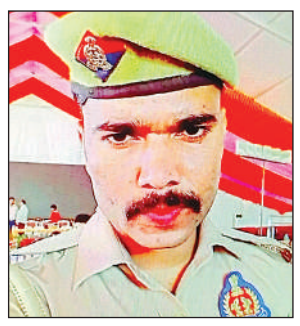

मान महेंदर। अमृत विचार

27 नवंबर को हुई बच्चों से आखिरी बार बात

- पुलिस के अनुसार 29 नवंबर को शादी समारोह में मान की पत्नी व बच्चों को शामिल होना था। यहां से 26 नवंबर को निकलने के बाद मान की 27 नवंबर को आखिरी बार बच्चों से बात हुई थी। हालांकि परिजनों से पता चला कि सिपाही ने पत्नी से बात नहीं की थी।

कुछ दिनों से मानसिक तनाव में था सिपाही

- रावतपुर थाने में करीब दो साल तैनात सिपाही का बीती 13 जून को पीआरवी में स्थानांतरण हुआ था। साथ में काम कर चुके पुलिस कर्मियों के अनुसार मान महेंदर खुश मिजाज था। लेकिन इधर कुछ दिनों से वह मानसिक परेशान रह रहा था। कारण पूछने पर बात को टाल जाता था।

मरने से पहले फेसबुक पर दो स्टोरी लगाईं

- रुतबा तो मरने के बाद भी रहेगा, लोग पैदल चलेंगे, हम कंधों पर, देखना जब मैं मरूंगा तो हंसते हुए मरूंगा, क्योंकि जीतेजी मैं रोया बहुत हूं। यह दोनों वीडियो सिपाही ने मंगलवार भोर पहर 3.42 बजे अपने फेसबुक अकाउंट पर अपलोड की है। वीडियो देखने से लगता है कि दोनों पहले के बने हैं।

संदिग्ध हालात में किशोरी ने फांसी लगाकर दी जान

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- नर्वल के हृदयखेड़ा गांव में हुई घटना, परिजन रिश्तेदार के घर गए हुए थे

अमृत विचार। नर्वल में संदिग्ध हालात में किशोरी ने फांसी लगाकर जान दे दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच-पड़ताल की और शव पोस्टमार्टम भेजा। परिजनों ने बताया की किशोरी ने यह कदम क्यों उठाया, इसकी वजह स्पष्ट नहीं है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

हृदयखेड़ा गांव निवासी किसान राम किशोर यादव उर्फ ननकइया खेती किसानी करते हैं। परिवार में पत्नी सरिता, 16 वर्षीय बेटी सुमन व बेटा नीशू है। पिता ने बताया कि सुमन की बड़ी बहन शादीशुदा है। परिजनों ने बताया कि बीते सोमवार की शाम को परिवार के लोग रिश्तेदार के यहां जन्मदिन समारोह में शामिल होने गए थे। घर पर सुमन अकेली थी। इस पर मौका पाकर उसने दुपट्टे से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। रात को जब परिजन घर लौटे तो उन्हें दरवाजा अंदर से बंद मिला। खिड़की से झांककर देखा तो सुमन का शव फंदे से लटकता मिला। इस पर परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने दरवाजा तोड़कर शव को नीचे उतारा। थाना प्रभारी अखिलेश कुमार पाल ने बताया कि किशोरी के आत्महत्या की वजह स्पष्ट नहीं है।

दरवाजा खोलने के लिए मां को आवाज दे रहा था युवक, तभी पड़ोसी ने बेदम किया

बुजुर्ग-लाचार मां के सामने बेटे की पीट-पीटकर हत्या

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। चकेरी में बुजुर्ग मां के सामने बेटे को खींचकर पड़ोसी ने लाठियों से पीटा और बेदम अवस्था में छोड़कर भाग निकला। उठने-बैठने को लाचार मां चीखती रही। आरोपी के जाने पर किसी तरह सड़क से उठाकर बेटे को कमरे में लाई। पैसों के अभाव में इलाज भी नहीं करा सकी। पिटाई से युवक रातभर कराहता रहा। हाथ-पैर फूल गए। अगले दिन तड़पते हुए देर शाम को दम तोड़ दिया। थाने पहुंची मां ने पुलिस से मारपीट की शिकायत की, सूचना पर पुलिस ने शव पोस्टमार्टम भेजा व जांच शुरू की है।

मूलरूप से बिहार दरभंगा के नेहरा गांव निवासी संतोष कुमार चौधरी की पत्नी माधुरी व दो बेटे हैं। जिसमें एक बेटा 27 वर्षीय भरत कुमार चकेरी के टटियन झनाका मोहल्ले में किराए पर मां के साथ रहता था, जबकि दूसरा रोहित मथुरा में नौकरी करता है। बुजुर्ग माधुरी के अनुसार भरत मजदूरी करता था और वह मांगकर गुजारा करती हैं। उन्होंने बताया कि रविवार रात करीब 11 बजे भरत बाहर से आया और दरवाजा खुलवाने के लिए उन्हें आवाज दे रहा था। कई बार उसने दरवाजा भी पीटा। आवाज सुनकर पड़ोसी कमरे से निकले और उसे गालियां देने लगे। विरोध पर बेटे को खींचकर लाठी से जमकर पीटा। भरत के बेदम होने पर उसे सड़क पर छोड़कर चले गए। वह बेटे की मदद के लिए पहुंची, लेकिन उठा नहीं सकी। कुछ देर बाद खुद ही जमीन पर घिसटते हुए कमरे तक आया। रातभर उसने कराहते हुए गुजारी। सुबह अस्पताल ले जाने के लिए उनके पास सिर्फ 100 रुपये थे। पिटाई से बेटे के हाथ-पैर फूल गए थे, इसलिए वह हिल भी नहीं पा रहा था।

पैसों के अभाव में इलाज भी नहीं हो पाया, किसी से मदद भी नहीं मिली। और दूसरे दिन शाम करीब छह बजे भरत की मौत हो गई। वृद्धा माधुरी के अनुसार उन्होंने थाने पहुंचकर पुलिस से मारपीट की शिकायत की। मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच के बाद शव पोस्टमार्टम भिजवाया। माधुरी ने बताया कि वह बेटे की पिटाई करने वाले का नाम नहीं जानती, लेकिन एक घर छोड़कर उसका मकान है। यह जानकारी पुलिस को दी है। रामादेवी चौकी प्रभारी कुलदीप सिंह ने बताया कि अगर तहरीर मिली तो कार्रवाई होगी। शव का अंतिम संस्कार कराया गया है।

भरत की मां माधुरी चौधरी। अमृत विचार

- रुपयों के अभाव में मां नहीं करा सकी इलाज, तड़पकर बेटे ने घर में ही तोड़ा दम

साहब हमें शव नहीं ले जाना, पैसे नहीं हैं

- बुजुर्ग माधुरी पोस्टमार्टम हाउस पर बिलखती रहीं, लेकिन जब पुलिस ने शव ले जाने के लिए पूछा तो कहा कि हमें नहीं ले जाना। हमारे पास पैसे नहीं है। अंतिम संस्कार से पहले शव वाहन के लिए भी पैसे नहीं हैं। इसलिए बेटे का इलाज भी नहीं करा पाए। इस पर पुलिस ने मदद की और पोस्टमार्टम पर लावारिस शवों का अंतिम संस्कार कराने वालों से ही शव दफनवा दिया।

जोर-जोर चिल्लाने पर बेटे को पीटा

- भरत की मां माधुरी ने बताया कि बेटा रविवार रात शराब पीकर आया था। इसलिए उसने दरवाजा जोर से खटखटाया और आवाज भी चिल्लाकर दी। बस इसी बात पर पड़ोसी ने गालियां दी और पीटना शुरू कर दिया। पड़ोसी को पता था कि हमारी मदद के लिए कोई नहीं है। इसलिए जरा सी बात पर बेटे को पीटकर मार डाला।

फर्जी कागजात से प्लाट पर कब्जा तीन गिरफ्तार

कल्याणपुर संवाददाता। दबंगों ने फर्जी दस्तावेजों के सहारे सोसाइटी के प्लाट पर कब्जा कर लिया। पुलिस ने तीनों आरोपियों को जेल भेजा है। नोएडा सेक्टर 54 निवासी विकास सचदेवा के अनुसार मकड़ीखेड़ा की एक सोसाइटी में उनके दो प्लाट हैं। जिसपर इलाके के दबंग सुमित गुप्ता ने अतिक्रमण कर कब्जा कर लिया था। 2017 में केडीए ने मामले की जांच कर उनके हक में फैसला कर अतिक्रमण गिरवाया। वर्तमान में जब वह अपने प्लॉट पर निर्माण कार्य करने पहुंचे, तो दबंग सुमित गुप्ता व अमित गुप्ता ने उन्हें धमकाना शुरू कर दिया। उनपर कम दाम में प्लाट बेचने या फिर 50 लाख की रंगदारी देने की मांग की। दबंगों ने कूटरचित दस्तावेज तैयार कर भूमि का फर्जी सेल एग्रीमेंट शक्ति इफ्रा विजन प्राइवेट लिमटेड के नाम पर कर दिया। फर्जीवाड़े को सुमित व अमित गुप्ता ने गिरजा शंकर मिश्रा, राघवेंद्र प्रताप, भानु प्रताप सिंह, श्रीनाथ अग्रवाल व विमला अग्रवाल के साथ अंजाम दिया था। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी गिरजा शंकर मिश्रा, राघवेंद्र प्रताप यादव व भानु प्रताप सिंह को जेल भेजा है।

खाद्य तेल का आर्डर लेकर टैंकर में पानी भरवाकर भेजा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- फेसबुक पर विज्ञापन देख जूही के कारोबारी ने 35 टन तेल का दिया था आर्डर

अमृत विचार। जूही में फेसबुक पर विज्ञापन देखकर कारोबारी ने 35 टन खाद्य तेल का सौदा तय किया। शातिरों के झांसे में आए कारोबारी को शातिरों ने फर्जी भार कांटा पर्ची और ई-वे बिल भेजकर माल के 34 लाख का भुगतान करा लिया। चौंकाने वाली बात सामने तब आई जब शातिरों ने माल की जगह पानी भेज दिया। पीड़ित ने आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है।

यशोदानगर के पी ब्लॉक निवासी अनिल कुमार दीक्षित खाद्य तेलों का काराबोर करते हैं। वह नवग्रह एडिबल ऑयल्स के प्रबंधक हैं, जबकि फर्म के प्रोप्राइटर शिवम खंडेलवाल हैं। अनिल कुमार ने थाने में दिए शिकायती पत्र में बताया कि शिवम का जून माह में सोशल मीडिया के माध्यम से जूही निवासी नितिन, सुरेश अदुकिया से संपर्क हुआ। उसने बताया कि वह अखाद्य तेल आदि का व्यापार कमीशन एजेंट के रूप में करता है। वह दक्षिण भारत से फैटी एसिड व अखाद्य तेल के सप्लायरों को जानते हैं। अच्छे और गुणवत्तापूर्ण माल दिलाने की भी बात कही। दावा किया कि वह बाजार भाव से कम रेट पर माल दिला सकते हैं। इसके बाद मदुरै तमिलनाडु निवासी महेंद्र विनो विशाल व कवि से बात कराई। बातचीत में बताया कि कवि फर्म में मैनेजर हैं। महेंद्र व कवि की बात पर यकीन कर शिवम खंडेलवाल ने 92.5 रुपये के हिसाब से 35 टन माल का आर्डर नितिन, सुरेश अदुकिया को दिया। इसके बाद माल लेने चालक पीरा राम को टैंकर लेकर कानपुर से भेजा। अनिल के अनुसार 29 अक्टूबर को शातिरों ने फोन करके बताया कि टैंकर लोड हो गया है और भुगमान कर दें। 31 अक्टूबर को आरोपियों के बताए खाते में करीब 34 लाख का भुगतान कर दिया। इसके बाद फर्जी बिल व कूटरचित कांटा पर्ची उनके व्हाट्सएप पर भेजी गई। बाद में चालक ने बताया कि कांटा पर्ची फर्जी भेजी गई है। उसने अलग से माल का भार कराया तो करीब 24 टन माल निकला। चालक ने माल की जांच कराई तो वह पानी निकला। जूही थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर तलाश की जा रही है।

घर में घुसकर पांच लाख रंगदारी मांगी

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। महाराजपुर निवासी व्यापारी आनंद कुमार गुप्ता ने तीन नामजद व 5 अन्य के खिलाफ किदवईनगर में रिपोर्ट दर्ज कराई है। आरोपियों पर पांच लाख रुपये रंगदारी मांगने और प्लाट पर कब्जाने की कोशिश का आरोप लगाया है।

आनंद के अनुसार किदवईनगर के-ब्लॉक स्थित मकान पर 25 अक्टूबर को एग्रीमेंट कर कब्जा प्राप्त किया था। बाद में सभी वारिसों से रजिस्ट्री कराकर नगर निगम, जल निगम और विद्युत विभाग के अभिलेख भी अपने नाम करा लिए थे। आरोप है कि बीते दिनों कुसुम सक्सेना, प्रतिमा शुक्ला, सुनीता अवस्थी और 4-5 अन्य उनके घर में घुस आए और अभद्रता की। आरोपियों में दो लोग वकीलों की वेशभूषा में थे। लोगों ने उन्हें धमकाते हुए पांच लाख रुपये की रंगदारी मांगी। कहा कि रुपये न देने पर झूठे मुकदमे जेल भिजवा देंगे। किदवईनगर थाना प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर जांच की जा रही है।

बाइक सवारों ने मोबाइल लूटा

- कानपुर। चकेरी में जेके कॉलोनी चौराहा पर बाइक सवार लुटेरों ने सड़क किनारे खड़े युवक के हाथ में झपट्टा मारकर मोबाइल लूट लिया और भाग निकले। पीड़ित ने रिपोर्ट दर्ज कराई है। लाल बंगला काजीखेड़ा निवासी अंजुल दीक्षित ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि बीती 29 नवंबर की रात करीब आठ बजे वह जेके चौराहा पर सड़क किनारे खड़े थे। तभी जाजमऊ की तरफ से आए बाइक सवार दो युवकों ने उनके हाथ में झपट्टा मारकर मोबाइल लूट लिया और हरजिंदरनगर चौराहा की ओर से तरफ निकले। उन्होंने चकेरी थाने में शिकायत की। कार्यवाहक थाना प्रभारी रिजवान खान ने बताया कि लूट की रिपोर्ट दर्ज कर सीसीटवी फुटेज खंगाला जा रहा है। आरोपियों की तलाश की जा रही है।

शादी से लौटे घरवालों को मृत मिला बेटा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। जूही में शादी समारोह से लौटे परिजनों को बेटा कमरे में मृत मिला। पुलिस ने जांच-पड़ताल की और शव पोस्टमार्टम भेजा। परिजनों ने बताया कि शादी के कई साल बाद बच्चे न होने से शराब पीने लगा था। आशंका जताई कि अधिक शराब के सेवन से उसकी जान गई है।

परमपुरवा के रानी कुवर मंदिर के पास रहने वाला 45 वर्षीय रामचंद्र प्राइवेट नौकरी करता था। परिवार में मां नीलम देवी, पत्नी शशि देवी और एक छोटा भाई जयचंद्र हैं। भाई ने बताया कि छह-सात साल पहले रामचंद्र की शादी हुई थी। शादी के कई साल बाद बच्चे न होने का उसे दुख था। इलाज से भी लाभ नहीं हुआ। तनाव में वह शराब पीने लगा था। दो दिन पहले रविवार को वह लोग रिश्तेदार के यहां शादी समारोह में गए थे। घर पर अकेला रामचंद्र ही था। सोमवार रात परिजनों संग लौटे तो उसे कमरे में मृत पाया। पड़ोसियों ने बताया कि सोमवार दिनभर उसे किसी ने नहीं देखा। घरवालों ने आशंका जताई कि उसकी रविवार रात को ही मौत हो गई थी।

कार सवारों ने अगवाकर पीटा, लूटा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- पीड़ित युवक ने पुलिस से शिकायत कर लूट की रिपोर्ट दर्ज कराई

अमृत विचार। चकेरी में ओवरब्रिज पर कार सवार चार लोगों ने बाइक में टक्कर मारकर युवक को टक्कर पर गिरा दिया। इसके बाद आरोपियों ने उसे अगवाकर रास्ते भर पीटा और लूटने के बाद जंगल में छोड़कर भाग गए। पीड़ित किसी तरह से चकेरी थाने पहुंचकर पुलिस से घटना की शिकायत की। युवक की तहरीर के आधार पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की है।

मूलरूप से फतेहपुर के बिंदकी छिपहाटी भोलानगर निवासी प्रदीप कुमार अनुसार बीती 30 नवंबर को वह किसी काम से कानपुर आए थे। यहां से वह देर रात करीब साढ़े बारह बजे लौट रहे थे। तभी रामादेवी ओवरब्रिज पर पीछे से आए कार सवारों ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। जिससे प्रदीप बाइक समेत सड़क पर गिर गया। इसके बाद युवकों ने उसे खींचकर कार में बैठा लिया और मारते-पीटते हुए कई किमी तक ले गए। इसके बाद चकरपुर मंडी रोड पर कार धीमी हुई।

हाईवे पर एक फाइनेंस कंपनी के कर्मियों ने युवकों की कार रोकी, और किश्तें जमा न होने पर कार को कब्जे में ले लिया। इस पर उसे लोडर में लिफ्ट लेकर रनियां ले गए। जहां उनका मोबाइल, दस हजार रुपये, दो अंगूठी व चेन लेने के बाद जंगल में छोड़कर चारों भाग निकले।

वहां किसी तरह से लिफ्ट लेकर चकेरी थाने पहुंचे पीड़ित ने पुलिस से शिकायत की। पीड़ित ने बताया कि कार में वह एक दूसरे का नाम भी ले रहे थे। जिनके नाम सोनू, निखिल व विशाल हैं। तीनों के अलावा एक अन्य व्यक्ति भी था। कार्यवाहक थाना प्रभारी रिजवान खान ने बताया कि पीड़ित की तहरीर पर डकैती, अगवा कर मारपीट करने की धारा में रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश की जा रही है।

24 घंटे में सरकारी नाली व चकमार्ग से हटा कब्जा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- जनता दर्शन में आवाज उठी तो नर्वल उपजिलाधिकारी मौके पर पहुंचे
- पीड़ित ने जिलाधिकारी से लगाई थी गुहार, टीम ने त्वरित कार्रवाई की

अमृत विचार। नर्वल में दशकों पुराने एक विवाद को जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने 24 घंटे के अंदर सुलझा दिया। सोमवार को जनता दर्शन में सरकारी नाली और चकमार्ग पर अवैध कब्जे की शिकायत मिली। जिलाधिकारी ने जांच कराई तो मामला सही पाया गया। जिलाधिकारी ने 24 घंटे के अंदर सरकारी नाली और चकमार्ग को अवैध कब्जे से मुक्त करा दिया।

नर्वल स्थित ग्राम सवायजपुर निवासी रामबालक कुशवाहा ने जनता दर्शन में जिलाधिकारी से मामले की शिकायत की थी। पीड़ित ने बताया कि उसके खेत के दक्षिण में आराजी संख्या 1185 सरकारी नाली और आराजी संख्या 1186 सरकारी चकमार्ग स्थित है जिसे काश्तकार राजा सिंह उर्फ राम सिंह ने अपने खेत में मिला लिया था। विरोध करने पर झगड़ा और गाली-गलौज की स्थिति बनी। इस प्रकरण में वर्ष 2020 में तहसील न्यायालय से धारा 67 के तहत कब्जा हटाने का आदेश भी पारित हुआ था लेकिन कब्जा नहीं हटा।

जिलाधिकारी के निर्देश पर उपजिलाधिकारी नर्वल विवेक कुमार मिश्रा द्वारा राजस्व विभाग, विकास विभाग और पुलिस विभाग की संयुक्त टीम गठित कर मौके पर कार्रवाई कराई गई।

विशेष खबर

आए दिन स्लीपर बसों में आग की घटनाओं ने सरकार को झकझोरा

अब स्लीपर बसों की जांच करेगी विशेष टेक्निकल टीम

जमीर सिद्दीकी, कानपुर

अमृत विचार। आए दिन स्लीपर बसों में लगने वाली आग पर सरकार ने सख्त कदम उठाए हैं। कानपुर समेत सभी जिलों को शासन ने दिशा निर्देश जारी किया है कि सभी स्लीपर बसों की बारीकी से टेक्नीकल जांच करें।

मंगलवार सुबह बलरामपुर में एक ट्रक से टक्कर के बाद स्लीपर बस में फिर भीषण आग लगी जिसमें 3 यात्रियों की जलकर मौत हो गयी जबकि 24 से अधिक यात्री बुरी तरह झुलस गये। इस खबर ने प्रदेश सरकार को झकझोर दिया है। अब शासन स्तर पर कानपुर समेत सभी संभागीय परिवहन अधिकारियों को परिवहन आयुक्त ने आदेश जारी किया है कि टेक्निकल विशेषज्ञों की टीम द्वारा सभी स्लीपर बसों की टेक्निकल जांच कराई जाए। इसी के साथ ही स्लीपर बसें निर्मित करने वाली कंपनियों के अधिकारियों के साथ बैठक करके बसों की कमियों को दूर करने के लिए कहा गया है।

स्लीपर बसें दौड़ा रहे अनाड़ी चालक : प्राइवेट स्लीपर बसें 5000 किमी तक सफर तय कर रही हैं। इन बसों में सभी प्रकार की सुविधाएं होती हैं लेकिन चालक इन आधुनिक बसों को चलाने में कितने सक्षम हैं, ये कोई नहीं जानता। एक डग्गामार बस चालक भी स्लीपर बस चलाने लगता है। ऐसे चालकों की कोई ट्रेनिंग तक नहीं होती। चालकों को यही नहीं पता होता कि बस में कौन सी स्विच किस काम के लिए है। ऐसे चालक सस्ते मिल जाते हैं। इसलिए स्लीपर बसों को अनाड़ी चालक दौड़ा रहे हैं।

तीन दिन पहले रामादेवी में लगी थी बस में आग। अमृत विचार

स्लीपर बसों में क्यों हो रहे हादसे

- बसों का ज्यादा सुंदरीकरण और मॉडीफाई कराना जिससे बस में तारों का जाल फैल जाता है बसों में
- आपातकाल द्वार के बजाय वाल्वो बसों मे लंबा शीशा लगा देना।
- बसों और एसी का नियमित मेंटीनेंस नहीं होना।
- बस में अधिक लोड होने के कारण टेंपरेचर बढ़ जाता है जिससे तारों में शार्ट सर्किट हो रहा है।
- क्षमता से अधिक माल लोड करना, यात्री भी ज्यादा बिठा लेना।
- बस बिल्डर्स द्वारा बसों में क्वालिटी वाली सामग्री के बजाय पैसे बचाने के लिए हल्का सामान लगाना।
- बसों को खूबसूरत बनाने के लिए फोम, ज्वलनशील पदार्थों का इस्तेमाल ज्यादा करना।
- यातायात मानक को दरकिनार करके बस को सजाना, बाडी अपने हिसाब से बनवाना।

कानपुर से संचालित सभी स्लीपर बसों की टेक्निकल जांच के लिए टीम गठित कर दी गई है। बसों में यातायात नियमों का पालन हो रहा है या नहीं, इसकी भी जांच होगी। बीते शुक्रवार को रामादेवी में दिल्ली से वाराणसी जा रही स्लीपर बसें में भीषण आग लगी थी। ये बस एक वर्ष पुरानी थी लेकिन फिर भी आग का शिकार हो गयी। आखिर क्या कारण है, इसकी भी जांच हो रही है।

-राहुल श्रीवास्तव, संभागीय परिवहन अधिकारी प्रवर्तन कानपुर नगर

दो माह में 15 से अधिक घटनाएं, 100 से अधिक मौतें

- अक्टूबर-नवंबर में 15 से अधिक स्लीपर बसों में आग लगने की घटनाएं हुईं जिसमें 100 से अधिक यात्रियों की जान चली गई। मंगलवार को भी बलरामपुर में स्लीपर बस में 3 यात्रियों की जलने से दर्दनाक मौत हो गई जबकि 24 यात्री झुलस गये। आंकड़े बताते हैं कि 14 से 28 अक्टूबर तक देश के विभिन्न क्षेत्रों में 5 बड़ी घटनाएं हुई जिसमें 50 से अधिक यात्रियों की जान चली गई। राजस्थान के मनोहरपुर में डबल डेकर बस हाईटेंशन की चपेट में आ गई जिससे 2 लोगों की मौत हो गयी। इस बस में छत के ऊपर गैस सिलेंडर व कई ज्वलनशील पदार्थ रखा था जो हाईटेंशन लाइन से छू गया। इसी प्रकार बीते माह दिल्ली से बिहार जा रही स्लीपर बस में आगरा एक्सप्रेस-वे पर आग लगी थी जिसमें 23 लोगों की मौत हो गयी। शुक्रवार को भी रामादेवी में वाराणसी जा रही स्लीपर बस धू-धू करके जल गई।

www.amritvichar.com पर भी खबरें पढ़ें

अमृत विचार

www.amritvichar.com

सिटी ब्रीफ

ओ लेवल एवं सीसीसी प्रशिक्षण

कानपुर। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी बीरपाल का कहना है कि बेरोजगार युवक एवं युवतियां https://obccomputertraining.upsdc.gov.in पर ओ लेवल एवं 'सीसीसी' कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए 4 दिसंबर 2025 तक ऑनलाइन आवेदन करें। ऑनलाइन भरे गए आवेदन पत्र की दो हस्ताक्षरित हार्डकॉपी संलग्नकों सहित (आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, हाई स्कूल एवं इंटरमीडिएट की अंकतालिकाओं की प्रतियां) दिनांक 04 दिसम्बर, 2025 तक कार्यालय, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, विकास भवन, कक्ष संख्या-09, कानपुर नगर में उपलब्ध कराएं।

कोहरे में फंसी फ्लाइट नहीं आए अजय राय

कानपुर। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल के आवास पोखरपुर श्रद्धांजिल देने आना था लेकिन उनकी फ्लाइट दिल्ली में ही कोहरे के कारण लेट हो गयी। जिससे वह कानपुर नहीं आ सके।

हुसैन दिवस 7 दिसंबर को, इराक से मौलाना आएंगे

कानपुर। हुसैनी फेडरेशन के द्वारा 7 दिसंबर को परेड ग्राउंड पर हुसैन दिवस मनाया जाएगा जिसमें देशभर के उलेमा एवं शोरा शिरकत करेंगे। शिया धार्मिक गुरु मौलाना अली नकी जैदी (करबला, इराक), मौलाना अली नईम हसन साहब (नजफ, इराक) भी शिरकत करेंगे। ।मीडिया प्रभारी डॉ. जुल्फिकार अली रिजवी ने जानकारी दी।

बर्रा में फिर से खोदाई लगा जाम

कानपुर। बर्रा दो में जल निगम ने पानी की लाइन की मरम्मत के लिए खोदाई शुरू कर दी है। इस वजह से जाम की स्थिति बन रही है। इससे लोग परेशान हो रहे हैं। वहीं, विभाग के अधिकारियों का दावा है कि लीकेज मरम्मत में अभी दो दिन का समय लगेगा। बर्रा दो से सचान चौराहा की तरफ जाने वाली सड़क में सामने सड़क पर पिछले 10 दिनों से पानी की लाइन में लीकेज था। इस वजह से दिनरात पानी बह रहा था। इस वजह से सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे हो गए थे। इस सड़क से निकलना भी मुश्किल हो गया था। कई बार तो ई-रिक्शा पलट चुके हैं।

गड़बड़ी पर नहीं, मामला सुलटाने पर सबका ध्यान

विशेष संवाददाता, कानपुर

- मंगल भवन मामले पर सांसद रमेश अवस्थी और महापौर प्रमिला पांडे के बीच तनातनी का मामला
- प्रदेश और राष्ट्रीय नेतृत्व तक पहुंच गया मामला, सियासी गलियारे में मुद्दा गरम

अमृत विचार। मंगल भवन को लेकर महानगर के सांसद रमेश अवस्थी और महापौर प्रमिला पांडे के बीच तनातनी से भाजपा नेतृत्व चिंतित है। मामला प्रदेश और राष्ट्रीय नेतृत्व तक पहुंच गया है और अब पैचअप की कोशिश हो रही है।

बृजेंद्र स्वरूप पार्क ग्राउंड पर नवनिर्मित मंगल भवन के उद्घाटन के पहले ही सांसद रमेश अवस्थी ने निर्माण में अनियमितता का आरोप लगाते हुए इसकी जांच की मांग की थी। विवाद तब बढ़ गया, जब रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के सामने रमेश अवस्थी और प्रमिला पांडे में बहस हो गई। सांसद देवेंद्र सिंह भोले ने भी मंगल भवन के लिए जमीन आवंटन और निर्माण पर सवाल उठाते हुए जांच के लिए शासन और स्थानीय अधिकारियों को चिट्ठी लिख दी। इससे राजनीति और गरमा गई। सूत्र बताते हैं कि मामले में पैचअप की कोशिश हो रही है। महापौर प्रमिला पांडे ने सांसद रमेश अवस्थी को सोशल मीडिया पर जन्मदिन की बधाई दी है। संगठन स्तर पर भी मामला सुल्टाने के प्रयास किए जा रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि रमेश अवस्थी ने दिल्ली में राजनाथ सिंह सहित कुछ नेताओं से भेंट की तो इस मामले की भी चर्चा हुई।

गड़बड़ी पर आवाज जरूर उठेगी

सांसद रमेश अवस्थी का कहना है कि महापौर प्रमिला पांडे से मेरी कोई व्यक्तिगत अदावत तो है नहीं, लेकिन अगर कहीं अनियमितता हुई है तो मामला जरूर उठाऊंगा। मेरी जनता के प्रति जवाबदेही है। रक्षा मंत्री जी के सामने भी मैं शांत था और अभी भी अपनी बात तर्क और विनम्रता से रखता हूं।

सब ठीक हो जाएगा

भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल का कहना है कि बड़ी पार्टी है, ऐसा हो जाता है। सभी की मंशा जनता की भलाई है। दोनों ही समझदार नेता हैं। दोनों से बात कर ली जाएगी। पार्टी की और भी बड़े काम हैं, सब एकजुट हैं। सभी अपना दायित्व निभा रहे हैं।

पारिवारिक मामला है, निपट जाएगा

भाजपा के दक्षिण जिलाध्यक्ष शिवराम सिंह का कहना है कि घटना को लेकर कुछ चिंता तो है, लेकिन बात परिवार के बीच की है। अक्सर ऐसा हो जाता है, दोनों नेताओं के साथ बैठकर बात की जाएगी और पक्का सब ठीक हो जाएगा।

चिंता की बात है, शीघ्र बैठक करेंगे

भाजपा के उत्तर जिलाध्यक्ष अनिल दीक्षित का कहना है कि संगठन की चिंता स्वाभाविक है। सांसद जी अभी पुत्र के विवाह में व्यस्त हैं। शीघ्र ही बैठक करेंगे, जिसमें वे दोनों नेता भी रहेंगे। बैठ कर बातचीत से मामला सुलझा लिया जाएगा।

22 बीएलओ को प्रतिकूल प्रविष्टि, 2 का वेतन कटा

कानपुर। आर्य नगर विधानसभा क्षेत्र में अपर नगर मजिस्ट्रेट (चतुर्थ) द्वारा गणना प्रपत्रों के डिजिटाइजेशन की समीक्षा की गयी। 22 बीएलओ को प्रतिकूल प्रविष्टि दी गई जबकि दो बीएलओ का वेतन काटा गया है।

अपर नगर मजिस्ट्रेट (चतुर्थ) ने बताया कि भाग संख्या- 195, आयशा सिद्दीकी गर्ल्स इंटर कालेज पर कार्यरत सहायक अध्यापिका शाइस्ता परवीन बीएलओ हैं। मंगलवार तक मात्र 41.13 प्रतिशत गणना प्रपत्रों का डिजिटाइजेशन किया गया है जबकि विधानसभा आर्य नगर का औसत डिजिटाइजेशन लगभग 55 प्रतिशत है। बीएलओ के लापरवाही एवं अकर्मण्यता करने के कारण विशेष प्रगाढ पुनरीक्षण का कार्य प्रभावित हुआ है। घोर लापरवाह एवं स्वेच्छाचारी कर्मचारी का वेतन अग्रिम आदेश तक रोकने की प्रबल संतुति की गई।

मरीज देखते डॉ. हेमंत मोहन, डॉ. आरती मोहन। अमृत विचार

मरीजों की जांचकर बांटीं दवाएं

कानपुर। पनकी मंदिर में आयोजित महायज्ञ में आरोग्यधाम की ओर से निःशुल्क होम्योपैथिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटन महामंडलेश्वर जितेंद्र दास ने किया। आरोग्यधाम ग्वालटोली के वरिष्ठ होम्योपैथिक फिजिशियन डॉक्टर हेमंत मोहन व डॉक्टर आरती मोहन ने आरोग्यं संस्थापक स्व. रेवती रमण मोहन की प्रेरणा से लोगों के स्वास्थ्य की जांच की। 1350 मरीज को दवाएं दी गईं। डॉक्टर आरती मोहन ने कहा कि महिलाओं से संबंधित बांझपन गर्भाशय में ट्यूमर, ओवरी में गांठ की वजह से भी हो रहा है। इस अवसर पर उमा शर्मा, महेश मिश्रा, सत्यम शुक्ला, श्रीस शुक्ला, दिलीप यादव, शोभित बाजपेई, अंकित शुक्ला, अनीता मिश्रा, आरएन खन्ना, राजीव तिवारी, रामकिशन, अशोक मोहन, शुभम शर्मा, पवन गुप्ता, नितेश द्विवेदी, ओम द्विवेदी, पूजा सिंह आदि उपस्थित रहे।

आरटीई कोटा से 1629 स्कूलों में 16000 प्रवेश

निजी स्कूलों में गरीब बच्चों के लिए 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

5000 रुपये सरकार देगी फीस, ड्रेस व कापी-किताबों के लिए भी

अमृत विचार। कानपुर के 1629 निजी स्कूलों में गरीब बच्चों के लिए राइट टू एजुकेशन (आरटीई) कोटे से 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित की गई हैं। प्रवेश भी शुरू हो चुके हैं। बच्चों की फीस और अभिभावकों को बच्चों की कापी किताब व ड्रेस के लिए 5000 रुपये भी देगी, ये रकम अभिभावकों के बैंक एकाउंट में भेजी जाएगी। बच्चों का चयन ऑनलाइन आवेदन और लॉटरी से चयन होगा। अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों को इस अधिनियम की परिधि से बाहर रखा गया है।

मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में शिक्षा अधिकारियों के साथ बैठक हुई। बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के तहत शैक्षणिक सत्र 2026-27 में होने वाले दाखिले की तैयारियों को लेकर समीक्षा की गई जिसमें पाया गया कि जनपद में राइट टू एजुकेशन पोर्टल पर 1629 विद्यालय दर्ज हैं। जिन विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था है, वहां यह 25 प्रतिशत आरक्षण व्यवस्था प्रारंभिक कक्षा से ही लागू होगी। इन बच्चों को कक्षा आठ तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जाएगी। अगर कोई स्कूल ऐसे बच्चों से फीस लेगा तो स्कूल से फीस की वसूली होगी। समीक्षा बैठक में मुख्य विकास अधिकारी दीक्षा जैन, डीआईओएस संतोष राय, बीएसए सुरजीत कुमार सिंह सहित कई शिक्षा अधिकारी मौजूद रहे।

इन बच्चों को प्रवेश में मिलेगा लाभ

- अलाभित समूह में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़ा वर्ग, नि:शक्त बच्चे, एचआईवी या कैंसर पीड़ित माता-पिता के बच्चे तथा निराश्रित बेघर बच्चे शामिल होंगे। इस वर्ग के लिए आय की कोई सीमा तय नहीं की गई है। दुर्बल वर्ग में वे बच्चे शामिल होंगे जिनके माता-पिता या संरक्षक अंत्योदय कार्ड धारक हों, दिव्यांग पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन या विधवा पेंशन प्राप्त करते हों तथा जिनकी वार्षिक आय एक लाख रुपये तक हो।

ग्रामीण-शहरी क्षेत्रों में सीटों का पूरा ब्योरा

- इन विद्यालयों में शिक्षा के अधिकार अधिनियम के अंतर्गत दुर्बल एवं अलाभित समूह के बच्चों के लिए कुल 16,160 सीटें आरक्षित रखी गई हैं इनमें ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 3825 और शहरी क्षेत्रों के लिए 12,335 सीटें शामिल हैं। कानपुर नगर में कक्षा एक में 8,419 और प्री-प्राइमरी में 7,741 सीटें आरक्षित रहेंगी।

छात्राओं ने नृत्य किया। अमृत विचार

विद्यार्थियों ने रामायण व कृष्ण लीला से किया मंत्रमुग्ध

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- आक्सफोर्ड की छात्र-छात्राओं ने बिखेरा जलवा

अमृत विचार। मोतीझील स्थित लाजपत भवन में मंगलवार को टीपी नगर ऑक्सफोर्ड मॉडल कॉन्वेंट की हिन्दी माध्यम शाखा शिशु शिक्षा निकेतन टीपी नगर ने वार्षिकोत्सव समन्वय -2025 का आयोजन किया। महापौर प्रमिला पांडेय ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत की।

विद्यार्थियों ने रामायण, कृष्ण-लीला, बुढ़िया की कहानी, देशभक्ति गीत, नृत्य व नाटक सहित विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। छात्रों-छात्राओं ने उत्साह के साथ सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। विद्यालय प्रबंधक सुरेंद्र नाथ शर्मा ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय की प्रधानाचार्य विमला शर्मा, डायरेक्टर अनमोल शर्मा, अलका श्रीवास्तव, मोनिका शुक्ल, प्रिया श्रीवास्तव, दिव्या, विनीता समेत शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं।

दो सदस्यीय टीम साकेत नगर आएगी

कानपुर। किशोरी वाटिका को जमीन आवंटित करने के मामले में हाईकोर्ट की ओर से गठित दो सदस्यीय टीम बुधवार को साकेत नगर आएगी। इस दौरान केडीए के अधिकारी भी मौजूद रहेंगे। जांच पड़ताल के बाद टीम शासन को रिपोर्ट देगी, इसके बाद हाईकोर्ट में जवाब दाखिल होगा। शासन ने आवास आयुक्त बलकार सिंह और विशेष सचिव आवास एवं शहरी योजना राजेश राय की संयुक्त कमेटी गठित की थी। अब कमेटी के दोनों अधिकारी किशोरी वाटिका से सटे पार्क आएंगे। बृज किशोरी दुबे मेमोरियल स्कूल की जमीन को भी देखने जा सकते हैं।

अमृत विचार

क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं यशी श्रीवास्तव पुत्री करुणा शंकर श्रीवास्तव निवासी ग्राम बेहटा खुर्द पोस्ट भूएमऊ रायबरेली का नाम भारतीय जीवन बीमा निगम में खुशी श्रीवास्तव है। दोनों नाम मेरे ही हैं। मैं उक्त दोनों नाम से जानी और पहचानी जाती हूं।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी पुत्री का सही नाम रुही श्रीवास्तव है, जो कि उसके शैक्षिक अभिलेख पत्र में भी अंकित है। त्रुटिवश सुकन्या समृद्धि योजना के तहत खुले खाता में मौसमी श्रीवास्तव हो गया है, जो कि गलत है। भविष्य में मेरी पुत्री का सही नाम रुही श्रीवास्तव से ही जानी व पहचानी जायेगी। **एकता श्रीवास्तव पत्नी पीयूष श्रीवास्तव, बस्तेपुर रोड, रामजी पुरम, रायबरेली**

सूचना

सूचित हो कि मैं **उमा देवी पत्नी स्व0 श्री राम खिलावन निवासी ग्राम कुर्मी खेडा, खुर्द, कानपुर नगर,** मेरी जन्मतिथि 20/12/1965 है जो कि कुछ प्रपत्रो में गलती से मेरी जन्मतिथि 07/05/1973 दर्ज हो गई है। जबकि मेरी सही जन्मतिथि 20/12/1965 ही माना व दर्ज किया जाय।

सूचना

सूचित हो कि मेरा नाम आधार कार्ड में उदल उर्फ जिया लाल पुत्र कन्हैया लाल अंकित है जबकि बैंक में जिया लाल नाम गलती से दर्ज है उदल उर्फ जिया लाल दोनो एक ही नाम का व्यक्ति है। **उदल उर्फ जिया लाल पुत्र कन्हैया लाल निवासी राम दयाल पुरवा दा0 पैड़ी पोस्ट राम नगर खजुरी पयागपुर जिला बहराइच**

बेदखली सूचना

मेरे बड़े पुत्र राजेश कुमार मौर्य और उसकी पत्नी रानी मौर्य का चाल-चलन और कार्य व्यवहार मेरे व परिवार के प्रति ठीक नहीं है। दोनों के गलत आचरण और उत्पीड़न से तंग आकर मैंने उन्हें अपनी समस्त चल - अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है। राजेश कुमार मौर्य और रानी मौर्य से अब मेरा कोई संबंध नहीं है। **बैजनाथ मौर्य पुत्र स्व. राम अछैवर मौर्य ग्राम पूरे नरही बनकटवा थाना धम्मौर तहसील व जिला सुलतानपुर**

सूचना

सूचित हो कि मेरे चार लड़के अशोक, रामू, श्यामू व छोटू उर्फ अनुज तथा चार पुत्रियों थी, मेरा सझला लड़का श्याम किशोर उर्फ श्यामू एक आवारा किस्म का शराबी व्यक्ति है आये दिन शराब पीकर गाली गलौज व मार पीट करता हूँ उसकी पत्नी किरन गुप्ता भी उल्टी सीधी काफी भददी भददी गाली गलौज देकर प्रताडित व अपमानित करके मरने मारने को तैयार रहते है। श्याम किशोर उर्फ श्यामू व किरन गुप्ता के कृत्यो से तंग व दुखी होकर इन दोनो को अपनी समस्त चल अचल सम्पत्ति से वंचित करती हूँ। इनके कृत्यो से मेरा कोई वास्ता सरोकार नही है। **सरोजनी गुप्ता पत्नी स्व0 देवी प्रसाद गुप्ता, नि0-मो0 मास्टर कालोनी पूर्वी जी0टी0रोड महोली कस्बा व थाना व तहसील महोली जिला सीतापुर** तथा आधार सं0-7542 9236 2113 है।

NOTICE

I, Mushtaq Ahmad Khan, S/o Nazrul Ahmad Khan, resident of Village & Post Baseti, District Sitapur, Uttar Pradesh - 261001, hereby declare that I have changed my name from Mushtaq Ahmad to Mushtaq Ahmad Khan. Henceforth, I shall be known as Mushtaq Ahmad Khan for all purposes.

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र अविरल दिवाकर मिश्र जन्मतिथि 02 मार्च 2010 पुत्र अनिल कुमार मिश्र निवासी मोहल्ला काशीपुर कस्बा,पोस्ट व कोतवाली रुदौली,अयोध्या के आधार कार्ड नंबर 8147523641116 में गलत नाम सबल अंकित है। जबकि सही नाम अविरल दिवाकर मिश्रा है। **-अनिल कुमार मिश्रा पुत्र श्री दिवाकर मिश्रा मोहल्ला काशीपुर कस्बा पोस्ट रुदौली ,अयोध्या।**

छात्राओं ने समारोह में नृत्य किया। अमृत विचार

छात्र-छात्राओं ने बिखेरा जलवा

कानपुर। मेहरबान सिंह का पुरवा स्थित राधा कृष्णा कालेज ऑफ फार्मेसी की ओर से मंगलवार को "आरम्भ-2025 फ्रेशर डे सेलेब्रेशन" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान की चेयरपर्सन मिथिलेश मिश्रा व प्रबंधक पद्मकांत मिश्रा ने की। छात्र व छात्राओं ने फैशन शो, ग्रुप डॉस, सिंगिंग आदि रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस दौरान कॉलेज के प्रबंध निदेशक कुलदीप मिश्रा, दिलीप मिश्रा, निदेशक डॉ. आदित्य गुप्ता, विभागाध्यक्ष रवि कुमार, श्रेयांशी सिंह राना समेत अन्य फैकल्टी व स्टाफ मौजूद रहा।

बीएलए टू, बूथ कमेटी फार्म पहुंचाने में मदद करें

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- क्षेत्रीय अध्यक्ष ने दिए निर्देश छावनी में एसआईआर अभियान की समीक्षा भी की
- बीएलओ बोले- कुछ पते नहीं मिल रहे, मतदाता फार्म पहुंचाने में दिक्कत

अमृत विचार। भाजपा क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल एवं दक्षिण जिलाध्यक्ष शिवराम सिंह ने छावनी विधानसभा के श्याम नगर मंडल में केंद्रीय विद्यालय, रक्षा विहार शक्तिकेंद्र पहुंच कर एसआईआर अभियान की प्रगति रिपोर्ट की जानकारी ली। भाजपाइयों ने घर घर जाकर लोगों से गणना प्रपत्र जमा कराए। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान (एसआईआर) अभियान के तहत कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर तक अपनी सक्रियता बढ़ाने और घर-घर संपर्क कर एक एक मतदाता का नाम मतदाता सूची में जुड़वाने के निर्देश दिए।

मंगलवार को प्रकाश पाल एवं शिवराम सिंह ने श्याम नगर के वार्ड नंबर 74 श्याम नगर के केंद्रीय विद्यालय, रक्षा विहार मतदान केंद्र के बूथ संख्या 147,148, 149,150,151 और 152 में घर घर संपर्क किया। उन्होंने लोगों से संपर्क कर गणना प्रपत्र भरने में आने वाले परेशानियों के बारे में जानकारी ली। बीएलओ द्वारा कुछ घरों का पता न मिलने के कारण मतदाता फार्म न पहुंचा पाने की विवशता बताई तो क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने बीएलए टू, बूथ प्रवासी और बूथ कमेटी के सदस्यों को लोगों का पता बताने में बीएलओ का सहयोग करने के निर्देश दिए। क्षेत्रीय अध्यक्ष ने मंडल अध्यक्ष, बूथ अध्यक्ष, बूथ कमेटी एवं बूथ प्रवासी से घर घर कुंडी खटखटा कर लोगों से एसआईआर फार्म भरवाकर शीघ्र जमा करवाने को कहा। उन्होंने कहा कि एसआईआर में किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही न करें। बीएलए टू, बूथ अध्यक्ष तथा बूथ प्रवासी प्रतिदिन बूथ पर मौजूद रहे और यह सुनिश्चित करें कि बूथ के सभी लोगों के भरे हुए गणना प्राप्त जमा हो जाएं। मतदाताओं के गणना प्रपत्र जमा करना, नए मतदाताओं के नाम जुड़वाना मृत, स्थानांतरित और बोगस मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटवाना है। बूथ पर भाजपा विचार परिवार के लोग बड़ी संख्या में निवास करते हैं। इन लोगों से संपर्क कर उन्हें भी एसआईआर अभियान में सक्रिय करें। रघुनंदन भदौरिया, राम बहादुर यादव, गणेश शुक्ला, संजीव बेरी, अर्जुन बेरिया, आलोक वर्मा, अम्बरीष जायसवाल रहे।

तैयारी | चुनाव अधिकारी और प्रमुख पदाधिकारियों के बीच हुई बैठक

27 दिसंबर को 24 पदों पर होगा व्यापार मंडल चुनाव

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- कानपुर उद्योग व्यापार मंडल के चुनाव का मामला

अमृत विचार। स्वरूप नगर स्थित मंदाकिनी प्लाजा में मंगलवार को कानपुर उद्योग व्यापार मंडल के चुनाव के संबंध में चुनाव अधिकारी और प्रमुख पदाधिकारियों की बैठक हुई, जिसमे उद्योग व्यापार मंडल उत्तर के कार्यक्रम घोषित किए गए। एक अध्यक्ष, एक महामंत्री, एक कोषाध्यक्ष, दो वरिष्ठ उपाध्यक्ष, दो वरिष्ठ मंत्री, एक प्रचार मंत्री, सात उपाध्यक्ष, सात मंत्री, दो संगठन मंत्री समेत 24 पदों पर चुनाव होंगे।

मुख्य चुनाव अधिकारी रामेश्वर लाल भैया के मुताबिक नामांकन पत्रों का वितरण 17 व 18 दिसंबर 2025 को दोपहर दो बजे से शाम पांच बजे तक होगा। नामांकन पत्रों का नाम शुल्क 200 रुपये होगा। अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष पद के लिए ढाई हजार रुपये, वरिष्ठ उपाध्यक्ष वरिष्ठ मंत्री पद के लिए 1500 रुपये, उपाध्यक्ष, मंत्री, संगठन मंत्री व प्रचार मंत्री पद के लिए 1000 रुपये होगा। 19 व 20 दिसंबर 2025 को दोपहर दो बजे से शाम छह बजे तक कार्यालय में नामांकन स्वीकार किए जाएंगे। नामांकन पत्रों की जांच 21 दिसंबर को होगी। नामांकन वापसी 22 दिसंबर को दोपहर दो बजे से शाम छह बजे तक होगा। मतदान 27 दिसंबर को कोठारी भवन नयागंज में होगा, जिसका समय सुबह 10 बजे से दोपहर तीन बजे तक होगा। इसी दिन ही शाम को सात बजे तक मतगणना भी होगी।

बैठक में मुख्य चुनाव अधिकारी रामेश्वर लाल भैया, चुनाव अधिकारी सीपी सोमानी, देवी खन्ना, सरताज अहमद, प्रदीप पांडे, सदस्यता प्रमुख सुशील गुप्ता, राजेंद्र शुक्ला, राकेश सिंह, टीकमचंद सेठिया, सुनील बजाज, कृपा शंकर त्रिवेदी व प्रदीप गुप्ता समेत आदि रहे।

चुनावी बैठक करते कानपुर उद्योग व्यापार मंडल के पदाधिकारी।

www.amritvichar.com पर भी खबरें पढ़ें

कार्यालय नगर पालिका परिषद भरथना इटावा

पत्रांक: 336/न0पा0प0भ0/ई0-निविदा/2025-26/25 दिनांक: 02.12.2025

ई-निविदा प्रणाली के अन्तर्गत (निविदा आमंत्रण सूचना)

(ई-निविदा सूचना)

कार्यालय नगर पालिका परिषद भरथना द्वारा ई-निविदा सूचना के माध्यम से से 15 वें वित्त आयोग के अंतर्गत प्राप्त टाइड/अन्टाइड ग्रान्ट से प्राप्त धनराशि से विभिन्न निर्माण कार्य कराये जाने है, इस हेतु समस्त प्रतिष्ठित ठेकेदारों/फर्म/पंजीकृत ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि दिनांक- 05/12/2025 को समय प्रातः 10.00 बजे से 25/12/2025 तक दोपहर 02.00 बजे तक ई-निविदायें (टैक्निकल एवं फाईनेन्शियल) आमंत्रित की जाती है। ई-निविदा वेवसाईट www.etender.up.nic.in से डाउनलोड की जा सकती है। उक्त ई-निविदा दिनांक 26/12/2025 को दोपहर 02.00 बजे कार्यालय नगर पालिका परिषद भरथना में खोली जायेगी। अन्य विस्तृत जानकारी निम्नवत् है:-

क्र. सं.	नगर पालिका परिषद ANM Stage	Vender Stage	प्रारम्भ दिनांक एवं समय	अंतिम दिनांक एवं समय
1	Tender Release	---	05/12/2025 10.00 AM	---
2	---	Tender Download	05/12/2025 10.00 AM	25/12/2025 02.00 PM
3	Close Of Bid	Bid Submission	---	25/12/2025 02.00 PM
4	Technical Bid Opening	---	---	26/12/2025 04.00 PM
5	Financial Bid Opening	---	---	After Approval of Technical Bid

नोट:- अन्य नियम व शर्तो को किसी भी कार्य दिवस में पालिका कार्यालय अथवा वेबसाइट www.etender.up.nic.in पर देखी जा सकती है।

(सन्तोष कुमार मिश्र)
अधिशाषी अधिकारी
न0पा0परि0 भरथना इटावा

(अजय कुमार यादव)
अध्यक्ष
न0पा0परि0 भरथना इटावा

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 3 दिसंबर 2025

तकनीकों पर आईआईटी व एनएमडीसी करेंगे साथ काम

आईआईटी कानपुर व एनएमडीसी के बीच हुआ एमओयू

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। भारत सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ स्टील के अंतर्गत आने वाले एनएमडीसी लिमिटेड, नवरत्न पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज ने मंगलवार को आईआईटी कानपुर के साथ महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह एमओयू एनएमडीसी लिमिटेड के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन) सत्येंद्र राय और आईआईटी कानपुर के अनुसंधान एवं विकास डीन द्वारा हस्ताक्षरित किया गया। साथ में आईआईटी के निदेशक प्रो. मणींद्र अग्रवाल, प्रोजेक्ट डायरेक्टर, प्रोजेक्ट लीड्स, एनएमडीसी और आई-हब एनटीआईएचएसी फाउंडेशन (सी3आईहब) के अधिकारी भी रहे।

समझौता ज्ञापन का मुख्य उद्देश्य साइबर सिक्योरिटी, इन्फॉर्मेशन सिक्योरिटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, डिजिटल ट्रॉसफॉर्मेशन और अगली पीढ़ी की तकनीकों पर मिलकर काम करना है, जिससे एमएमडीसी के आईटी और ओटी सिस्टम्स को और मजबूत और सक्षम बनाया जा सकेगा।

निदेशक प्रो. मणींद्र अग्रवाल ने कहा कि आईआईटी कानपुर में हमारे पास साइबर सुरक्षा और एआई के क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व की चुनौतियों पर कार्य करने का अच्छा अनुभव है। यह साझेदारी एनएमडीसी के संचालन में साइबर सुरक्षा को और मजबूत करेगी। एआई, मशीन लर्निंग और स्मार्ट इंडस्ट्रियल सिस्टम्स के विकास को प्रोत्साहित करेगी, विशेषकर खनन क्षेत्र में। इस समझौते के तहत आईआईटी कानपुर का सी3आईहब, एनएमडीसी को साइबर रिस्क असेसमेंट, सुरक्षा खामियों की पहचान, सुरक्षा प्रबंधन, घटना प्रतिक्रिया योजना और सिक्योरिटी ऑपरेशंस सेंटर मॉडल के मानकों को मजबूत करने में सहायता करेगा। साथ ही, एआई व एमएल आधारित समाधान, डिजिटल ट्विन्स, प्रेडिक्टिव मेंटेनेंस और एडवांस्ड डेटा एनालिटिक्स के माध्यम से खनन क्षेत्रों में परिचालन दक्षता बढ़ाने के प्रयास किए जाएंगे। आईआईटी और एनएमडीसी मिलकर अनुसंधान, क्षमता निर्माण कार्यक्रम और तकनीकी पायलट परियोजनाएं चलाएंगे। सफल परिणामों को बड़े स्तर पर लागू करने की दिशा में भी कदम उठाए जाएंगे। यह सहयोग भारत के खनन क्षेत्र में साइबर सुरक्षा और डिजिटल परिवर्तन को नई दिशा देने वाला महत्वपूर्ण कदम है।

दो प्रश्न गलत आए, विषम सेमेस्टर परीक्षा निरस्त की

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। सीएसजेएमयू की ओर से मंगलवार को सत्र 2025-26 के विषम सेमेस्टर की परीक्षा आयोजित की गई, जिसमे इनऑग्रेनिक केमेस्ट्री व अबस्ट्रैक्ट एल्जेब्रा विषय के प्रश्न गलत देखकर छात्र-छात्राओं का माथा ठनक गया। छात्र-छात्राओं ने हंगामा करना शुरू कर दिया, जिसकी जानकारी कक्ष निरीक्षकों ने सीएसजेएमयू में दी, जिसके बाद सीएसजेएमयू के परीक्षा नियंत्रक राकेश कुमार ने परीक्षा निरस्त कर उसकी तारीख 12 दिसंबर तय की।

सीएसजेएमयू की ओर से सत्र 2025-26 के विषम सेमेस्टर की परीक्षा मंगलवार को प्रथम पाली में सुबह साढ़े आठ बजे से साढ़े 10 बजे तक सम्पन्न हुई। एमएससी प्रथम सेमेस्टर की रसायन विज्ञान विषय के प्रश्न-पत्र इनऑग्रेनिक केमेस्ट्री की परीक्षा और तृतीय

- **इनऑग्रेनिक केमेस्ट्री व अबस्ट्रैक्ट एल्जेब्रा विषय के प्रश्न गलत आने पर हंगामा**

पाली में दोपहर ढ़ाई बजे से शाम साढ़े चार बजे तक सम्पन्न हुई। एमए / एमएससी तृतीय सेमेस्टर के मैथमैटिक्स विषय के प्रश्न-पत्र अबस्ट्रैक्ट एल्जेब्रा (B030901T) की परीक्षा के संबंध में महाविद्यालयों और छात्र व छात्राओं ने सूचना दी कि प्रश्न सिलेबस के बाहर के आये। जानकारी पर कुछ छात्र-छात्राओं ने नाराजगी व्यक्त की। जानकारी होने पर सीएसजेएमयू ने मामले को संज्ञान में लिया और दोनों प्रश्न-पत्रों का परीक्षण कराया। सीएसजेएमयू के परीक्षा नियंत्रक राकेश कुमार के मुताबिक दोनों प्रश्नपत्रों का परीक्षण कराने के बाद आदेशानुसार एमएससी प्रथम सेमेस्टर की रसायन विज्ञान विषय के प्रश्न-पत्र इनऑग्रेनिक केमेस्ट्री (B0207011) की परीक्षा और एमए / एमएससी तृतीय सेमेस्टर के मैथमैटिक्स विषय के प्रश्न-पत्र अबस्ट्रैक्ट एल्जेब्रा (B030901T) की परीक्षा निरस्त कर दी गयी है। सम्बन्धित परीक्षायें दोबारा से 12 दिसंबर को सम्पन्न करायी जाएंगी। इस मामले के संबंध में विश्वविद्यालय द्वारा निदेशक, महाविद्यालय विकास परिषद्, सीएसजेएम विवि, कानपुर व अधिष्ठाता विज्ञान संकाय की समिति गठित की गयी है। समिति गहनता से जांच करेगी।

प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ सचिव सम्मान से अलंकृत हुए डॉ.विकास

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। बरेली में आईएमए यूपी स्टेट ने 90वीं राज्य स्तरीय वार्षिक कॉन्फ्रेंस में समारोह का आयोजन किया। जिसमे कानपुर आईएमए में 2024-25 के सचिव डॉ.विकास मिश्रा को प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ सचिव 2024-2025 सम्मान से अलंकृत किया गया। यह सम्मान चिकित्सक समुदाय में सचिव पद के लिए श्रेष्ठतम उपलब्धि का प्रतीक माना जाता है।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के माइक्रोबायोलॉजी विभाग में प्रोफेसर डॉ.विकास मिश्रा को यह सम्मान आईएमए के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व आईएमए यूपी स्टेट संरक्षक डॉ. शरद अग्रवाल, यूपी स्टेट अध्यक्ष डॉ.पीके अग्रवाल, मानद राज्य सचिव डॉ. आशीष अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष डॉ. एमएम पालीवाल, डॉ.रविश अग्रवाल, डॉ. विमल भारद्वाज ने झारखंड राज्यपाल संतोष गंगवार की उपस्थिति में दिया। डॉ.विकास को संगठनात्मक नेतृत्व में उनकी असाधारण दक्षता, प्रशासनिक उत्कृष्टता, जन-

डॉ .विकास मिश्रा को सम्मानित करते पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ .शरद अग्रवाल व यूपी स्टेट अध्यक्ष डॉ .पीके अग्रवाल।

स्वास्थ्य अभियानों के संवेदीकरण में किए प्रयासों, चिकित्सा-सेवा के क्षेत्र में निरंतर योगदान, प्रदेश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित अलंकरण में रूप किशोर एवं चंद्राणी टंडन अवॉर्ड - बेस्ट लोकल ब्रांच सेक्रेटरी, आईएमए यूपी स्टेट 2024-2025 से विभूषित किया गया। डॉ.विकास मिश्रा ने कहा कि यह सम्मान पूरे आईएमए कानपुर परिवार की एकजुटता, परिश्रम और सेवाभाव का परिणाम है। आईएमए कानपुर अध्यक्ष डॉ.अनुराग मेहरोत्रा, सचिव डॉ. शालिनी मोहन, पूर्व अध्यक्ष डॉ.नंदिनी रस्तोगी व सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ने उन्हें बधाई दी।

200 मीटर दौड़ में दिलीप, वॉलीबॉल में आयुष टीम प्रथम

कानपुर। युवा कल्याण विभाग द्वारा कल्याणपुर विधानसभा क्षेत्र में सांसद-विधायक खेल स्पर्धा का आयोजन किया गया। जिसमें 20 विद्यालयों तथा अन्य 1000 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

मंगलवार को आरयूबी. ग्राउंड, बिठूर रोड, कल्याणपुर तथा ग्रीनपार्क स्टेडियम में प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका शुभारंभ मुख्य अतिथि विधायक कल्याणपुर नीलिमा कटियार, पार्षद संजय बाथम, युवा कल्याण अधिकारी आरती जायसवाल एवं अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं वंदे मातरम् गायन के साथ किया गया। विधायक ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

200 मीटर दौड़ सीनियर वर्ग में दिलीप प्रथम, हिमांशु यादव द्वितीय स्थान पर रहे।सब जूनियर वॉलीबाल वर्ग में आयुष कटियार की टीम प्रथम स्थान पर रही। 400 मीटर दौड़ जूनियर वर्ग में अथर्व गुप्ता विजयी रहीं। वहीं जूनियर वॉलीबॉल वर्ग में हर्ष गौतम की टीम और सीनियर वर्ग में अवनीश की टीम प्रथम रही।

आज शतरंज और फुटबाल प्रतियोगिता

कानपुर। युवा कल्याण अधिकारी आरती जायसवाल ने बताया कि 3 दिसंबर को फुटबॉल, जूडो, शतरंज, भारोत्तोलन एवं कुश्ती प्रतियोगिताओं का आयोजन ग्रीनपार्क में प्रातः 9:00 बजे से किया जाएगा। महाराजपुर विधानसभा क्षेत्र में 07 से 08 दिसंबर को प्रस्तावित है। सभी इच्छुक प्रतिभागी सांसद खेल पोर्टल एवं युवा साथी पोर्टल पर अनिवार्य रूप से अपना पंजीकरण कराएं।

अंतर्राष्ट्रीय साइंस कांग्रेस में डॉ. एनके शर्मा देंगे व्याख्यान

कानपुर। फैजाबाद स्थित डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में आठ और नौ दिसंबर को 13वीं अंतर्राष्ट्रीय साइंस कांग्रेस होगी, जिसमे चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि अभियंत्रण संकाय के अधिष्ठाता डॉ. एनके शर्मा मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया है। इस कांग्रेस में देश व विदेश से लगभग 300 वैज्ञानिक व शोधार्थियों के आने की संभावना है। डॉ. शर्मा आठ दिसंबर को इंडियन नॉलेज सिस्टम विषय पर व्याख्यान देंगे। डॉ. शर्मा शिक्षाविद होने के साथ एक कुशल प्रशासक भी हैं। उनके नेतृत्व में इस वर्ष इटावा परिसर के 151 छात्र-छात्राओं ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया है।

साहित्य | वरिष्ठ कवि अशोक कुमार बाजपेई की काव्य कृति है

आओ जी भर जिएं का विमोचन

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

काव्य कृति का विमोचन करते साहित्यकार। अमृत विचार

अमृत विचार। संरचना साहित्यिक संस्था के तत्वावधान में वरिष्ठ कवि अशोक कुमार बाजपेई की संवेदना से परिपूर्ण दिव्यांगों पर केंद्रित काव्य कृति आओ जी भर जिएं का लोकार्पण उत्कर्ष एकेडमी स्वरूप नगर में संपन्न हुआ।मुख्य अतिथि विधायक नीलिमा कटियार ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है। आओ जी भर जियें पर लिखी वरिष्ठ कवि अशोक कुमार बाजपेई की काव्य कृति समाज में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखेगी और यह काव्य कृति जनउपयोगी साबित होगी। उन्होंने कहा इस पुस्तक को पढ़ने से दिव्यांगों को साहस मिलेगा।1 कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व कुलपति डॉक्टर लक्ष्मी कांत पांडे ने कहा की इस कृति में जो रचनाएं हैं उसे पढ़कर कोई भी दिव्यांग जीने की सही दिशा तय कर सकता है। अशोक बाजपेई की यह "आओ जी भर जिये" इसी संवेदनशील चेतना का परिणाम है । विशिष्ट अतिथि श्याम सुंदर निगम ने कहा कि इस कृति की सभी कविताएं बहुत सार्थक हैं। वरिष्ठ कवि डॉक्टर सुरेश अवस्थी ने कहा कि संग्रह की कविताएं दिव्यांगों को समाज के साथ बराबर जोड़ती हैं तथा उन की पीड़ा व्यक्त करने के साथ हौसला देने वाली हैं, जिनमें रचनाकार की गहन संवेदना गहरे तक प्रभावित करने वाली है । उत्कर्ष अकादमी के निदेशक डॉ प्रदीप दीक्षित ने कहा कि इस कृति को पढ़ने से मानव संवेदनायें जाग्रत हो उठती हैं। समाज सेवी सुनील मंगल ने दिव्यांगों की समाज में हिस्सेदारी एवं हर कदम पूरी मजबूती के साथ चलने का आवाह्न किया। कृति कार अशोक कुमार बाजपेई ने बताया कि इस कृति में 73 कविताएं पिरोई हैं। गौरैया बचाओ अभियान के संयोजक एवं पर्यावरणविद गौरव बाजपेई ने सारगर्भित वक्तव्य दिया। संचालन चक्रधर शुक्ल ने किया। सुरेश गुप्त राजहंस, डॉ अलका दीक्षित, सुनीता तिवारी, सरदार बलविंदर सिंह, सतीश गुप्ता गोपाल खन्ना, रमेश दीक्षित , डॉ विनोद त्रिपाठी, डॉ प्रेम स्वरूप त्रिपाठी , सुरेंद्र गुप्त , सुरेश राज हंस, राधा शाक्य, डॉ सुधांशु त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

कार्यालयः-जिला कार्यक्रम अधिकारी, हमीरपुर

पत्रांकः C – 1252/ जि0का0अधि0 / आ0 बा0चयन / 2025–26 दिनांकः 02 दिसम्बर, 2025

विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि शासनादेश सं0–1/1092245/2025/ 3313/58– 1– 2025 (1917687) दिनांक 17 सितम्बर, 2025 में वर्णित व्यवस्थानुसार जनपद हमीरपुर के शहरी/ग्रामीण परिक्षेत्र में संचालित बाल विकास परियोजना में आंगनबाडी कार्यकत्रियों के मानदेय पर आधारित रिक्त पदों पर नियुक्ति हेतु सीधी भर्ती प्रक्रिया के तहत विभागीय वेबसाइट http://upaganwadibharti.in पर आनलाइन आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। रिक्त पदों का विवरण विकास खण्ड वार / परियोजनावार निम्नवत् हैः–

क्र. सं.	परियोजना का नाम	ग्रामीण / शहरी	रिक्त आंगनबाड़ी कार्यकत्री के पदों की संख्या
1	सुमेरपुर	ग्रामीण	05
2	मौदहा	ग्रामीण	09
3	गोहाण्ड	ग्रामीण	01
4	शहर	शहरी	07
योग			22

उपरोक्त पदों का ग्रामसभा/वार्डवार विवरण एवं आरक्षण सहित अर्हता का पूर्ण विवरण जनपद के कलेक्ट्रेट, विकास भवन, तहसील एवं विकास खण्ड इत्यादि कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा की जायेगी, साथ ही विभागीय वेबसाइड http//upaganwadibharti.in पर अपलोड है।

विज्ञापित पदों की अर्हता एवं आवेदन पत्र भरने हेतु विशेष निर्देश–

1. केवल महिला अभ्यर्थी ही पात्र होगें।
2. आंगनबाड़ी कार्यकत्री पद हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता इण्टरमीडिएट या समकक्ष एवं अधिकतम शैक्षिक योग्यता परास्नातक के आधार पर मेरिट तैयार की जायेगी।
3. आवेदिका के ग्रामसभा/वार्ड (शहरी) का निवासी होना अनिवार्य है। ग्राम सभा में उक्त श्रेणी में पात्र अभ्यर्थी उपलब्ध न होने की स्थिति में सम्बन्धित न्याय पंचायत का स्थाई निवासी होना अनिवार्य है।
4. आवेदिका की आयु निर्धारित तिथि 01.07.2025 (कट आफ डेट) को न्यूनतम 18 वर्ष एवं 35 वर्ष से अधिक नही होनी चाहिये।
5. आयु के संबंध में हाई स्कूल अंक तालिका एवं प्रमाण पत्र में अंकित जन्मतिथि ही मान्य होगी।
6. विज्ञप्ति में प्रकाशित पदों हेतु केवल विभागीय वेबसाइट http://upaganwadibharti.in पर ऑनलाइन आवेदन फार्म निर्धारित समयावधि के अन्दर ही स्वीकार किये जायेगें। ऑफलाइन आवेदन पत्र किसी भी दशा में मान्य / स्वीकार नही किये जायेगें।
7. आवेदन दिनांक 23.12.2025 की मध्य रात्रि 12 बजे तक स्वीकार किये जायेगें।
8. विज्ञप्ति प्रकाशित रिक्त पदों की संख्या विशेष परिस्थितियों में घट बढ़ सकती है। उपरोक्त विज्ञप्ति पदों के अर्हता एवं आवेदन करने की प्रक्रिया विस्तृत प्रपत्र एवं सूचना विभागीय वेबसाइट http://upaganwadibharti.in पर उपलब्ध है। साथ ही अधिक जानकारी हेतु विकास खण्ड के बाल विकास परियोजना कार्यालय अथवा विकास भवन में जिला कार्यक्रम अधिकारी (बाल विकास विभाग) कार्यालय से कार्यालय दिवस में निर्धारित समयानुसार जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
9. यदि आवेदन में कोई त्रुटि होती है, या कोई तथ्य/आकड़े/शैक्षिक अभिलेखों के प्राप्तांक / पूर्णांक गलत या कूटरचित पाये जायेगें तो अभ्यर्थन निरस्त कर दिया जायेगा। इसके लिये अभ्यार्थी स्वयं उत्तरदायी होगीं। त्रुटि सुधार हेतु ऑफलाइन आवेदन पर विचार नहीं किया जायेगा, अतः अभ्यर्थी के संलग्न किये गये अभिलेख स्पष्ट पठनीय होने चाहिये।
10. आवेदन करने से पूर्व शासनादेश दिनांक 17.09.2025 का अध्ययन भली भांति कर लें। आवेदन पत्र का प्रिंट आउट निकाल कर मूल अभिलेखों से मिलान कर लें। त्रुटिपूर्ण प्रविष्टि पर आवेदन पत्र निरस्त कर दिया जायेगा। केन्द्र का नाम एवं केन्द्र कोड भरना अनिवार्य है।
11. बी0पी0एल0 श्रेणी का निर्धारण समाज कल्याण अनुभाग– 2 उत्तर प्रदेश शासन के शासनादेश संख्या–22/2015/2123/26.02.2015 दिनांक 14.09.2015 (यथा संशोधित) के अनुसार किया जायेगा। तहसील से आनलाइन डिजिटल हस्ताक्षर निर्गत आय प्रमाण ही मान्य होगा, जिसका ऑनलाइन सत्यापन किया जा सके। आय प्रमाण पत्र के सम्बन्ध में उ0प्र0 शासन के राजस्व अनुभाग–9 द्वारा निर्गत शासनादेश संख्या– 3959/1–9–11–10–9 दिनांक 30.09.2011 (यथा संशोधित) के क्रम में सक्षम स्तर से निर्गत आय प्रमाण पत्र ही मान्य होगें, जिनका ऑनलाइन सत्यापन संभव हो।
12. जाति व निवास प्रमाण पत्र के संबंध में सक्षम स्तर से आनलाइन डिजिटल हस्ताक्षर से निर्गत निवास व जाति प्रमाण पत्र ही मान्य होगें, जिनका ऑनलाइन सत्यापन किया जा सकें।

13. आंगनबाड़ी कार्यकत्री के पदों पर चयन की वरीयता कमानुसार निम्नवत् हैः–

(I) गरीबी रेखा के नीचें उसी ग्रामसभा/वार्ड (शहरी क्षेत्र) की विधवा / तलाकशुदा/परित्यकता को कमानुसार वरीयता प्रदान की जायेगी।

(II) विधवा/तलाकशुदा/परित्यक्ता के गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार का अभ्यर्थी न मिलने पर उसी ग्राम सभा/वार्ड की गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की महिलायें।

(III) गरीबी रेखा से नीचे के अभ्यर्थी न मिलने पर उसी ग्राम सभा/वार्ड (शहरी क्षेत्र) की निवासी गरीबी रेखा से ऊपर जीवन यापन करने वाले परिवार की विधवा, तलाकशुदा / परित्यकता के अभ्यर्थी को क्रमानुसार वरीयता प्रदान की जायेगी।

(IV) विधवा / तलाकशुदा/परित्यक्ता न मिलने पर उसी ग्राम सभा / वार्ड (शहरी क्षेत्र) के गरीबी रेखा से ऊपर के अभ्यर्थी पर विचार किया जायेगा।

(V) विधवा हेतु ग्राम पंचायत अधिकारी / संबंधित नगर निकाय द्वारा निर्गत प्रमाण पत्र एवं परिवार पंजिका की प्रमाणित नकल ही मान्य होगी।

(VI) तलाकशुदा /परित्यकता के संबंध में मा0 न्यायालय द्वारा निर्गत विधिक आदेश ही मान्य होगा।

(VII) एक ही आगनबाड़ी केन्द्र पर एक ही परिवार की दो महिलाओं की नियुक्ति आंगनबाड़ी कार्यकत्री व सहायिका के पद पर नही की जायेगी।

नोट– आवेदन चयन की सम्पूर्ण प्रकिया शासनादेश–1/1092245/2025/3313/58–1–2025 (1917687) दिनांक 17 सितम्बर, 2025 में वर्णित व्यवस्थानुसार ही किया जायेगा। किसी भी प्रकार के विचलन पर आवेदन निरस्त कर दिया जायेगा। जिसका सम्पूर्ण उत्तरदात्यिव अभ्यर्थिनी का होगा।

(इन्द्रपाल सिंह)
जिला कार्यक्रम अधिकारी
हमीरपुर।

बरेली-कानपुर में पेयजल परियोजनाओं को हरी झंडी

यूपी कैबिनेट के फैसले : 582.74 करोड़ रुपये की परियोजनाओं से लाखों लोगों को मिलेगा फायदा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचारः यूपी कैबिनेट ने शहरी पेयजल व्यवस्था को मजबूत करने के लिए दो महत्वपूर्ण परियोजनाओं को हरी झंडी दे दी है। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि अटल नवीकरण एवं शहरी रूपांतरण मिशन-अमृत 2.0 के तहत बरेली और कानपुर नगर निगम क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति सुधारने और नेटवर्क विस्तार के लिए कुल 582.74 करोड़ रुपये की परियोजनाओं को मंजूरी मिली है। दोनों योजनाएं शहरों की बड़ी आबादी को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने में मील का पत्थर साबित होंगी। इससे लाखों लोगों को फायदा होगा।

बरेली नगर निगम में पेयजल प्रणाली को नए सिरे से विकसित करने के लिए फेज-1 पुनर्गठन परियोजना को व्यय वित्त समिति से 26,595.46 लाख की स्वीकृति मिल चुकी है। इसमें केंद्र सरकार का हिस्सा 8,530.96 लाख, राज्य सरकार का 14,504.95 लाख और नगर निगम का अंश 2,559.55 लाख शामिल है। परियोजना के पूरा होने पर बरेली में लगभग 92% आबादी, यानी करीब 9 लाख लोग, नियमित और सुरक्षित पेयजल आपूर्ति से कवर हो जाएंगे।

कानपुर नगर निगम क्षेत्र के ईस्ट और साउथ सर्विस डिस्ट्रिक्ट में 100 प्रतिशत आबादी तक शुद्ध पेयजल पहुंचाने के लिए पाइपलाइन विस्तार परियोजना को 31,678.88 लाख की मंजूरी मिली है। इसमें केंद्र सरकार का योगदान 7,610.32 लाख, राज्य सरकार का 18,264.77 लाख और नगर निगम का हिस्सा 4,566.19 लाख है। परियोजना से कानपुर शहर के 33 वार्डों को सीधा लाभ मिलेगा और ईस्ट-साउथ जोन की पूरी आबादी को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होगा। जलजनित रोगों में भी कमी आने की उम्मीद है।

कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते वित्त मंत्री सुरेश खन्ना।

मेडिकल कॉलेजों में बढ़ेंगी 5000 सीटें

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश में मेडिकल शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। कैबिनेट बैठक में मेडिकल शिक्षा विभाग के प्रस्ताव पर एमबीबीएस, बीडीएस, बीएमएस आदि चिकित्सा पाठ्यक्रमों में कुल लगभग 5000 सीटें बढ़ाने की प्रक्रिया शुरू करने की मंजूरी दी गई है। ये सीटें राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) के मानकों के अनुरूप बढ़ाई जाएंगी और विभाग ने इस वृद्धि को आगे बढ़ाने के लिए प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है।

सरकार का कहना है कि सीटें बढ़ने से चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में अधिक अवसर उपलब्ध होंगे और भविष्य में चिकित्सा सेवाओं को भी मजबूती मिलेगी। कैबिनेट का निर्णय प्रक्रिया प्रारंभ करने से संबंधित है, कोई अंतिम सीट संख्या या जगह अभी निर्धारित नहीं की गई है।

अंतरराष्ट्रीय योग केंद्र को मुफ्त में दी जमीन

योगी कैबिनेट ने बागपत में अंतरराष्ट्रीय स्तर का योग एवं आरोग्य केंद्र स्थापित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इस केंद्र का निर्माण पीपीपी (पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप) मॉडल पर किया जाएगा। सरकार इसके लिए आवश्यक भूमि को निशुल्क उपलब्ध कराएगी। प्रस्ताव का उद्देश्य योग, प्राकृतिक चिकित्सा और वेलनेस को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना है। केंद्र में योग प्रशिक्षण, स्वास्थ्य पुनर्वास, शोध, आधुनिक सुविधाएं और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप वेलनेस सेवाएं विकसित की जाएंगी। सरकार का दावा है कि इससे बागपत क्षेत्र में पर्यटन, रोजगार और स्वास्थ्य अवसंरचना को नई दिशा मिलेगी।

अयोध्या में बनेगा सांस्कृतिक संग्रहालय

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- 52 एकड़ में बनेगा विश्वस्तरीय मंदिर संग्रहालय
- सीएसआर फंड से बनाएगा टाटा संस और संचालन भी करेगा

अमृत विचारः यूपी सरकार ने अयोध्या को विश्व स्तर पर एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गंतव्य के रूप में विकसित करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। कैबिनेट ने अयोध्या में 52 एकड़ में विश्वस्तरीय मंदिर संग्रहालय बनाने की मंजूरी दी है। इससे अयोध्या में सांस्कृतिक आकर्षण और बढ़ेगा।

कैबिनेट ने टाटा संस के सहयोग से अयोध्या में प्रस्तावित विश्वस्तरीय 'मंदिर संग्रहालय' का दायरा बड़ा कर दिया है। कैबिनेट में हुई चर्चा और उसके आधार पर लिए गए निर्णय के बारे में जानकारी देते हुए वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि टाटा संस ने अपने सीएसआर फंड से एक अत्याधुनिक मंदिर संग्रहालय विकसित करने और उसका संचालन करने की इच्छा व्यक्त की है। इसके लिए कंपनी एक्ट 2013 की धारा-8 के तहत एक गैर-लाभकारी एसपीवी बनाया जाएगा, जिसमें भारत सरकार और राज्य सरकार के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे। परियोजना हेतु भूमि आवंटन के लिए केंद्र सरकार, प्रदेश सरकार और टाटा संस के बीच त्रिपक्षीय एमओयू बीते 3 सितंबर 2024 को हस्ताक्षरित हो चुका है।

वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि पहले प्रदेश सरकार ने अयोध्या के मांझा जमथरा गांव में 25 एकड़ नजूल भूमि टाटा संस को 90 वर्षों के लिए उपलब्ध कराने की अनुमति दी थी, लेकिन टाटा संस ने संग्रहालय की भव्यता के दृष्टिगत अधिक भूमि की अपेक्षा की थी। ऐसे में अब इस भूमि के अतिरिक्त 27.102 एकड़ और मिलाकर कुल 52.102 एकड़ भूमि का निःशुल्क हस्तांतरण आवास एवं शहरी नियोजन विभाग से पर्यटन विभाग के पक्ष में किया जाएगा, ताकि परियोजना का दायरा और बड़ा किया जा सके।

प्रतियोगिताओं और शिविरों की पूरी अवधि मानी जाएगी 'ड्यूटी', खिलाड़ियों को राहत

अमृत विचार, लखनऊ : राज्य सरकार ने अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता और सरकारी नौकरी प्राप्त खिलाड़ियों को बड़ी राहत देते हुए घोषणा की है कि अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों, प्रशिक्षण शिविरों तथा संबंधित गतिविधियों में शामिल होने की पूरी अवधि को 'ड्यूटी' माना जाएगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई मंत्रिमंडल बैठक में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने ब्रीफिंग में बताया कि मौजूदा 'अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता सीधी भर्ती नियमावली-2022' में अवकाश अथवा अनुमति का स्पष्ट प्रावधान न होने के कारण खिलाड़ियों को प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अनुमति प्रक्रिया में दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। अब नई प्रणाली लागू होने के बाद नियुक्त खिलाड़ी जब भी राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता, प्रशिक्षण शिविर या किसी आधिकारिक खेल गतिविधि में शामिल होंगे, उसे नियमित ड्यूटी माना जाएगा। इसमें आने-जाने का पूरा समय भी सम्मिलित रहेगा।

खन्ना के अनुसार, मंत्रिमंडल ने वाराणसी के सिगरा इलाके में निर्माणाधीन डॉक्टर सम्पूर्णानंद स्पोर्ट्स स्टेडियम के संचालन, प्रबंधन और रखरखाव के लिए भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के साथ हुए समझौते को भी मंजूरी दे दी है। इस समझौते के तहत स्टेडियम में उपलब्ध भवन, ढांचा, खेल मैदान सहित सभी सुविधाएं साइ को सौंपी जाएंगी।

डीडीआरसी के जर्जर ढांचे को संसाधनों से लैस करेगी प्रदेश सरकार

अमृत विचार, लखनऊ : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई कैबिनेट बैठक में दिव्यांगजनों के लिए एक अहम निर्णय लेते हुए राज्य के सभी 18 मंडलों में नए जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र (डीडीआरसी) खोलने को मंजूरी दी गई है। लेकिन वर्तमान में प्रदेश के 38 जिलों में ऐसे केंद्र चल रहे हैं, लेकिन कतिपय समस्याओं के कारण कई जगह संचालन प्रभावित हो रहा था। अब सरकार पूरे ढांचे को नए सिरे से संसाधनों से लैस करते हुए संचालित करने जा रही है, ताकि दिव्यांगजनों को मिलने वाली सेवाओं में कोई बाधा न आए। कैबिनेट के फैसले के बारे में जानकारी देते हुए वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि नए डीडीआरसी खुलने से प्रदेश में दिव्यांगजनों को एक ही जगह पर सर्वे, पहचान, शिविर, सहायक उपकरण, कृत्रिम अंग फिटमेंट और प्रशिक्षण जैसी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होंगी। इसके साथ ही फिजियोथेरेपी, स्पीच थेरेपी जैसी नैदानिक सेवाएं भी इन केंद्रों पर दी जाएंगी। यूडीआईडी कार्ड और दिव्यांग प्रमाणपत्र जैसे जरूरी दस्तावेज बनवाने में भी अब लोगों को ज्यादा चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। सरकार का मानना है कि इस फैसले से दिव्यांगजनों को योजनाओं का लाभ समय पर और सुगमता से मिल सकेगा तथा उनके पुनर्वास की पूरी प्रक्रिया मजबूत होगी।

38 जिलों में बदहाली से जूझ रहे थे केंद्र

एक्सप्रेसवे पर घाघरा पुल के पास बनेगा तटबंध

अमृत विचार, लखनऊ : यूपी कैबिनेट ने गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर घाघरा पुल के पास क्षतिग्रस्त तटबंध का निर्माण किए जाने की मंजूरी दी है। इस कार्य पर 246 .37 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। घाघरा पुल का तटबंध वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त हो गया था। इसकी वजह से एक्सप्रेसवे पर कभी भी नदी का पानी आ सकता था। नतीजतन उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने इस तटबंध के क्षतिग्रस्त भाग की मरम्मत कराने का प्रस्ताव भेजा था। इसे कैबिनेट की बैठक में स्वीकृति प्रदान की गई है। इस लिंक एक्सप्रेसवे का उद्घाटन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पिछली 20 जून को किया था।

निजी निवेश आधारित अस्पताल विकास नीति को मंजूरी

अमृत विचार, लखनऊ : सरकार ने प्रदेश में निजी निवेश के माध्यम से अस्पतालों के विकास को बढ़ावा देने के लिए नई नीति को मंजूरी दे दी है। नीति तीन मोड ए, बी और सी में लागू होगी। मोड–ए के तहत झांसी को छोड़कर सभी 16 नगर निगम क्षेत्रों और गौतमबुद्धनगर में कम से कम 200 बेड वाले अस्पताल स्थापित किए जाएंगे। मोड–बी में राज्य के 58 जिला मुख्यालयों में (मोड ए को छोड़कर) 200 बेड वाले अस्पताल लगाए जाएंगे। मोड–सी के तहत गौतमबुद्धनगर को छोड़कर राज्य के अन्य 74 जिलों में जिला मुख्यालय के बाहर 100 बेड वाले अस्पताल स्थापित करने की व्यवस्था है। सरकार मोड–ए में निजी इकाइयों को स्टांप ड्यूटी में छूट, जबकि मोड–बी और सी में स्टांप ड्यूटी के साथ भूमि लागत पर सब्सिडी भी देगी। नीति ग्रीनफील्ड और ब्राउनफील्ड दोनों प्रकार की परियोजनाओं पर लागू होगी।

अब जातियों के आधार पर नहीं होगा काम का बंटवारा

अमृत विचार, लखनऊ : सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद मंगलवार को यूपी के जेल नियमों में संशोधन के प्रस्ताव को योगी कैबिनेट ने मंजूरी दे दी है। अब जेल में काम का बंटवारा जाति के आधार पर नहीं होगा।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के क्रम में राज्य कैबिनेट ने जेल मैनुअल में प्रथम संशोधन के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान कर दी, जिसके तहत जेलों में बंदियों से अब जाति आधारित काम नहीं लिया जा सकेगा। साथ ही, बंदियों से जुड़े अभिलेखों में जाति का उल्लेख नहीं होगा। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने सुकन्या शांथा बनाम भारत संघ एवं अन्य रिट याचिका पर सुनवाई के दौरान जेल मैनुअल में बदलाव करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने सभी राज्यों को निर्देश दिया कि वे ऐसे सभी संदर्भों को हटाएं जो जाति, समुदाय, धर्म या सामाजिक स्थिति के आधार पर भेदभाव को बढ़ावा देते हैं। साथ ही यह सुनिश्चित करने को कहा था कि जेल की व्यवस्था संविधान में निहित समानता, गरिमा और भेदभाव-रहितता के संवैधानिक सिद्धांतों के अनुरूप हो। कैबिनेट ने जेल अभिलेखों और वारंटों से जाति के कॉलम हटाने तथा वर्गीकरण, कार्य आवंटन और सजा में छूट से संबंधित नीतियों को केवल वस्तुनिष्ठ, विधिसम्मत और सुधारात्मक मानकों पर आधारित करने के लिए मैनुअल में संशोधन किया है।

न्यूज ब्रीफ

आयुर्वेदिक कॉलेज को दान में मिली जमीन

अमृत विचार, लखनऊ : प्रयागराज स्थित राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, हरीपुरमरों को दान में मिली जमीन पर अब अस्पताल के विस्तार का रास्ता साफ हो गया है। राज्य सरकार ने जमीन को विभाग के नाम स्थानांतरित करने की न केवल मंजूरी प्रदान कर दी है, बल्कि स्थानांतरण में आने वाले कोर्ट फीस के बाबत 37 हजार 686 रुपये का बजट भी स्वीकृत किया गया है। आयुष विभाग के प्रमुख सचिव रंजन कुमार ने मंगलवार को निदेशक आयुर्वेद सेवाओं को जमीन स्थानांतरण की प्रक्रिया पूरी कराने के आदेश जारी कर दिए। उन्होंने बताया कि जमीन उपलब्ध होने से आयुर्वेदिक कॉलेज व अस्पताल के विस्तार की लंबित योजना को गति मिलेगी। इससे मरीजों को गुणवत्तापूर्ण उपचार सुविधाएं उपलब्ध कराने में बड़ी मदद मिलेगी।

रोजगार मेला 6 को 1500 पदों पर भर्ती

अमृत विचार, लखनऊ : व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि पीएम इंटर्नशिप योजना के प्रशिक्षार्थियों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए 6 दिसम्बर 2025 को राजकीय आईटीआई अलीगंज, लखनऊ में विशेष रोजगार मेला आयोजित किया जा रहा है। इस मेले में 29 कंपनियां भाग लेंगी तथा 1500 से अधिक रिक्त पदों के लिए अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा। इनमें पीएम इंटर्नशिप योजना के 512 प्रशिक्षार्थियों को भी आमंत्रित किया गया है।

खाद्य प्रसंस्करण के प्रशिक्षण पर जोर

अमृत विचार, लखनऊ : जिलों में स्थापित राजकीय खाद्य विज्ञान प्रशिक्षण केन्द्रों और सामुदायिक फल संरक्षण एवं प्रशिक्षण केन्द्रों पर युवक-युवतियों व कृषकों खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र का प्रशिक्षण दिया जाता है। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य द्वारा जिलों को निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप प्रशिक्षण कार्य समय से पूर्ण करने के निर्देश दिये गये हैं। उप मुख्यमंत्री के निर्देशों के क्रम मे मंगलवार को विभाग द्वारा अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वह प्रभावी कार्ययोजना व रूपरेखा तैयार कर इच्छित नवयुवकों, नवयुवतियों व किसानों को बेहतर से बेहतर प्रशिक्षण दिलाया जाए।

पर्यटन संवर्ग में नई सेवा नियमावली लागू

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- पर्यटन सेवा नियमावली 2025 प्रख्यापित, प्रदेश सरकार ने किए बड़े सुधार
- सीधी भर्ती व पदोन्नति दोनों माध्यमों से भरे जाएंगे पद

अमृत विचार : प्रदेश सरकार ने पर्यटन विभाग में संरचनात्मक सुधार की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशों के अनुरूप पर्यटन विभाग में व्यापक संरचनात्मक सुधार करते हुए उत्तर प्रदेश अधीनस्थ पर्यटन सेवा नियमावली-2025 का प्रख्यापन किया गया है। नई नियमावली के लागू होने से पूर्व के सभी नियम, आदेश व दिशा-निर्देश अवक्रमित हो गए हैं।

नई प्रख्यापित नियमावली के तहत पर्यटन अधीनस्थ सेवा संवर्ग में प्रकाशन अधिकारी, अपर जिला पर्यटन अधिकारी और पर्यटन सूचना अधिकारी के पद अब सीधी भर्ती व पदोन्नति दोनों माध्यमों से भरे जाएंगे। विभाग के अनुसार, प्रकाशन अधिकारी के पदों के लिए उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के माध्यम से अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा, जबकि पर्यटन सूचना अधिकारी के पदों की भर्ती उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के द्वारा की जाएगी। नई व्यवस्था से चयन प्रक्रिया अधिक पारदर्शी व प्रतिस्पर्धात्मक होने की उम्मीद है।

सेवा संरचना में व्यापक प्रावधान : नई नियमावली में नियुक्ति, सेवा शर्तों, पदोन्नति, अर्हता तथा वरिष्ठता सहित अन्य प्रशासनिक प्रावधानों का भी समावेश किया गया है। प्रमुख सचिव पर्यटन, अमृत अभिजात ने कहा कि यह नियमावली पर्यटन विभाग में एक समन्वित, सक्षम व आधुनिक सेवा संरचना सुनिश्चित करेगी। राज्य सरकार का मानना है कि इन सुधारों से प्रदेश में पर्यटन विकास को नई गति मिलेगी और प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि होगी।

शिकायतों को लेकर निर्वाचन आयोग गंभीर हो : श्यामलाल

- एसआईआर के दौरान आने वाली समस्याओं को लेकर सपा ने सौंपा ज्ञापन

अमृत विचार, लखनऊ : बाराबंकी में अधिकांश मतदाताओं के गणना प्रपत्र को थर्ड ऑप्शन में सबमिट कर दिया गया है, इस मामले में मानक के अनुसार गणना प्रपत्र को एडिट करवा कर फर्स्ट ऑप्शन या सेकेण्ड ऑप्शन में सबमिट कराया जाये। प्रयागराज के लापता मतदाताओं की तलाश किया जाये और मिर्जापुर, भदोही, रायबरेली, बुलंदशहर की शिकायतों को संज्ञान में लेकर त्वरित कार्रवाई की जाए, जिससे एसआईआर प्रक्रिया पारदर्शी ढंग से सम्पन्न हो सके। उक्त शिकायतों को ज्ञापन के माध्यम से सपा के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी को सौंपा है।

सपा के प्रदेश अध्यक्ष ने मंगलवार को ज्ञापन देने के बाद बताया कि बाराबंकी में सभी विधान सभाओं में बीएलओ द्वारा मतदाताओं के गणना प्रपत्र को "थर्ड ऑप्शन" में नियमों के विपरीत तरीके से सबमिट कर दिया गया है। इसी तरह मिर्जापुर व बुलंदशहर में बीएलओ द्वारा सपा समर्थक मतदाताओं को गणना प्रपत्र दिया नहीं गया है। ऐसे सभी गणना प्रपत्रों को लापता में सबमिट कर दिया गया है, जांच करवा कर नियमानुसार गणना प्रपत्र सबमिट कराया जाये। श्यामलाल पाल ने बताया कि प्रयागराज की इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा सीट पर 805 मतदाता लापता हो गये।

तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, मराठी और बंगाली सीखने का खर्च उठाएगी सरकार : योगी

मुख्यमंत्री ने नमो घाट पर काशी तमिल संगमम् के उद्घाटन पर की घोषणा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/वाराणसी

अमृत विचार : काशी और तमिलनाडु के ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधों को नई ऊंचाई देने वाला काशी तमिल संगमम् के चौथे संस्करण की मंगलवार को वाराणसी स्थित नमो घाट पर रंगारंग शुरुआत हुई। इस अवसपर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एलान किया कि तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, मराठी और बंगाली सीखने वालों का खर्च सरकार उठाएगी।

कार्यक्रम में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि और पुडुचेरी के उपराज्यपाल के कैलासनाथन, केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. एल मुरुगन, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक समेत तमिलनाडु से आए प्रतिनिधिमंडल, विद्वानों, कलाकारों और स्थानीय युवाओं ने लिया हिस्सा। अतिथियों ने शुभारंभ के दौरान कार्यक्रम से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया। मुख्यमंत्री योगी और केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने वेदमूर्ति देवव्रत महेश रेखे को सम्मानित किया। कार्यक्रम स्थल पर काशी और तमिलनाडु के पारंपरिक कलाकारों की संयुक्त प्रस्तुति ने वातावरण को उत्साहपूर्ण बना दिया। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि श्री रामेश्वरम, मदुरै धाम और कन्याकुमारी के दर्शन के लिए प्रदेश सरकार पर्यटन विभाग के माध्यम से विशेष यात्रा भी शुरू करेगी। आयोजन में 1400 से अधिक प्रतिनिधि तमिलनाडु से काशी पहुंचे हैं, जिनके लिए यह श्रृंखला स्थायी सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बनेगी। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि 'तमिल करकलाम' उत्तर और दक्षिण भारत की आत्मा को जोड़ने वाला अनोखा सांस्कृतिक सेतु है। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने वर्चुअली कार्यक्रम को संबोधित किया।

वाराणसी : काशी तमिल संगमम् कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन करते मुख्यमंत्री योगी, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि, पुडुचेरी के उपराज्यपाल के. कैलासनाथन, केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. एल मुरुगन, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक व अन्य।

मुख्यमंत्री की तरफ दौड़ा युवक, सुरक्षाकर्मियों ने दबोचा

नमो घाट पर मंगलवार को काशी तमिल संगमम कार्यक्रम के दौरान एक बड़ी सुरक्षा चूक सामने आई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे, इसी दौरान अचानक एक युवक सुरक्षा घेरा तोड़कर मंच तक पहुंच गया। सतर्क कमांडो ने तुरंत कार्रवाई करते हुए उसे दबोच लिया। एसीपी विदूष सक्सेना के अनुसार युवक का नाम जोगिंदर गुप्ता है, जिसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहती और वह शराब के नशे में था। परिवार ने भी उसकी मानसिक बीमारी की पुष्टि की है। पुलिस युवक से पूछताछ कर रही है और पूरे मामले की जांच की जा रही है कि वह सुरक्षा घेरा कैसे पार कर सका।

नई नीति | मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक में अधिकारियों को दिए निर्देश

बाई बैक पॉलिसी से खाली भूमि पर फिर लगेंगे उद्योग

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- जीरो एरर नीति को अपनाते हुए प्रदेश के औद्योगिक विकास की गति तेज करने का निर्देश

अमृत विचार : औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने मंगलवार को पिकप भवन में हुई उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिया कि वर्षों से खाली और निष्प्रयोज्य पड़ी औद्योगिक भूमि पर दोबारा उद्योग स्थापित करने के लिए बाई बैक पॉलिसी तैयार की जाए। अधिकारियों ने बताया कि इसका ड्राफ्ट तैयार कर लिया गया है और नीति जल्द अंतिम रूप लेगी।

बैठक में मंत्री नंदी ने कहा कि उद्योगों के संचालन और निवेश को बढ़ाने के लिए जीरो एरर नीति अपनाई जाए और न्यूनतम समय में अधिकतम परिणाम देने की दिशा में काम हो। बैठक में फैक्ट्री पंजीकरण, डेटा प्रणाली सुधार, औद्योगिक इकाइयों के संचालन में तेजी, औद्योगिक सर्वेक्षण की प्रगति, भूमि उपलब्धता, लॉजिस्टिक्स कनेक्टिविटी और औद्योगिक पार्कों के विकास की समीक्षा की गई। मंत्री ने निवेशकों के लिए भूमि उपलब्धता और प्रक्रियाओं को सरल बनाने के निर्देश दिए। मंत्री ने सर्वेक्षण पद्धति, आवंटित औद्योगिक भूखंडों के उपयोग व औद्योगिक क्लस्टरों में प्रगति संबंधी बिंदुओं पर स्पष्टीकरण मांगा। अधिकारियों ने कहा कि सर्वेक्षण की अंतिम समेकित रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत की जाएगी।

इज ऑफ डूइंग बिजनेस सुधारों, रैशनलाइज्ड सिंगल विंडो एक्ट, समयबद्ध अनुमोदन और फंक्शनलिटी सर्टिफिकेट प्रक्रिया पर भी चर्चा हुई। मंत्री नंदी ने कहा कि सभी विभाग राज्य को एक ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की ओर ले जाने में दक्षता और पारदर्शिता बनाए रखें।

बैठक में राज्य मंत्री जसवंत सिंह सैनी समेत अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव आलोक कुमार, मुख्य कार्यपालक अधिकारी इन्वेस्ट यूपी विजय किरण आनंद, सचिव एमएसएमई एवं निर्यात प्रोत्साहन विभाग प्रांजल यादव आदि उपस्थित रहे।

समीक्षा बैठक करते मंत्री नंद गोपाल नंदी और साथ में राज्य मंत्री जसवंत सिंह सैनी व अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव आलोक कुमार।

नहरों में पानी उपलब्ध न कराने पर कार्रवाई तय : स्वतंत्र देव

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- केन-बेतवा लिंक परियोजना एवं उप्र. इरिगेशन एवं ड्रेनेज बिल 2024 की समीक्षा

अमृत विचार : जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने निर्देश देते हुए कहा कि किसानों को सिंचाई के लिए समय से पर्याप्त मात्रा में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कराएं, इसमें किसी भी प्रकार के लापरवाही नहीं मिलनी चाहिए। साथ ही विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त मात्रा में नहरों में टेल तक अनिवार्य रूप से पानी की पहुंच सुनिश्चित कराई जाए। उपरोक्त कार्यो में किसी भी प्रकार की लापरवाही पाए जाने पर संबंधित के खिलाफ सख़्त कार्रवाई की जाएगी।

जल शक्ति मंत्री, मंगलवार को उदयगंज स्थित सिंचाई विभाग के मुख्यालय में विभागीय उच्च अधिकारियों के साथ केन बेतवा लिंक परियोजना एवं उत्तर प्रदेश इरिगेशन एवं ड्रेनेज बिल 2024 से संबंधित प्रस्तुतीकरण कार्यक्रम एवं समीक्षा बैठक में बोल रहे थे। उन्होंने निर्देश दिया कि नहरों में रोस्टर के हिसाब से पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कराएं, रोस्टर के हिसाब से पानी उपलब्ध ना कराए जाने की स्थिति में संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

अमृत विचार

बुधवार, 3 दिसंबर 2025

अपनी मुस्कान से दुनिया बदल दो। दुनिया को अपनी मुस्कान कभी मत बदलने दो।

–श्री श्री रविशंकर, आध्यात्मिक गुरु

सामयिक चेतावनी

विदेश मंत्री एस जयशंकर द्वारा जैविक खतरों से निपटने के लिए आधुनिक, मजबूत और समावेशी वैश्विक फ्रेमवर्क तैयार करने की अपील एक उभरते वैश्विक संकट की सामयिक चेतावनी है। कोविड-19 महामारी ने दुनिया को यह सिखा दिया कि बीमारियां अब भूगोल नहीं पहचानतीं और संक्रमण की रफ्तार और प्रभाव किसी मिसाइल से कम विनाशकारी नहीं होती। कोई भी दुश्मन देश इस तरह के रोगजनक वायरस, बैक्टीरिया से हमला कर कभी भी तबाही मचा सकता है। ऐसे में जैव-सुरक्षा को लेकर वैश्विक तैयारी, सहयोग और नियंत्रण तंत्र को मजबूत करना समय की अनिवार्यता है। जयशंकर का कहना कि जब तक जैव-सुरक्षा असमान रहेगी, वैश्विक सुरक्षा भी असमान और कमजोर रहेगी, इस वास्तविकता की ओर संकेत करता है कि यदि किसी क्षेत्र में महामारी का विस्फोट होता है और वहां की स्वास्थ्य प्रणाली नाकाम रहती है, तो उसका प्रभाव वैश्विक स्तर पर फैल सकता है।

समृद्ध देशों की उन्नत चिकित्सा प्रणाली भी तब तक सुरक्षित नहीं रह सकती जब तक बाकी दुनिया सुरक्षित न हो। यही कारण है कि ग्लोबल साउथ की कमजोर स्वास्थ्य सेवाएं और वैक्सीन तक असमान पहुंच आज विश्व-व्यापी जोखिम है। अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और दक्षिण एशिया के कई देशों में निगरानी, जांच प्रणाली ध्वस्त है। सक्षम लैब, आइसोलेशन और उपचार की क्षमता कम है और दवाओं-वैक्सीन की आपूर्ति राजनीतिक-आर्थिक कारणों से बाधित रहती है। इन स्थितियों में किसी जैविक हथियार का हमला किसी एक देश की सीमाओं से परे जाकर पूरी मानवता को जोखिम में डाल सकता है। अनेक देशों में आपातकालीन प्रतिक्रिया धीमी है, प्रशिक्षण अपर्याप्त है और अनुसंधान तथा जैव-प्रौद्योगिकी में निवेश बेहद कम। साफ है कि स्वास्थ्य ढांचा जितना कमजोर होगा, जैविक हमलों या आकस्मिक जैव-दुर्घटनाओं का खतरा उतना अधिक होगा। पहले तो जैविक बीमारियों का हथियारों के रूप में इस्तेमाल रोकने के लिए वैश्विक स्तर पर पारदर्शिता, निगरानी और बायो-सेफ्टी प्रोटोकॉल को बाध्यकारी बनाया जाना चाहिए। कम लागत में अत्यधिक विनाशकारी परिणाम पैदा करने वाले जैविक हथियार भारत और दुनिया के लिए बड़ा खतरा इसलिए भी हैं, क्योंकि देश के पड़ोस में कुछ देशों पर जैविक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने या गुप्त अनुसंधान से जुड़े आरोप समय-समय पर लगते रहे हैं। यह स्थिति भारत के लिए सावधानी बरतने, निगरानी बढ़ाने और वैज्ञानिक क्षमता सुदृढ़ करने की मांग करती है।

भारत के पास अनेक स्तरों पर मजबूत जैव-रक्षा क्षमता मौजूद है। परंतु यह भी सच है कि भविष्य की जैव-सुरक्षा चुनौतियां कहीं अधिक जटिल होंगी, जिनसे निपटने के लिए निरंतर निवेश, तकनीकी आधुनिकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी अनिवार्य है। विश्व और भारत दोनों को अब जैव-सुरक्षा निगरानी तंत्र मजबूत करना, उद्योग और अनुसंधान संस्थानों में बायो-एथिक्स लागू करना और महामारी-पूर्व तैयारी को सैन्य-स्तर की प्राथमिकता देना आवश्यक है। दुनिया को इस चेतावनी को गंभीरता से लेना होगा, ताकि जैविक हथियारों और महामारीजनित खतरों से सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

प्रसंगवश

हॉलमार्किंग के नए अध्याय से रुक सकेगा फ्रॉड

देश में सोने-चांदी के बढ़ते कारोबार और ग्राहकों में शुद्धता को लेकर बढ़ती जागरूकता को देखते हुए केंद्र सरकार अब एक बड़ा कदम उठाने जा रही है। अभी तक केवल सोने और चांदी के आभूषणों पर हॉलमार्किंग अनिवार्य थी, लेकिन अब सरकार इसे सोने-चांदी की ईंटों (Bars) और छड़ों (Bullion) पर भी लागू करने की तैयारी कर रही है। यह निर्णय न केवल उद्योग जगत के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि ग्राहकों के लिए भी भरोसे को और मजबूत करने वाला साबित होगा।

भारत में हॉलमार्किंग की शुरुआत भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) ने वर्ष 2000 में की थी। उस समय इसका उद्देश्य एक ही था, ग्राहकों को शुद्ध सोना और चांदी उपलब्ध कराना और बाजार में मिलावट तथा कम कैरेट वाले आभूषणों की बिक्री पर रोक लगाना। यह पहल काफी हद तक सफल भी रही और आज ज्वेलरी खरीदते समय ग्राहक सबसे पहले हॉलमार्क अवश्य देखते हैं। इस वजह से आभूषण उद्योग में एक पारदर्शी और विश्वसनीय प्रणाली विकसित हुई।

धनीश शर्मा

बरेली

हॉलमार्किंग की अवधारणा दुनिया में बहुत पुरानी है। इसका सबसे पहला औपचारिक रिकॉर्ड इंग्लैंड के लंदन शहर में मिलता है, जहां वर्ष 1300 में राजा एडवर्ड ने सोने-चांदी के सामान पर सरकारी शुद्धता-मोहर अनिवार्य कर दी थी। इसे दुनिया की पहली मानकीकृत हॉलमार्किंग प्रणाली माना जाता है। इस ऐतिहासिक परंपरा का उद्देश्य था कि उपभोक्ता को वही गुणवत्ता मिले, जिसके लिए वह भुगतान कर रहा है। आज भारत भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाने जा रहा है।

सरकार द्वारा अब सोने-चांदी की ईंटों और कच्चे माल पर हॉलमार्किंग लागू किए जाने से बाजार में कई सकारात्मक बदलाव आएंगे। अभी तक हॉलमार्किंग केवल ज्वेलरी तक सीमित थी, जिससे बड़े पैमाने पर सोना खरीदने-बेचने वाले व्यापारी और निवेशक पूरी तरह सुरक्षित महसूस नहीं कर पाते थे। छड़ों पर हॉलमार्किंग लागू होने के बाद व्यापारियों को भी भरोसे के साथ कारोबार करने में सुविधा होगी।

सोने-चांदी के व्यापार में अक्सर मिलावट, कम शुद्धता, नकली बार और गलत कैरेट का जोखिम बना रहता है। खासकर छड़ों के मामले में ग्राहकों को असली-नकली में अंतर समझना मुश्किल हो जाता है। सरकार का यह कदम इन सभी अनियमितताओं पर लगाम लगाने में मदद करेगा। एक समान मानक लागू होने से पूरे देश में सोने-चांदी की खरीद-फरोख्त और अधिक पारदर्शी होगी। साल 2000 में हॉलमार्किंग की शुरुआत का मुख्य मकसद था- शुद्धता की गारंटी, ग्राहकों को सही धातु मिले और व्यापारी गलत शुद्धता बताकर ज्यादा लाभ न कमा सकें। अब जब यह नियम कच्चे माल और ईंटों तक बढ़ाया जा रहा है, तो इससे बाजार में नकली और असली सोने-चांदी को लेकर कोई भ्रम नहीं रहेगा। उपभोक्ता को विश्वास होगा कि वह जो खरीद रहा है, वह प्रमाणित और असली है। इससे व्यापार करने वालों की जवाबदेही भी बढ़ेगी।

हॉलमार्किंग कीमती आभूषणों की शुद्धता का प्रमाण है। इसी प्रमाणिकरण से ग्राहकों को पता चलता है कि सोना कितना शुद्ध है। सोने के आभूषणों के असमान मानकों को देखते हुए ही जून 2021 से सोने के आभूषणों पर हॉलमार्क स्टांप अनिवार्य किया गया। पहली सितंबर 2025 से चांदी और कलाकृतियों के लिए इसे व्यापारियों की इच्छा पर छोड़ा गया था, जिसके बाद शानदार परिणाम देखने को मिले।

मोदी-पुतिन की मुलाकात से बेचैन अमेरिका

दिग्विजय सिंह

कानपुर

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुलाकात इसी हफ्ते फिर होगी। इस मुलाकात से अमेरिका की बेचैनी बढ़ गई है।

शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन (एससीओ) समिट के दौरान चीन में हुई मुलाकात के बाद रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मुलाकात इसी हफ्ते फिर होगी। इस दौरान स्पेशल और प्रिविलेज्ड स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप को मजबूत करने का विजन तय किया जाएगा। साथ ही आपसी फायदे के रीजनल और ग्लोबल मुद्दों पर विचारों का लेन-देन दोनों नेता करेंगे। इस दौरान कई अहम रक्षा सौदे भी होंगे। पुतिन का भारत दौरा दोनों देशों के रिश्तों को और मजबूत करेगा। साथ ही व्यापारिक, आर्थिक और रणनीतिक दृष्टि से भी काफी खास होगा। स्पेशल एंड प्रिविलेज्ड स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप को मजबूत करने की राह भी पुतिन का यह दौरा तय करेगा। यही वजह है कि अमेरिका और यूरोपियन यूनियन की नजर इस दौरे पर है।

राष्ट्रपति पुतिन के दौरे पर सबसे बड़ा रक्षा सौदा एस- 400 वायु रक्षा प्रणाली की खरीद से जुड़ा है। एस-400 भारत के 'सुदर्शन चक्र वाले चक्रव्यूह' का अहम हिस्सा है। एस-400 वायु रक्षा प्रणाली ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तानी मिसाइलों को हवा में ही नष्ट कर दिया था। इससे पाकिस्तान चाहकर भी किसी भी भारतीय भूभाग को क्षति नहीं पहुंचा सका था। इसके साथ ही सुखोई-57 लड़ाकू विमान की खरीद से जुड़ा सौदा भी हो सकता है। रूस का अत्याधुनिक सुविधाओं वाला यह लड़ाकू विमान जो युद्ध का नक्शा बदलने में सक्षम है।

4-5 दिसंबर को भारत आ रहे रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन 23वें भारत-रूस वार्षिक सम्मेलन में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ ही राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से भी उनकी मुलाकात होगी। उनके दौरे से पहले रूस की संसद स्टेट डूमा ने भारत के साथ कई अहम और बड़े सैन्य समझौते की पुष्टि की घोषणा कर दी है। संसद का यह फैसला दर्शाता है कि भारत और रूस के मजबूत रिश्तों के बीच कोई देश नहीं आ सकता है। भारत-रूस के रिश्ते पहले से ही मजबूत रहे हैं। हमारी रक्षा प्रणाली को मजबूत करने का मसला रहा हो या कोई अन्य मुद्दा। रूस हमेशा भारत के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहा। संयुक्त राष्ट्र संघ व अन्य मंचों पर भारत का पक्ष मजबूती से रखता है।

वीटो पॉवर के साथ संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी सदस्यता का प्रबल समर्थक रूस से भारत कारोबार न करे, इसके लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है, हालांकि भारत अमेरिका के दबाव में नहीं आया और अब भी बड़े पैमाने पर तेल खरीद रहा है। इससे भारत ने अमेरिकी राष्ट्रपति ही नहीं, बल्कि दुनिया के सभी देशों को बता दिया है कि भारत और रूस की दोस्ती सदाबहार है। उसे किसी टैरिफ के माध्यम से तोड़ा नहीं जा सकता है। अब इस रिश्ते को और मजबूती देने पुतिन भारत आ रहे हैं। उनके इस दौरे पर न सिर्फ अमेरिकी थिंक टैंक की निगाहें लगी हुई हैं, बल्कि यूरोपीय देश भी दौरे के दौरान होने वाले समझौतों के बारे में जानने को उत्सुक नजर आ रहे हैं।

अमेरिका भारत को F-35 फाइटर जेट बेचना चाहता है, जबकि रूस सुखोई-57 बेचने और टेक्नोलॉजी ट्रांसफर करने के लिए तैयार है। ऐसे में उम्मीद है कि पीएम मोदी से सुखोई-57 लड़ाकू विमान के सौदे पर समझौता हो सकता है। रूस ने भारत के साथ सुखोई-57 लड़ाकू विमान का भारत में ही सह-उत्पादन करने का ऑफर भी दे चुका है। अगर समझौता होता है तो फिर सुखोई-57 के जरिए रक्षा क्षेत्र में मेक इन इंडिया के सपने को नई उड़ान मिल सकती है। साथ ही भारतीय एयरफोर्स की ताकत में कई गुना इजाफा हो जाएगा।

इस वक्त रूस और युक्रेन के बीच जबरदस्त युद्ध हो रहा है। अमेरिका दोनों देशों के बीच शांति समझौता कराने की कोशिश भी कर रहा है। माना जा रहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पुतिन के बीच इस युद्ध को लेकर भी चर्चा हो सकती है, क्योंकि भारत लगातार युद्ध के बजाय बातचीत से मामले को सुलझाने पर जोर देता रहा है। पीएम मोदी पुतिन से पहले ही कह चुके हैं कि यह समय युद्ध का नहीं है। रूस के साथ होने वाले सैन्य समझौते से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारतीय सेना का दबदबा बढ़ जाएगा। हमारी नौसेना के तलवार- श्रेणी के फ्रिगेट और विमानवाहक पोत कठिन आर्कटिक परिस्थितियों में भी रूसी उत्तरी बेड़े के बंदरगाहों में लॉजिस्टिक सहायता प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही रूस की नौसेना भारतीय नौसैनिक अड्डों का उपयोग करके हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपनी मौजूदगी आसानी से बढ़ा सकेगी।

रूस ने फ्रांस, अमेरिका, सिंगापुर, वियतनाम और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ ऐसे लॉजिस्टिक समझौते बहुत पहले ही कर रखा है। रूस को भारत के दक्ष कार्मिकों की जरूरत है। ऐसे में अभी तक भारतीयों के लिए रूस में जो कोटा सीमित था, उसे बढ़ाने की तैयारी भी है। इस संबंध में भी रूस से समझौता हो सकता है, जो भारतीयों के लिए रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराएगा। रूस की मंशा है कि मशीनरी और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में भारतीय कुशल कामगार उसके देश में कार्य करें। अभी बड़े पैमाने पर वहां भारतीय लोग निर्माण और कपड़ा क्षेत्र से जुड़े उद्योगों में काम कर रहे हैं।

दोहा में भारत के श्रम मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने वहां के श्रम मंत्री से मुलाकात के दौरान इस मुद्दे पर चर्चा की थी। इस वार्ता के सकारात्मक परिणाम सामने आने की उम्मीद पुतिन के दौरे पर दिख रही है। पुतिन के दौरे को अमेरिका और यूरोपीय देश अलग चश्मे से देख रहे हैं। वे प्रचारित कर रहे हैं कि पुतिन का दौरा अमेरिका के विरुद्ध मोर्चेबंदी के लिए हो रहा है, जबकि ऐसा नहीं है। पीएम मोदी जो विश्व में शांति के पक्षधर हैं, उनका मकसद रूस से संबंध को और मजबूत करने के साथ ही भारतीय सीमाओं की सुरक्षा और कारोबार को और मजबूती देना है।

आमने

यह बलिया है। यहां के लोग अंग्रेजों के दलाल थे। दलाली का सिस्टम चल रहा है अभी भी, इसीलिए बलिया अभी भी बर्बाद है। नहीं तो बलिया बागी बलिया था। अंग्रेजों को मारकर भगाया था। देश को आजाद कराया था।

–संजय कुमार निषाद

काबीना मंत्री

उत्तर प्रदेश सरकार

सामने

जो व्यक्ति निषाद समाज को गुमराह करता है, वह बलिया जैसे ऐतिहासिक जनपद को 'दलाल' कह रहा है। बलिया की धरती 'बागी बलिया' के नाम से जानी जाती है, जहां 1942 में चित्तू पांडे की अगुवाई में आजादी का पहला बिगुल बजा था।

–कमलेश सिंह

जिलाध्यक्ष

करणी सेना-बलिया

शीतकालीन सत्रः टकराव व संवाद की चुनौती

कांतिलाल मांडोत

वरिष्ठ पत्रकार

पहली दिसंबर से आरंभ हुआ संसद का शीतकालीन सत्र, पहले ही दिन उस सौहार्द और गंभीरता से दूर दिखाई दिया, जिसकी एक लोकतांत्रिक संस्था से अपेक्षा की जाती है।

शीतकालीन सत्र हमेशा से राजनीतिक तापमान का आईना माना जाता रहा है। वर्ष के अंतिम महीने में जब केंद्र सरकार अपनी उपलब्धियों और नीतिगत प्रतिबद्धताओं को आगे बढ़ाने की कोशिश करती है, तब विपक्ष इसे जवाबदेही और जनहित के मुद्दों को उठाने के अवसर के रूप में देखता है। इसी उम्मीद और उत्सुकता के बीच पहली दिसंबर से आरंभ हुआ संसद का यह शीतकालीन सत्र, अपने पहले ही दिन उस सौहार्द और गंभीरता से दूर दिखाई दिया, जिसकी एक लोकतांत्रिक संस्था से अपेक्षा की जाती है। पहले दिन राज्यसभा की कार्यवाही दोपहर दो बजे तक स्थगित करनी पड़ी। कारण वही पुराना-हंगामा, नारेबाजी और तीखी राजनीतिक तल्खी।

सत्र शुरू होते ही प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष और सत्ता पक्ष दोनों को एक स्पष्ट संदेश दिया कि संसद का मंच राजनीति की लड़ाई का एरिना नहीं, बल्कि जनता के मुद्दों पर काम करने का स्थान है। उनकी टिप्पणी, सदन में ड्रामा नहीं, डिलेवरी चाहिए, में सिर्फ राजनीतिक व्यंग्य नहीं था, बल्कि कार्य संस्कृति पर गंभीर चिंता का संकेत भी झलक रहा था। पीएम मोदी ने विपक्ष से यह भी कहा कि चुनाव परिणामों में पराजय मिलना राजनीतिक जीवन का अंग है, लेकिन पराजय की निराशा में डूबकर सदन को ठप कर देना लोकतांत्रिक मर्यादा के अनुकूल नहीं है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि सरकार ट्रिप्स जैसी बहसों और विधायी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है, लेकिन यह तभी संभव है जब विपक्ष मजबूत मुद्दे उठाए व सहयोग की भावना दिखाए।

सत्र की शुरुआत से पहले ही एक बड़ा राजनीतिक तूफ़ान उस वक्त खड़ा हो गया, जब राज्यसभा के पूर्व सभापति जगदीप धनखड़ ने अचानक इस्तीफा दे दिया। मुख्यमंत्री, राज्यपाल और उपराष्ट्रपति जैसे पदों को संभाल चुके धनखड़ के इस निर्णय ने राजनीतिक हलचल बढ़ा दी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने इसे असामान्य कदम बताते हुए सवाल किया कि इतनी बड़ी संवैधानिक जिम्मेदारी छोड़ने के पीछे कौन-सा दबाव या परिस्थिति रही होगी! खड़गे की टिप्पणी पर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने तीखी प्रतिक्रिया दी और कहा कि अगर खड़गे जी को इस विषय में बहुत तकलीफ हो रही है, तो उन्हें डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

यह बयान दर्शाता है कि आने वाले दिनों में सत्ता और विपक्ष के बीच वाद-विवाद कैसे मोड़ ले सकता है। सत्र का एजेंडा बड़ा, लेकिन माहौल गर्म है। शीतकालीन सत्र पहली दिसंबर से 19 दिसंबर तक आयोजित होना है। कुल 15 बैठकें प्रस्तावित हैं और सरकार लगभग 10 विधेयक पेश करने की तैयारी में है। इनमें तंबाकू और पान मसाला पर सेस लगाने वाला बिल, दिवाला कानून में सुधार और जनविश्वास संशोधन जैसे महत्वपूर्ण विधायी प्रस्ताव शामिल हैं।

संसदीय समितियों को भी कई रिपोर्टें प्रस्तुत करने के लिए अतिरिक्त समय दिया गया है, लेकिन पहले ही दिन विपक्ष ने एसआईआर मुद्दे पर जोरदार हंगामा किया। इससे सरकार के विधायी कार्यक्रम पर अनिश्चितता के बादल मंडराते नजर आए। सरकार का आरोप है कि विपक्ष बिना पर्याप्त चर्चा के सिर्फ बाधा उत्पन्न करने की रणनीति अपना रहा है। वहीं विपक्ष का कहना है कि उसके सवालों का संतोषजनक उत्तर नहीं दिया जा रहा और सरकार संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा से बच रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने सदन में हो रहे व्यवधानों पर स्पष्ट अपील की। मेरी चिंता यह है कि सदन चले। जनता हम सब से काम की उम्मीद करती है।

सत्र की शुरुआत में सीपी राधाकृष्णन को राज्यसभा के नए सभापति के रूप में स्वागत किया गया।

केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने खड़गे पर आरोप लगाया कि उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति के लिए अनुचित शब्द बोले। यह आरोप भी सत्र के शुरुआत में तनाव का एक और सूत्र बन गया। विपक्ष के भीतर भी समानता नहीं, लेकिन भिन्न आवाजें सुनाई दी। हंगामे के इस माहौल में विपक्ष के भीतर भी अलग-अलग स्वर सुनाई दिए। गोगोई ने कहा कि अगर विपक्ष के मुद्दों को सत्र में उचित स्थान और चर्चा मिले, तो वे सरकार के सभी विधेयकों पर सहयोग करने को तैयार हैं। यह बयान संकेत देता है कि विपक्ष की मंशा केवल हंगामा करना नहीं है, बल्कि बहस और संवाद भी चाहता है। यदि उसे सम्मानजनक अवसर मिले।

हालांकि, इस बीच राहुल गांधी सदन से उस समय बाहर निकल गए, जब कार्यवाही हंगामे के कारण रुकावट का सामना कर रही थी। यह घटना भी राजनीतिक व्याख्याओं का विषय बनी। लोक जनशक्ति पार्टी के नेता चिराग पासवान ने विपक्ष के विरोध को लेकर व्यंग्यात्मक टिप्पणी की। हंगामा करने वाला अपनी छवि चमकाता है, लेकिन काम नहीं करता। पासवान के इस वक्तव्य ने सत्ता पक्ष की उस भावना को मजबूत किया, जिसमें वे कहते हैं कि विपक्ष सिर्फ नकारात्मक राजनीति कर रहा है और संसद के संचालन में बाधा डाल रहा है।

पहले दिन जिस प्रकार कार्यवाही बाधित हुई, उसने इस विवाद को फिर जन्म दिया कि क्या लगातार हंगामे के माध्यम से विपक्ष अपनी भूमिका को कमजोर कर रहा है, या यह उनके लिए मजबूरी है, क्योंकि सरकार उन्हें बोलने का पर्याप्त अवसर नहीं देती? सत्ता पक्ष का तर्क है कि हंगामा लोकतांत्रिक परंपराओं के खिलाफ है।

सोशल फोरम

सर्दियों के दौरान बर्फ में बदल जाता है वुड फ्रॉग

अमित कुमार

ब्लॉगर

सोचिए अगर इंसान ऐसा कर पाता, तो डॉक्टर की ज़रूरत ही नहीं रहती। एक पल में बर्फ बन जाओ और सीधी धूप लगते ही वापस 'ज़िंदा'! साइंस फिक्शन जैसा लगता है, लेकिन प्रकृति ने ये कमाल पहले से ही बना रखा है। उत्तरी अमेरिका और कनाडा के सर्द जंगलों में एक छोटा सा मेंढक रहता है वुड फ्रॉग (Wood Frog)। इसकी सुपरपावर पागल कर देने वाली है। इससे वैज्ञानिक भी हैरान हैं। जैसे ही तापमान शून्य से नीचे गिरता है। यह मेंढक जानबूझकर खुद को फ्रीज़ कर देता है।

शरीर का 70% पानी बर्फ बन जाता है। दिल की धड़कन बंद हो जाती है। सांस बंद। दिमाग की गतिविधि शून्य हो जाती है। स्पर्श करने पर पूरा शरीर लकड़ी जैसा कठोर लगता है। देखने में यह मरा हुआ लगता है, लेकिन सच में जिंदा रहता है! इसे वैज्ञानिक 'Living Dead' भी कहते हैं।

इसके खून में ग्लूकोज अचानक 100 गुना बढ़ जाता है, जो नेचुरल एंटीफ्रीज़ की तरह काम करता है। कोशिकाएं जमती नहीं, सिर्फ बाहर की बर्फ जमती है शरीर सुरक्षित रहता है। जैसे ही बसंत की पहली धूप आती है, ये मेंढक मिनटों में पिघलकर फिर से कूदने लगता है, मानो कुछ हुआ ही न हो! उसके बाद यह मेंढक सामान्य जीवन जीने लगता है।

सरीसृप वर्ग के कई और जीव शीत निद्रा में चले जाते हैं। छिपकली, सांप और दूसरे सामान्य मेंढकों में यह आम बात है। सर्दी आने से पहले वह खूब खा पीकर मोटे हो जाते हैं। सर्दी आते ही वह गहरी नींद में चले जाते हैं, लेकिन इनके उलट यह मेंढक 'फ्रीज' हो जाता है, जो अपने आप में काफी अद्भुत है।

प्रकृति का ये चमत्कार हर बार दंग कर देता है। जिंदगी कितनी जिद्दी हो सकती है? ये वुड फ्रॉग से बेहतर कोई नहीं सीखा सकता है।

–फेसबुक वाल से

सामयिकी

मानव घुसपैठ से आक्रामक हो रहे हैं वन्य जीव

उत्तराखंड के कुमाऊं और गढ़वाल मंडल में जंगल से लगे गांवों में बाघ, गुलदार, भालू और जंगली सुअरों के हमले बढ़ते जा रहे है। पिछले दो हफ्तों मे पिथौरागढ़ और पौड़ी के गांवों में भालू के हमले से कई लोग घायल हो गए हैं। वहीं कुछ गांवों में जंगली सुअरों के झुंड भी हिंसक होते देखे गए हैं। पिछले हफ्ते नैनीताल जनपद के रानीबाग गांव में शाम के समय दूध लेने जा महिला को सुअरों ने हमला कर घायल कर दिया। सुअरों द्वारा हमला करने की यह घटना नई है। अभी तक तो लोग बाघ और तेंदुओं के हमले से ही परेशान और भयभीत थे। अब भालू भी जंगल छोड़कर गांव में आकर लोगों पर हमला करने लगे हैं। बीते दिनों चमोली जनपद के पाब गांव में जंगल में घास लेने गई महिला को भालू ने बुरी तरह से घायल कर दिया। चमोली सहित रुद्रप्रयाग, पिथौरागढ़, नैनीताल आदि जिलों में भालू सक्रीय हैं और उनके द्वारा मानव पर हमले की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

दीपक नौगांई

लेखक

उत्तराखंड में हर साल वन्य जीव और मानव संघर्ष की घटनाएं सामने आती हैं, जिनमें बड़ी संख्या में लोग अपनी जान भी गंवा चुके हैं।

उत्तराखंड का अधिकांश भौगोलिक क्षेत्र वन हैं। यहां तकरीबन कुल भौगोलिक क्षेत्र के 71 फ़ीसदी क्षेत्र में वन हैं। हरिद्वार में राजाजी नेशनल पार्क और रामनगर में कॉर्बेट रिजर्व पार्क बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है और इन वन क्षेत्र के आसपास बड़ी संख्या में लोग निवास भी करते हैं, लेकिन देखा गया है कि जंगली जानवरों और मानव संघर्ष की घटनाएं इन्हीं क्षेत्रों में नहीं हो रहीं, बल्कि पूरे उत्तराखंड में फैल चुकी हैं। प्रदेश के 13 जिलों में से एक भी ऐसा नहीं है, जहां जंगली जानवरों के हमले से लोगों की मौत नहीं हुई हो।

पिछले 25 सालों में 1200 से ज्यादा लोगों की मौत जंगली जानवरों के हमले से हुई है। आंकड़े बताते हैं कि 2025 में अब तक 40 लोग बाघ, तेंदुए आदि हिंसक जंगली जानवरों द्वारा मारे गए हैं। वन्य जीव विशेषज्ञ बताते हैं कि जंगलों में छोटे जानवरों की संख्या बेहद कम हो गई है। पहले आसानी से जानवरों को शिकार मिल जाता था। जंगल में हिरन, कांकड़, घुरड़, खरगोश, जंगली मुर्गी आदि की संख्या कम हो गई है। नतीजन भोजन की तलाश में बाघ और तेंदुए गांव की ओर रुख कर रहे हैं।

चमोली, पौड़ी गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, नैनीताल, रामनगर, हरिद्वार, बागेश्वर, हल्द्वानी आदि स्थानों पर जंगलों से लगे गांवों में जंगली जानवर गधेरों, खेत-खलियानों को पार कर घरों की चौखट तक पहुंच कर लोगों और पालतू जानवरों पर हमला कर आतंक मचा रहे हैं। इन हमलों के बीच सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर बीते सालों में जंगली जानवरों के हमले क्यों बढ़ रहे हैं? दरअसल इसके लिए कहीं न कहीं हम मानव ही जिम्मेदार हैं। विकास के नाम पर हमने जहां-जहां पहाड़ खोद डाले हैं। जंगलों के पेड़ काटकर लंबी सड़के बना दी हैं।

सड़के बनीं तो जंगलों के किनारे गांव में पूंजीपति लोगों ने औने पौने दाम में लोगों से जमीन खरीद कर भवन, होटल और रिसॉर्ट बना डाले। फिर इन होटलों और रिसॉर्ट में कभी आतिशबाजी तो कभी डीजे बजने लगे। यानी वन्य जीवों के प्राकृतिक आवास पर हमारा हस्तक्षेप बढ़ता गया। वन्य जीवों पर इसका असर तो होना ही था। नकारात्मक असर हुआ। जंगल का मूल जीवन और उसकी इकोलॉजी डिस्टर्ब हुई। जानवर परेशान होने लगे और चिड़चिड़े हो गए। ऐसे में उन्हें जंगल छोड़कर गांव की ओर पलायन करना ही था। हमने उनके प्राकृतिक जीवन से छेड़छाड़ की तो उन्हें हम पर हमला करना ही था।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर,इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 117/एल/320-ए, नवीन नगर काकादेव, कानपुर नगर 208001 (उ.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- दिग्विजय सिंह*

0512-2548300 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2022/85730 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर होगा)।

कृष्ण भक्त मुस्लिम कवयित्री ताज

सगुण भक्ति के आराध्य देवताओं में कृष्ण का स्थान सर्वोपरि है। आधुनिक काल में भी कृष्ण भक्ति काव्य का सृजन हुआ है। कृष्ण के रूप सौंदर्य और लोक कल्याणकारी रूप का प्रभाव हिंदू कवियों पर ही नहीं वरन् मुस्लिम कवियों पर भी पड़ा। रसखान इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। कृष्ण की भक्ति में मुस्लिम महिलाएं भी सम्मिलित हैं। श्री गंगा प्रसाद 'अखौरी' विशारद द्वारा लिखित पुस्तक 'हिंदी के मुसलमान कवि' में अनेक मुस्लिम कवियों की कविताओं का उल्लेख मिलता है, परंतु कृष्ण भक्ति के संदर्भ में केवल 'ताज' कवयित्री का ही उल्लेख मिलता है।

अग्निज उपमन्यु
छात्र,हिंदू महाविद्यालय, दिल्ली

जब मनुष्य रूप में कृष्ण खुद प्रसाद देने आए

हिंदी साहित्य की कवत्रियों में मीरा, जहां भक्ति साधिकाओं का प्रतिनिधित्व करती है, वहीं ताज मुस्लिम साधिकाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। ताज कवयित्री का उल्लेख सर्वप्रथम शिव सिंह सेंगर द्वार संपादित 'शिव सिंह सरोज' में मिलता है। 'शिव सिंह सरोज' के मतानुसार इनका जन्म 1652 सन्त है, पर इनका उल्लेख पुल्लिंग रूप में मिलता है तथा मुंशी देवी प्रसाद ने 'महिला मधुवाणी' में इनका जन्म सन्त 1700 माना है। ताज नहा धोकर मंदिर में भगवान का नित्य प्रति दर्शन करती थीं और बाद में भोजन ग्रहण करती थीं। ऐसी जनश्रुति है कि एक दिन वैष्णवों ने उसे विधर्मी समझकर मंदिर में जाने से रोक दिया। ताज उस दिन उपवास करके मंदिर के आंगन में बैठी, कृष्ण नाम जपती रहीं। कहते हैं कि रात होने पर ठाकुर जी स्वयं मनुष्य का रूप धारण कर भोजन का थाल लेकर ताज के पास आए और उन्हें भोजन कराया। प्रातः काल जब वैष्णव आए, तो ठाकुर जी ने कहा कि उनसे कहना कि तुम लोगों ने मुझे कल ठाकुर जी का प्रसाद और दर्शन का सौख्य नहीं दिया, इससे आज रात ठाकुर जी स्वयं प्रसाद दे गए हैं और तुम लोगों को संदेश दे गए हैं कि ताज को परम वैष्णव समझो। इसके दर्शन और प्रसाद ग्रहण करने में रुकावट कभी मत डालो। नहीं तो ठाकुर जी तुम लोगों से नाराज हो जाएंगे। प्रातः काल सब वैष्णव को ताज ने रात की सारी बात बताई और भोजन का थाल भी दिखाया। वे सभी वैष्णव ताज के पैर पर गिरकर क्षमा प्रार्थना करने लगे। तबसे सबसे पहले ताज मंदिर में देव दर्शन करती थीं और फिर अन्य वैष्णव दर्शन करने जाते थे।

माधुर्य भाव की भक्ति

मथुरा निवासी श्री कविराज के मातानुसार ताज एक मुसलमान कवयित्री थीं और पंजाब की रहने वाली थीं। कृष्ण से प्रेम हो जाने पर कविता की ओर उसका ध्यान आकर्षित हुआ। ताज की रचनाएं मुक्तक रूप में प्राप्त होती हैं। पुस्तक रूप में इनका केवल एक ग्रंथ मिलता है, जिसमें 'बारह मासा' विषयक छप्पय कवित्त एवं कुंडलियां पाई जाती हैं। इन्होंने रसखान आदि मुसलमान भक्त कवियों की भांति कवित्त तथा सवैया शैली को अपनाया तथा उसमें उन्हें यथेष्ट सफलता भी मिली। ताज की भक्ति माधुर्य भाव की है। वैष्णव संप्रदायों में माधुर्य भाव की भक्ति को अन्य प्रकार की भक्ति पद्धतियों से अधिक श्रेष्ठ माना जाता है। ताज ने कृष्ण को प्रियतम के रूप में मानकर रचनाएं लिखी हैं।

कृष्ण के सौंदर्य का तो कहना ही क्या? गले में माल, नाक में मोती, कान में कुंडल और मस्तक पर लाल मुकुट शोभायमान है। यह अपने कृष्ण को अन्य देवताओं से न्यारा कहती हैं। अतः श्रीकृष्ण की भावना को उन्होंने परात्पर ब्रह्म के रूप में धारण किया है, जिसकी ज्योति में सभी नर-नारी और देवता प्रतिभाषित हैं। इसका हम एक उदाहरण देख सकते हैं- छैल जो छबीला सब रंग में रंगीला बड़ा/चित्त का अडीला कहूं देवतों से न्यारा है।

ताज ने कृष्ण के मात्रा छैल-छबीले रूप का स्मरण नहीं किया है, अपितु कृष्ण के लोकरंजनकारी रूप को भी चित्रित किया है। उसने सिद्धिदाता के रूप में गणेश की स्तुति भी की है। कृष्ण की मधुर रूप की अपेक्षा उनका ऐश्वर्य रूप अधिक प्रभावशाली बन पड़ा है। पतित उद्धारक गरिमामय अवतार रूप श्रीकृष्ण उसकी आस्था एवं विश्वास के विशेष पात्र हैं। हिंदू धर्म में प्रचलित रूढ़ियों का उन्होंने खंडन किया है, उनका भरोसा मात्र नंद के कुमार पर है। वे इतना कृष्णमय हो गई कि उन पर अन्य देवों का प्रभाव नहीं पड़ता। यह बात एक उदाहरण स्पष्ट होती है- काहू को भरोसो ताज, सब देवन के दूजे ताज। /मोको है भरोसो बस, एक नंद के कुमार को। इस प्रकार ताज की भक्ति भावना का आधार श्री कृष्ण का माधुर्य रूप है। प्रेम के अनेक उपमानों में उनकी भावनाओं का यह अवगुंठन अत्यंत अनुपम है। उन्होंने अगाध अनन्य सात्विक प्रेम का सुंदर और सटीक वर्णन प्रस्तुत किया है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। इतना ही नहीं कृष्ण के प्रति उनकी भावना में विश्वासजन्य समर्पण है। कालिंदी के तट पर स्थित निकुंज के बीच पंकज शय्या, प्रस्तुत कर राधा की प्रतीक्षा करते हुए कृष्ण तथा राधा की चंचलता पर अटकी हुई आंखें कल्पना जगत की सुंदर सृष्टि हैं। परंतु भावनाओं तथा वातावरण की लौकिकता में यहां काम की प्रधानता मिलती है। इनका उदाहरण निम्न है- कालिंदी के तीर नीर निकट कदंब कुंज/ मन कहुं इच्छा कीनों सेज सरोजन की। प्रेम साम्राज्य का अवर्ध रत्न है विरह। विरह तपाया हुआ प्रेम है। ताज के विरहणी रूप का मार्मिक चित्र मर्मस्पर्शी ही नहीं अप्रतिम भी है। ताज लिखती हैं- चैन नहीं मन में, मलीन सुनैन भरे जल में न तई है।/ताज कहे पर्थक यों बाल, ज्यों चंप की माल बिलाई गई है। अतः प्रतीक्षा की लंबी अवधि के बीच यह देखकर कि अभी रात्रि बहुत शेष है। परिणाम स्वरूप शून्य भवन में प्रज्ज्वलित प्रदीप का आलोक उसके अंगों प्रखर सूर्य की तरह तप्त करता है। उपर्युक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ताज की भक्ति माधुर्य भाव की है। मीराबाई की भांति यह भी कृष्ण को अपना प्रियतम या पति मानती थीं।

कविताओं में अलंकारों का प्रयोग

ताज ने श्रीकृष्ण के रूपांकन की ओर विशेष ध्यान दिया है। श्रीकृष्ण के रूपांकन में कवयित्री ने आभूषणों का भी उल्लेख किया है। कहीं-कहीं कवयित्री ने उनके अंग एवं आभूषणों के समन्वित सौंदर्य का चित्रण किया है। ताज के प्रस्तुत विधान में अप्रस्तुत का सौंदर्य दबने नहीं पता। उपमान सदैव उपमेय की श्रीवृद्धि में सहायक है। प्रेम संबंधी अनेक प्रसिद्ध उपमानों से उनकी भावनाओं का संबंध देखने योग्य है। ताज के काव्य में श्रृंगार और शांत रस की प्रधानता है। शांत रस के अंतर्गत अनेक संचारी भाव का स्वतंत्र अंकन कवयित्री की रचनाओं में प्राप्त होता है। यह संचारी भाव के सहायक होते हैं, जो भाव को सजीव बनाते हैं। ताज के काव्य की मुख्य भाषा ब्रजभाषा है, पर पंजाब की निवासी होने के कारण उनकी भाषा में पंजाबी शब्दों भी मिलते हैं। ताज की कविताओं में अलंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है। वह एक ऐसी संवेदनशील कवयित्री है, जो चमत्कार के चक्कर में न पड़कर भाव में डूब जाया करती हैं। माधुर्य गुण सुयुक्त होने के कारण उनकी कविताओं में अनुप्रास अलंकार का बाहुल्य मिलता है। मीरा की भांति ताज के काव्य का आधार है, इनका सर्वथा निजी अनुभव। दोनों ही की प्रेम साधना लोक-बाह्य थी, उसमें लोक और शास्त्र का विचार न था, प्रेम के प्रखर प्रभाव में लोक और वेद बह गए। लोक-लाज और कुलकानि बिसर गई, पथ -अपथ का डर छूट गया। रसखान सदृश मुसलमानों के विषय में जो बात भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कही थी, वही ताज के संबंध में भी समझनी चाहिए-'इन' मुसलमान हरि जनन पर कोटिन्ह हिन्दू वारिए। अपनी माधुर्य भक्ति के लिए ताज हिंदी साहित्य में सदैव चिरस्मरणीय रहेंगी।

रंग-तरंग

हॉर्नबिल महोत्सव

पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विरासत का जश्न

बीते सोमवार को नागालैंड की 63 वीं वर्षगांठ पर किसामा के नागा हेरिटेज विलेज में हॉर्नबिल फेस्टिवल के 26 वें संस्करण की शानदार शुरुआत हुई। दस दिवसीय आयोजित महोत्सव में नागालैंड की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता, विरासत और कलात्मक परंपराओं के मनाया जाता है। यह फेस्टिवल अब तक के सबसे बड़े इंटरनेशनल पार्टिसिपेशन के साथ शुरू हुआ, जिसमें छह पार्टनर देश- ऑस्ट्रिया, माल्टा, स्विट्जरलैंड, आयरलैंड, फ्रांस और यूनाइटेड किंगडम शामिल थे, साथ ही अरुणाचल प्रदेश स्टेट पार्टनर था।

'त्योहारों का त्योहार' (Festival of Festivals) के रूप में प्रसिद्ध, हॉर्नबिल महोत्सव नागालैंड का सबसे बड़ा वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम है। यह प्रत्येक वर्ष 1 दिसंबर से 10 दिसंबर तक आयोजित किया जाता है। यह महोत्सव केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह नागालैंड की समृद्ध जनजातीय विरासत को पुनर्जीवित करने, संरक्षित करने और बढ़ावा देने का एक शक्तिशाली मंच है। यह विविधता में एकता का एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस वर्ष महोत्सव में स्थिरता और 'ईको-फ्रेंडली' पर्यटन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसके अलावा जी-20 की सफलता के बाद, भारत सरकार इसे अपनी 'सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी' और 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में प्रदर्शित कर रही है, जिसमें कई अंतर्राष्ट्रीय राजनयिक और पर्यटक भाग ले रहे हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इसकी शुरुआत वर्ष 2000 में नागालैंड सरकार द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने और जनजातियों के बीच मेल-जोल बढ़ाने के लिए की गई थी। 1 दिसंबर 1963 को नागालैंड भारत का 16 वां राज्य बना था, इसलिए हर वर्ष 1-10 दिसंबर तक इसका आयोजन होता है।

नामकरण और प्रतीक

इसका नाम 'ग्रेट इंडियन हॉर्नबिल' (Great Indian Hornbill) पक्षी के नाम पर रखा गया है। यद्यपि यह पक्षी अब नागालैंड में कम दिखाई देता है, लेकिन नागा लोककथाओं और गीतों में इसका गहरा महत्व है। इसके पंखों का उपयोग पारंपरिक नागा हेडगियर (टोपी) में प्रतिष्ठा और वीरता के प्रतीक के रूप में किया जाता रहा है।

आर्ट गैलरी

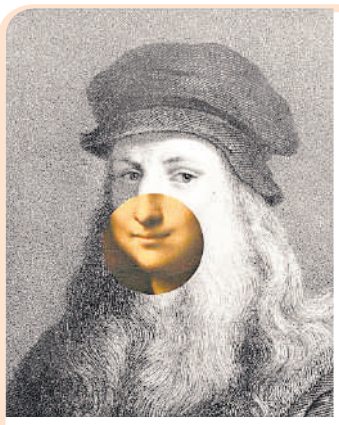

मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान

लियोनार्डो द विंची की पेंटिंग मोनालिसा दुनिया की सबसे चर्चित और रहस्यमयी पेंटिंग है। पेंटिंग की सबसे खास बात इसकी रहस्यमयी मुस्कान है। अलग-अलग कोणों से देखने पर यह बदलती हुई सी महसूस होती है। कुछ लोग मानते हैं कि इस पेंटिंग में विंची ने कुछ कोड छिपाकर रखे हैं। यही नहीं बहुत दिनों तक एक चर्चा यह भी रही कि इसका आधा हिस्सा महिला का है और बाकी आधा हिस्सा खुद विंची का है। इन रहस्यों ने इसे कला इतिहास में निरंतर शोध और आकर्षण का विषय बना दिया। मोनालिसा को 'ला जियोकोंडा' के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि इसे 1503 में शुरू किया गया और 1517 तक इस पर काम चला। हालांकि यह 1519 में विंची की मृत्यु के समय तक अधूरा रह गया था। यह चिनार की लकड़ी के एक पैनल पर ऑयल पेंट से बनाई गई है। विंची ने 'स्फुमाटो' (Sfumato) नाम की एक अभिनव तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें रंगों को सूक्ष्मता से मिश्रित किया जाता है, जिससे धुंधले किनारे और छाया के प्रभाव पैदा होते हैं। यह तकनीक पेंटिंग को जीवंत बनाती है। खासकर मोनालिसा की प्रसिद्ध रहस्यमयी मुस्कान और आंखों में, जो देखने वाले को हर कोण से खुद को देखे जाने का अहसास कराती है। रिसर्चर का मानना है कि यह पेंटिंग फ्लोरेंटाइन रेशम व्यापारी फ्रांसेस्को डेल जियोकोंडो की पत्नी लिजा घेरार्डिनी का चित्र है, इसलिए इसे 'मोनालिसा' (जिसका अर्थ श्रीमती लिसा है) कहा जाता है। यह पेंटिंग फ्रांस के पेरिस शहर में स्थित लूव्र संग्रहालय (Louvre Museum) में रखी गई है। इसे वहां बुलेटप्रूफ कांच के पीछे बहुत सेफ्टी के साथ रखा गया है। पेंटिंग की प्रसिद्धि में 1911 की चोरी का भी बड़ा हाथ है। लूव्र संग्रहालय से विंसेंजो पेरुगिया नाम के एक कर्मचारी ने इसे चुरा लिया था। इस चोरी ने दुनियाभर में सनसनी मचा दी और दो साल बाद पेंटिंग की बरामदगी ने इसे वैश्विक सुर्खियों में ला दिया। इस घटना ने मोनालिसा को कला जगत से निकालकर आम जनमानस तक पहुंचा दिया।

विंची के बारे में

लियोनार्डो द विंची 15 अप्रैल 1452 को पैदा हुए और दो मई 1519 को उनका निधन हो गया। इतालवी पुनर्जागरण के एक अद्वितीय 'पॉलीमैथ' (बहु-प्रतिभाशाली व्यक्ति) थे। उन्होंने चित्रकार, इंजीनियर, वैज्ञानिक, मूर्तिकार और वास्तुकार के रूप में अपनी छाप छोड़ी। उन्हें अक्सर 'पुनर्जागरण पुरुष' (Renaissance Man) का आदर्श उदाहरण माना जाता है, जिनकी असीमित जिज्ञासा की बराबरी केवल उनकी आविष्कारक शक्ति ही कर सकती थी। विंची की प्रसिद्धि मुख्य रूप से उनकी दो विश्व प्रसिद्ध पेंटिंग्स की वजह से ज्यादा है। 'मोनालिसा' और 'द लास्ट सपर'। इन उत्कृष्ट कलाकृतियों के अलावा, उनका 'विट्रुवियन मैन' (Vitruvian Man) का चित्र भी एक सांस्कृतिक प्रतीक बन गया। एक वैज्ञानिक और आविष्कारक के रूप में, विंची अपने समय से सदियों आगे थे। उनकी नोटबुक्स, जिन्हें वह उल्टे हाथ से लिखते थे, ताकि कोई आसानी से न पढ़ सके, शरीर रचना विज्ञान, यांत्रिकी, खगोल विज्ञान और वनस्पति विज्ञान पर विस्तृत नोट्स और रेखाचित्रों से भरी हुई है। उन्होंने उड़ने वाली मशीनों (हेलीकॉप्टर और हवाई जहाज के शुरुआती कॉन्सेप्ट), बख्तरबंद वाहनों (टैंक) और पैराशूट जैसे कई उपकरणों की अवधारणा दी। उनके कई डिजाइन उनके जीवनकाल में कभी निर्मित या व्यावहारिक नहीं हुए, लेकिन उनके विचारों और वैज्ञानिक अवलोकन ने बाद की पीढ़ियों के कलाकारों और वैज्ञानिकों को गहराई से प्रभावित किया।

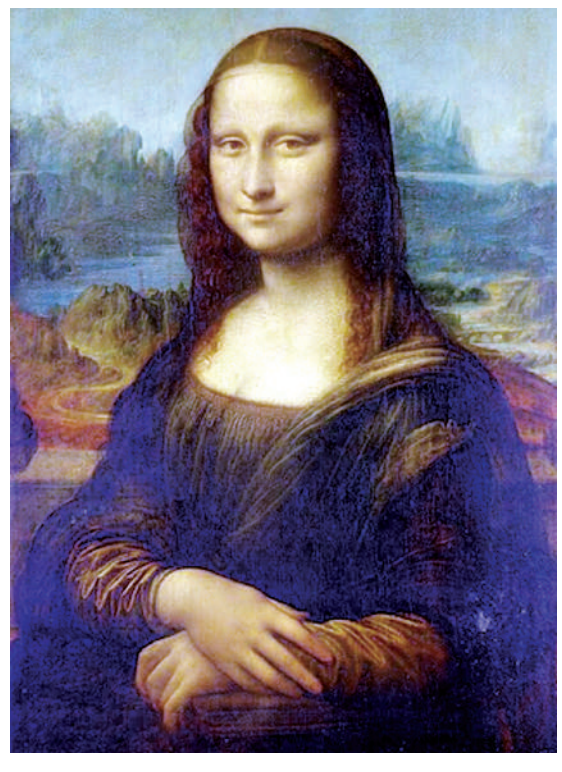

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	85,138.27	26,032.20
गिरावट	503.63	143.55
प्रतिशत में	0.59	0.55

सोना 1,31,530 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,81,360 प्रति किलो

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 3 दिसंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनिस ब्रीफ

इंडिगो पर इनपुट टैक्स क्रेडिट मामले में 117 करोड़ रुपये का जुर्माना

नई दिल्ली। इंडिगो ने मंगलवार को कहा कि उस पर इनपुट टैक्स क्रेडिट से संबंधित मामले में 117.52 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया है और एयरलाइन इस आदेश को चुनौती देगी। यह जुर्माना केरल के सीजीएसटी कोच्चि के संयुक्त आयुक्त (केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क) ने लगाया है। इंडिगो ने शेयर बाजार को बताया कि यह जुर्माना 2018-19 से 2021-22 की अवधि से संबंधित है। इसमें कहा गया, विभाग ने कंपनी द्वारा लिए गए इनपुट टैक्स क्रेडिट को अस्वीकार कर दिया है और कर मांग आदेश के साथ जुर्माना भी लगाया है।

अहमदाबाद हवाईअड्डे से आभूषण पार्सल के आयात निर्यात की अनुमति

नई दिल्ली। सरकार ने अहमदाबाद हवाईअड्डे से व्यक्तिगत रूप से रत्न एवं आभूषण पार्सल के आयात-निर्यात की अनुमति दी है। वाणिज्य मंत्रालय की एक अधिसूचना में यह जानकारी दी गई। इस सूची में पहले से दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद और जयपुर हवाई अड्डे शामिल हैं। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने कहा कि अब अहमदाबाद हवाईअड्डे से यात्री अपने साथ रत्न एवं आभूषण पार्सल का आयात और निर्यात कर सकते हैं।

रामकृष्णन चंदर ने एलआईसी के एमडी का पदभार संभाला

नई दिल्ली। रामकृष्णन चंदर को एक दिसंबर, 2025 को भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के प्रबंध निदेशक के पद पर पदोन्नत किया गया है। एलआईसी ने कहा कि उन्हें एक दिसंबर, 2025 की भारत सरकार की अधिसूचना के तहत प्रबंध निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया था। चंदर वर्ष 1990 में एक सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में एलआईसी में शामिल हुए और उन्होंने वरिष्ठ मंडल प्रबंधक, विपणन और पेंशन और समूह योजनाओं के क्षेत्रीय प्रबंधक और अंतर्राष्ट्रीय संचालन के लिए एलआईसी की रणनीतिक व्यापार इकाई के कार्यकारी निदेशक सहित कई प्रमुख पदों पर काम किया है।

रूस भारी व्यापार घाटे पर भारत की चिंताओं को दूर करने के लिए तैयार

क्रेमलिन के प्रवक्ता कहा- मॉस्को समस्या को दूर करने को नई दिल्ली के साथ कर रहा काम

नई दिल्ली, एजेंसी

क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने कहा है कि रूस को भारी व्यापार घाटे को लेकर भारत की चिंताओं की पूरी जानकारी है और मॉस्को इस 'समस्या' को दूर करने के लिए नई दिल्ली के साथ मिलकर काम कर रहा है। पेसकोव ने भारतीय पत्रकारों के लिए आयोजित एक ऑनलाइन संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कई मुद्दों पर बात की, जिनमें यूक्रेन में अमेरिकी शांति योजना, रूसी कच्चे तेल पर अमेरिकी प्रतिबंध और भारत को रूसी रक्षा प्लेटफॉर्म एवं प्रौद्योगिकी की आपूर्ति शामिल है।

पेसकोव ने वैश्विक व्यापार की एक नई व्यवस्था की आवश्यकता पर जोर दिया, जहां भुगतान प्रणाली (डॉलर-आधारित व्यापार) का उपयोग एक 'राजनीतिक उपकरण' के रूप में ना किया जाए। हालांकि यह बयान परोक्ष तौर पर अमेरिका पर लक्षित था, लेकिन पेसकोव ने यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने के लिए अमेरिका की ओर से किए गए नवीनतम मध्यस्थता प्रयासों को बहुत प्रभावी बताते हुए उनकी प्रशंसा भी की। अमेरिकी वार्ताकार स्टीव विटकॉफ की पुतिन से मुलाकात से कुछ घंटे पहले उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि यह सफल होगा। हम इसमें योगदान देने के लिए तैयार हैं।

पेसकोव ने यह संवाददाता सम्मेलन राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की चार और पांच दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ वार्षिक भारत-रूस शिखर सम्मेलन के लिए नई दिल्ली यात्रा से पहले एक पूर्वावलोकन के तौर पर आयोजित की।

पेस्कोव ने कहा कि भारत के साथ व्यापार असंतुलन के बारे में रूस अवगत है और उससे आयात बढ़ाने पर काम कर रहा है। उन्होंने रूसी तेल की बिक्री पर अमेरिकी प्रतिबंध को अवैध बताया। उन्होंने कहा कि इस समय दोनों देशों के बीच कुल व्यापार 63 अरब डॉलर का है जिसे साल 2030 तक बढ़ाकर 100 अरब डॉलर का करने का लक्ष्य है। उन्होंने स्वीकार किया कि दोनों देशों के बीच वास्तव में व्यापार असंतुलन है और कहा रूस भारत से आयात बढ़ाने के उपायों पर विचार कर रहा है, सिर्फ वस्तु व्यापार नहीं सेवा व्यापार भी। पुतिन की भारत यात्रा से एक दिन पहले बुधवार को आयातकों के एक फोरम का आयोजन किया जायेगा जिसमें इस मुद्दे पर भी चर्चा होगी। उन्होंने कहा, हम भारत में अपने समकक्षों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं ताकि भारत से व्यापार बढ़ाया जा सके।

अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद भारत का रूसी तेल आयात एक तिहाई घटा, दिसंबर में और कमी होने का अनुमान

नई दिल्ली। अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद भारत का रूसी तेल आयात लगभग एक तिहाई घट गया है। विश्लेषकों का अनुमान है कि दिसंबर में आयात और कम होगा, क्योंकि रिफाइनरी कंपनियां प्रतिबंधों से बचने के लिए वैकल्पिक स्रोतों का रुख कर रही हैं। डेटा विश्लेषण कंपनी केप्लर के अनुसार नवंबर में रूस से भारत का कच्चा तेल आयात औसतन 18 लाख बैरल प्रतिदिन रहा और कुल कच्चे तेल आयात में इसकी हिस्सेदारी 35 प्रतिशत से अधिक थी। इससे पहले अक्टूबर में यह आंकड़ा 15-16 लाख बैरल प्रतिदिन था। माना जा रहा है कि नवंबर का आयात पांच महीनों में सबसे अधिक था, क्योंकि प्रतिबंध लागू होने की समयसीमा 21 नवंबर से पहले आयात बढ़ाया गया। केप्लर के प्रमुख शोध विश्लेषक सुमित रितोलिया ने कहा, '21 नवंबर से पहले आयात 19-20 लाख बैरल प्रतिदिन के करीब था, क्योंकि खरीदार समयसीमा से पहले माल ला रहे थे। इसके बाद मात्रा कम हो गई। ऐसा लगता है कि रिफाइनरियों ने प्रतिबंध लागू होने से पहले कच्चे तेल का स्टॉक कर लिया। उन्होंने बताया कि इसके बाद आयात घटकर लगभग 12.7 लाख बैरल प्रतिदिन रह गया, जो मासिक आधार पर 5.7 लाख बैरल प्रतिदिन की कमी दर्शाता है।

तीसरे दिन भी गिरावट, 504 अंक फिसला सेंसेक्स

मुंबई, एजेंसी

प्रमुख बैंकों और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में बिकवाली के बीच विदेशी निवेशकों ने की निकासी

प्रमुख बैंकों और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में बिकवाली के बीच विदेशी संस्थागत निवेशकों की लगातार निकासी से स्थानीय शेयर बाजार मंगलवार को लगातार तीसरे दिन नुकसान में रहे। सेंसेक्स में करीब 504 अंक जबकि निफ्टी में 144 अंक की गिरावट रही।

विश्लेषकों ने कहा कि औद्योगिक उत्पादन के खराब आंकड़ों और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये के रिकॉर्ड निचले स्तर तक गिर जाने से भी निवेशक धारणा प्रभावित हुई। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 503.63 अंक यानी 0.59 प्रतिशत टूटकर 85,138.27 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 588.9 अंक गिरकर 85,053 के स्तर तक आ गया था। सोमवार को यह कारोबार के दौरान 86,159.02 अंक के अपने रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद गिरकर बंद हुआ था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का 50 शेयरों वाला मानक सूचकांक निफ्टी भी 143.55 अंक यानी 0.55 प्रतिशत फिसलकर 26,032.20 अंक पर बंद हुआ।

रुपया लुढ़ककर पहली बार 90 प्रति डॉलर

मुंबई। रुपये पर मंगलवार को भारी दबाव देखा गया और यह पहली बार 90 रुपये प्रति डॉलर तक लुढ़क गया। भारतीय मुद्रा लगातार चौथे दिन टूटी है। मंगलवार को यह 17 पैसे टूटकर 89.70 रुपये प्रति डॉलर पर खुला और एक समय 90 रुपये प्रति डॉलर तक टूट गया। अंत में यह 43.50 पैसे नीचे 89.9650 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ। रुपया सोमवार को आठ पैसे गिरकर 89.53 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। कारोबारियों ने बताया कि दुनिया की अन्य प्रमुख मुद्राओं के बास्केट में डॉलर में रही तेजी से रुपये पर दबाव पड़ा। साथ ही घरेलू शेयर बाजार की तेजी ने भी इसकी गिरावट में योगदान दिया।

सोना 1,670 रुपये टूटा, चांदी 4,360 रुपये तेज

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कमजोर कारोबार के बीच मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोने की कीमत 1,670 रुपये टूटकर 1,31,530 रुपये प्रति 10 ग्राम रही। अखिल भारतीय सर्राफा संघ के मुताबिक पिछले कारोबारी सत्र में 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने की कीमत 1,33,200 रुपये प्रति 10 ग्राम रही थी। हालांकि, चांदी में लगातार छठे दिन तेजी बनी रही और यह 4,360 रुपये बढ़कर 1,81,360 रुपये प्रति किलोग्राम (सभी टैक्स) हो गई। एचडीएफसी सिक्योरिटीज में वरिष्ठ विश्लेषक (कमोडिटीज), सौमिल गांधी ने कहा, पिछले सत्र में कीमतें कई सप्ताह के उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद कारोबारियों की मुनाफावसूली से मंगलवार को सोने में गिरावट आई।

स्टार टेलीविजन का जियोस्टार में विलय पूरा

मुंबई। मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज ने अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली इकाई स्टार टेलीविजन प्रोडक्शंस का स्टार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में विलय पूरा करने की घोषणा की। विलय के बाद नई कंपनी जियोस्टार इंडिया के नाम से जानी जाएगी।

नई चुनौतियों से निपटने के लिए वैश्विक सहयोग की जरूरत

ग्लोबल फोरम प्लेनरी बैठक में वित्त मंत्री ने किया डिजिटलीकरण और कर सूचना के आदान-प्रदान का जिक्र

नई दिल्ली, एजेंसी

● राजस्व सचिव अरविंद श्रीवास्तव ने मजबूत डेटा की गोपनीयता प्रणाली पर दिया जोर

भारत ने अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण और क्रिप्टो एवं स्टेबलकॉइन जैसे नए वित्तीय उत्पादों के उद्भव से उत्पन्न नई चुनौतियों से निपटने की समन्वित कार्रवाई के लिए मंगलवार को वैश्विक सहयोग का आह्वान किया और देशों के बीच सूचनाओं का समय पर आदान-प्रदान सुनिश्चित करने पर बल दिया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने यहां 18वीं 'ग्लोबल फोरम प्लेनरी' बैठक का उद्घाटन करते हुए कहा कि विभिन्न क्षेत्रों के बीच कर सूचनाओं का आदान-प्रदान सुनिश्चित करने के लिए कृत्रिम मेधा (एआई) जैसे प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग किया जाना चाहिए जिससे मापनीय परिणाम हासिल होंगे।

सीतारमण ने कहा, भविष्य में नई चुनौतियां सामने खड़ी हैं जिन पर मिलकर ध्यान देने की जरूरत है। अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण, नए वित्तीय उत्पादों के उद्भव एवं लाभकारी स्वामित्व की उभरती संरचनाओं के लिए विभिन्न न्याय-क्षेत्रों के बीच निरंतर सहयोग सीतारमण ने कहा, कर प्रणालियों की निष्पक्षता, स्थिरता और ईमानदारी में जनता के विश्वास पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

इस मौके पर राजस्व सचिव अरविंद श्रीवास्तव ने कहा कि देशों को मजबूत डेटा गोपनीयता प्रणाली सुनिश्चित करने की दिशा में काम करने की जरूरत है। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय मानकों के तहत साझा की गई जानकारी का प्रभावी ढंग से उपयोग भी सुनिश्चित करना होगा।

उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों को डिजिटल अर्थव्यवस्था कराधान और 'क्रिप्टो संपत्ति सूचना ढांचा' सहित नई चुनौतियों के अनुकूल बनाना होगा। इसके लिए प्रौद्योगिकी नवाचार एवं समन्वित कार्रवाई दोनों की जरूरत होगी। श्रीवास्तव ने कहा कि पिछले कुछ वर्ष में वैश्विक मंच ने वैश्विक कर परिदृश्य में बैंकिंग गोपनीयता एवं सीमित सहयोग से लेकर पारदर्शिता तथा सूचना आदान-प्रदान तक बदलाव लाने में मदद की है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग को दिए जाएं वैधानिक अधिकार

नई दिल्ली, एजेंसी

● संसदीय समिति ने की सिफारिश कहा- इससे विश्वसनीयता बढ़ेगी

संसद की एक समिति ने मंगलवार को वैधानिक अधिकार के साथ एक मजबूत, स्वतंत्र राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (एनएससी) की जरूरत पर जोर दिया। वित्त पर संसद की स्थाई समिति ने कहा कि ऐसा करने से सरकारी आंकड़ों की विश्वसनीयता सुनिश्चित होगी।

समिति ने सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय से संबंधित 'एनएससी के कार्य-निष्पादन की समीक्षा' पर अपनी 27वीं रिपोर्ट मंगलवार को संसद में पेश की। रिपोर्ट में कहा गया है कि आधिकारिक और निजी आंकड़ों में विसंगतियों के कारण एकसमान मानकों के अभाव में जनता का भरोसा कम हो रहा है। समिति ने सिफारिश की है कि एनएससी को नोडल एजेंसी के रूप में सशक्त बनाया जाए ताकि वह पद्धतियां निर्धारित कर सके, डेटा प्रक्रियाओं में समन्वय स्थापित कर सके और एक स्थायी तकनीकी समिति के जरिये निजी एजेंसियों तथा विशेषज्ञों को शामिल कर सके। समिति ने कहा, एनएससी को वैधानिक अधिकारों के साथ एक मजबूत, स्वतंत्र राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग बनाने और उसे सांख्यिकी का नोडल राष्ट्रीय निकाय बनाने की जरूरत है ताकि सरकारी आंकड़ों की विश्वसनीयता बनी रहे।

समिति ने राष्ट्रीय सांख्यिकी प्रणाली में एआई को एकीकृत करने, डेटा की दक्षता, सटीकता और समयबद्धता बढ़ाने तथा कार्यबल की क्षमता निर्माण पर जोर दिया। रिपोर्ट में साथ ही एआई के जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक ढांचा और दिशानिर्देश बनाने की आवश्यकता बताई।

राष्ट्रीय

आपराधिक मामले में जमानत देने के लिए समानता एकमात्र आधार नहीं

शीर्ष कोर्ट ने कहा- अपराध में शामिल हालात पर ध्यान दिए बगैर नहीं दी जा सकती जमानत

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम निर्देश : केरल में एसआईआर की समय सीमा बढ़ाने पर विचार करे निर्वाचन आयोग

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को निर्वाचन आयोग से कहा कि वह केरल में जारी एसआईआर के तहत गणना-प्रपत्र जमा करने की अंतिम तिथि 11 दिसंबर को एक सप्ताह और बढ़ाने पर विचार करे। सीजेआई सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने इस दलील पर ध्यान दिया कि केरल में स्थानीय निकाय चुनाव नौ और 11 दिसंबर को होंगे तथा मतगणना 13 दिसंबर को समाप्त होगी। पीठ ने इस तथ्य का भी संज्ञान लिया कि राज्य में स्थानीय निकायों के लिए चुनाव प्रक्रिया में लगभग 1.76 लाख राज्य सरकार के कर्मचारी लगे हुए हैं और इसलिए, उन्हें चुनाव निकाय द्वारा निर्धारित समय सीमा 11 दिसंबर तक गणना-प्रपत्र जमा करने में कठिनाई हो सकती है।

उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि भले ही कैदियों को राहत देने के लिए अदालतें 'जमानत नियम है, और जेल अपवाद' के सिद्धांत को मानती हैं, लेकिन समानता ही एकमात्र आधार नहीं है जिस पर आपराधिक मामलों में आरोपी को जमानत दी जा सकती है। न्यायमूर्ति संजय करोल और न्यायमूर्ति एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा कि जमानत की राहत उस अपराध में शामिल हालात पर ध्यान दिए बिना नहीं दी जा सकती, जिसके लिए आरोपी व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है।

पीठ ने इस टिप्पणी के साथ इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा हत्या के एक मामले में आरोपी को दी गई जमानत को रद्द कर दिया। उसे सिर्फ इस आधार पर जमानत दी गई थी कि सहआरोपी को भी राहत दी गई है। शीर्ष अदालत ने 28 नवंबर के फैसले में कहा, जमानत को अक्सर नियम और जेल को अपवाद कहा जाता है। इस बात पर बहुत ज्यादा जोर नहीं दिया जा सकता। साथ ही, इसका मतलब यह नहीं है कि जमानत की राहत उस अपराध में शामिल हालात पर ध्यान दिए बिना दी जानी चाहिए जिसके लिए आरोपी व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पीठ ने कहा, इस संबंध में यह ध्यान रखना होगा कि जमानत देते समय अदालत को कई पहलुओं पर विचार करना होता है। इस न्यायालय ने इतने सारे फैसले दिए हैं, जिनमें ध्यान में रखने लायक जरूरी बातें बताई गई हैं। पीठ ने कहा कि हाईकोर्ट ने आरोपी को जमानत देने में सभी जरूरी प्रासंगिक बातों पर विचार नहीं किया। उसने कहा कि ऐसा लगता है कि हाईकोर्ट ने त्रुटिपूर्ण तरीके से सिर्फ समानता के आधार पर जमानत दे दी, जिसे उसने सीधे तौर पर इस्तेमाल का एक तरीका समझ लिया, जबकि समानता का मकसद आरोपी की भूमिका पर ध्यान देना होता है, न कि एक ही अपराध का होना ही आरोपियों के बीच एकमात्र समानता थी।

शीर्ष अदालत ने कहा कि कैम्ब्रिज शब्दकोश में 'पैरिटी' शब्द को 'समानता' के तौर पर, खासकर वेतन या पद की बराबरी' के तौर पर परिभाषित किया गया है। शीर्ष अदालत ने उत्तर प्रदेश के एक गांव में हत्या के एक मामले में यह आदेश दिया, जो गांव वालों के बीच कहासुनी के कारण हुई थी।

बर्खास्त सफाईकर्मियों को एक घंटे में बहाल करे यूपी सरकार

नई दिल्ली। शीर्ष न्यायालय ने मंगलवार को अदालत के समक्ष बाल तस्करी का मुद्दा उठाने पर वाराणसी नगर निगम में संविदा सफाईकर्मी के रूप में कार्यरत पति-पत्नी को बर्खास्त किए जाने पर कड़ी आपत्ति जताई और उत्तर प्रदेश सरकार को एक घंटे के भीतर दोनों सफाई कर्मचारियों को बहाल करने का निर्देश दिया। न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ को वरिष्ठ अधिवक्ता अपर्णा भट्ट ने बताया कि पिंकी ने यह आरोप लगाते हुए मामला दायर किया है कि उसे और उसके पति को संविदा नियोक्ता ने नौकरी से बर्खास्त कर दिया है। पीठ ने उत्तर प्रदेश के वकील से कहा, हम चाहते हैं कि उन्हें एक घंटे के भीतर बहाल कर दिया जाए, अन्यथा संबंधित अधिकारी को निलंबित कर दिया जाएगा। हम अद्यतन स्थिति जानना चाहते हैं। सिर्फ इसलिए अधिकारी नाराज हो गए क्योंकि उन्होंने अदालत का दरवाजा खटखटाया। हम इसे हल्के में नहीं लेंगे। पीठ ने वकील से कहा कि वह संबंधित अधिकारियों को फोन करें और अदालत को उनकी बहाली के बारे में सूचित करें। पिंकी के एक वर्षीय बच्चे को वाराणसी के नदेसर कैंट से उस समय अगवा कर लिया गया, जब वह उसके बगल में सो रहा था। यह अपहरण एक संगठित अंतरराज्यीय बाल-तस्करी गिरोह के सदस्यों ने किया था।

बाल तस्करी का मुद्दा उठाने पर कर दिया गया था बर्खास्त

दिल्ली दंगा — सत्ता परिवर्तन अभियान का पुलिस का दावा आरोपपत्र में नहीं: गुलफिशा

फरवरी 2020 के दंगों के मामले में जमानत का अनुरोध कर रही कार्यकर्ता गुलफिशा फातिमा ने उच्चतम न्यायालय में कहा कि उसे अनंतकाल तक हिरासत में नहीं रखा जा सकता है। उसने यह भी कहा कि समन्वित सत्ता परिवर्तन अभियान के दिल्ली पुलिस के दावे का उसके आरोपपत्र में कोई उल्लेख नहीं है। फातिमा की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी ने न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति एन वी अंजारिया की पीठ को बताया कि गुलफिशा ने छह साल का वक्त जेल में बिताया है और उन्होंने मुकदमे में देरी को आश्चर्यजनक और अभूतपूर्व बताया।

बिना सुनवाई मुझे बता दिया आतंकवादी: शरजील

कार्यकर्ता शरजील इमाम ने उच्चतम न्यायालय में जमानत अर्जी पर सुनवाई के दौरान उन्हें किसी पूर्ण सुनवाई या दोषसिद्धि के बिना ही खतरनाक बौद्धिक आतंकवादी करार दिए जाने पर नाराजगी जताई। इमाम की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ दवे ने कहा, मैं कहना चाहूंगा कि मैं आतंकवादी नहीं हूं, जैसा कि पुलिस ने मुझे कहा है। मैं राष्ट्रविरोधी नहीं हूं, जैसा कि राज्य ने कहा है। मैं इस देश का नागरिक हूं, जन्म से नागरिक हूं और मुझे अब तक किसी भी अपराध के लिए दोषी नहीं ठहराया गया है।

पीलिया फैलने की बात छिपाने के कारण वीआईटी में हुई थी हिंसा

भोपाल। मध्यप्रदेश के सीहोर जिले में वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (वीआईटी) के परिसर में 25 नवंबर को हुई हिंसा, प्रबंधन की पीलिया फैलने की बात छिपाने की कोशिश, खाने की खराब गुणवत्ता की शिकायतों को नजरअंदाज करने और विद्यार्थियों के साथ बदसलूकी का नतीजा थी। तीन सदस्यीय जांच समिति की रिपोर्ट पर मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा विभाग ने संस्थान के कुलगुरु को कारण बताओ नोटिस जारी किया है और सात दिनों के अंदर जवाब मांगा है।

एक अधिकारी ने मंगलवार को बताया कि नोटिस का जवाब न देने पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। वीआईटी के भोपाल परिसर के रजिस्ट्रार ने कहा कि नोटिस मिल गया है और सरकार को जवाब दिया जाएगा। कोठरी में वीआईटी परिसर में करीब 4,000 विधार्थियों ने खाने-पीने की खराब गुणवत्ता और दूसरे मुद्दों को लेकर हिंसक प्रदर्शन किया था। उन्होंने इमारत और गाड़ियों में तोड़फोड़ और आगजनी की थी।

● सरकार ने कुलगुरु को नोटिस देकर सात दिन में मांगा जवाब

किले की तरह परिसर: नोटिस में कहा गया है, परिसर को एक किले की तरह रखा गया है जहां प्रबंधन के अपने कानून हैं और किसी को भी उनके बारे में बात करने की इजाजत नहीं है। परिसर में तानाशाही रवैया हावी है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण है कि सीहोर जिले के सीएचएमओ को भी संस्थान के गेट पर दो से चार घंटे तक रोका गया।विद्यार्थियों ने जांच समिति को बताया कि उन्हें शिकायत करने पर अनुशासन के नाम पर उनके पहचान पत्र जब्त करने, प्रायोगिक परीक्षा में कम नंबर देने और परीक्षा में न बैठने देने जैसी धमकी दी गई।

'संचार साथी' जासूसी एप, देश में तानाशाही लागू करने की कोशिश

नई दिल्ली, एजेंसी

● कांग्रेस ने आरोप लगाया- हर नागरिक की बातचीत सुनना चाहती है सरकार

कांग्रेस ने नए मोबाइल हैंडसेट में 'संचार साथी' एप पहले से डालने संबंधी दूरसंचार विभाग के निर्देश को लेकर मंगलवार को आरोप लगाया कि यह एक जासूसी एप है और सरकार देश में तानाशाही लागू करने का प्रयास कर रही है। दूरसंचार विभाग ने मोबाइल हैंडसेट विनिर्माताओं और आयातकों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि सभी नए मोबाइल उपकरणों में धोखाधड़ी की सूचना देने वाला एप 'संचार साथी' पहले से मौजूद होना चाहिए।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने 'एक्स' पर पोस्ट कर आरोप लगाया कि संचार साथी एप लोगों की आवाज का गला घोंटने की भाजपा की एक और कोशिश है। उन्होंने कहा, विभिन्न हितधारकों और नागरिकों को विश्वास में लिए बिना इस ऐप को प्रीलोड करने का मोदी सरकार का एकतरफा निर्देश तानाशाही के समान है। सरकार यह क्यों जानना चाहती है कि नागरिक अपने परिवार और दोस्तों के साथ क्या बात करते हैं। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, संचार साथी एक जासूसी एप है और स्पष्ट रूप से यह हास्यास्पद है। नागरिकों को निजता का अधिकार है। हर किसी को निजता का यह अधिकार होना चाहिए कि वह सरकार की नजर के बिना परिवार और दोस्तों को संदेश भेज सके।

सीबीआई को झटका, रुबैया के अपहरण के आरोपी को जमानत

जम्मू। सीबीआई को मंगलवार को एक बड़ा झटका देते हुए एक विशेष अदालत ने 1989 में जम्मू कश्मीर के तत्कालीन गृह मंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी रुबैया सईद के अपहरण के सिलसिले में एक दिन पहले गिरफ्तार किए गए शफात अहमद शांगलू को रिहा कर दिया। अदालत ने 8 दिसंबर 1989 को हुए अपहरण के सिलसिले में पूछताछ के लिए शांगलू को सीबीआई को हिरासत में देने से इन्कार कर दिया। हिरासत में देने के अनुरोध संबंधी सीबीआई की याचिका को खारिज करते हुए विशेष अदालत ने कहा कि एजेंसी द्वारा दाखिल आरोपपत्र में उसका कोई जिक्र नहीं था। एजेंसी ने 35 साल पुराने मामले में गिरफ्तार शांगलू को हिरासत में देने का अनुरोध जम्मू की टाडा अदालत में यह दावा करते हुए किया था कि वह इतने सालों से फरार था।

एसआईआर के खिलाफ संसद परिसर में प्रदर्शन

नई दिल्ली, एजेंसी

● विपक्ष के नेताओं ने नारेबाजी कर की वापस लेने की मांग

विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के घटक दलों के सांसदों ने शीतकालीन सत्र के दौरान संसद में चुनाव सुधारों के विषय पर चर्चा की मांग करने के साथ एसआईआर का विरोध करते हुए मंगलवार को संसद परिसर में प्रदर्शन किया। प्रदर्शन कर रहे विपक्षी नेताओं ने 'एसआईआर वापस लो' के नारे लगाए।

विपक्षी दलों के सांसदों ने संसद भवन के मकर द्वार के निकट एकत्रित होकर विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा, द्रमुक नेता टीआर बालू और कई अन्य विपक्षी सांसद शामिल हुए। खरगे ने संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, विपक्ष एसआईआर का मुद्दा उठा रहा है, और हम इस मामले पर बहुत गंभीरता से चर्चा करना चाहते हैं, लेकिन राज्यसभा के सभापति ने इसकी अनुमति नहीं दी और सरकार इस पर चर्चा करने के लिए तैयार नहीं है। उन्होंने कहा, यह देश के लिए अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और लोकतंत्र के लिए हानिकारक है। हम इसके लिए लड़ रहे हैं। हम आज भी लड़ेंगे और कल भी लड़ेंगे।

संसद परिसर में एसआईआर के खिलाफ प्रदर्शन करते विपक्ष के नेता।

खरगे ने कहा, सभापति यह भी उल्लेख नहीं करते कि किन सदस्यों ने नोटिस दिया है या उनके विषय क्या हैं। राहुल गांधी ने फेसबुक पर पोस्ट किया, संसद भवन के बाहर आज 'इंडिया' गठबंधन ने एसआईआर के विरोध में प्रदर्शन किया। मोदी जी कह तो जाते हैं कि संसद भारत के लोगों की है, मगर जनता के जरूरी मुद्दों पर चर्चा से भागते रहते हैं। लोकतंत्र में मताधिकार से बड़ा जनता का मुद्दा क्या हो सकता है।

परंपरा का उत्सव

कर्नाटक के चिक्कमगलुरु में अनुसूया जयंती के हिस्से के रूप में आयोजित संकीर्तन यात्रा में भाग लेते हुए कलाकार वीरागसे नृत्य करते हैं।

पनडुब्बी आईएनएस अरिधमान परीक्षण के अंतिम चरण में : नौसेना प्रमुख

नई दिल्ली, एजेंसी

- परमाणु बैलिस्टिक मिसाइल से लैस तीसरी स्वदेशी पनडुब्बी शीघ्र नौसेना में होगी शामिल

नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने मंगलवार को कहा कि भारत की तीसरी स्वदेशी परमाणु बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी आईएनएस अरिधमान अब परीक्षण के अंतिम चरण में है और इसे जल्द ही भारतीय नौसेना शामिल कर लिया जाएगा। अरिहंत श्रेणी की तीन परमाणु बैलिस्टिक पनडुब्बियों से संबंधित इस पनडुब्बी में विस्तारित मिसाइल पेलोड है जिससे यह अगस्त 2024 में शामिल की गई आईएनएस अरिघाट की तुलना में अधिक लंबी दूरी की परमाणु मिसाइलों को ले जाने में सक्षम है।

नौसेना प्रमुख ने बुधवार को होने वाले नौसेना दिवस समारोह से पहले

वार्षिक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि नौसेना के पहले चार राफेल विमानों के 2029 में आने की योजना है। विमानवाहक पोतों पर तैनात किए जाने वाले ऐसे 26 विमानों के लिए द्विपक्षीय समझौते को अप्रैल में फ्रांस के साथ अंतिम रूप दिया गया था और समझौते के पांच साल बाद इनकी डिलीवरी शुरू हो जाएगी। इस पैकेज में हथियार, पुर्जे और सहायक उपकरण शामिल हैं और ये लड़ाकू विमान आईएनएस विक्रांत पर तैनात किए जाएंगे। नौसेना प्रमुख ने कहा कि हमने करीब 84,000 करोड़ रुपये के 83 बड़े अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए हैं। हमें उम्मीद है कि 2029 तक भारतीय नौसेना के लिए चार राफेल विमानों का पहला सेट मिल जाएगा। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है और इस बात पर ज़ोर दिया कि भारतीय नौसेना की सक्रियता और अग्रिम पंक्ति के जहाजों की मौजूदगी की वजह से पाकिस्तान को आगे बढ़ने पर रोक लग गयी थी और उसके बेड़े को नौसेना ने वहीं रोके रखा। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान आक्रामक रुख और युद्धक वाहक समूह की तैनाती की तत्काल कार्रवाई ने पाकिस्तानी नौसेना को अपने बंदरगाहों या मकरान तट के पास ही रहने पर मजबूर कर दिया। ऑपरेशन अभी भी जारी है और इसलिए कई जानकारियों का सार्वजनिक रूप से खुलासा नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी बंदरगाहों पर जाने वाले जहाजों के बीमा प्रीमियम में बढ़ोतरी हुई है, जिसके कारण जोखिम उठाने को तैयार व्यापारी जहाजों की संख्या में कमी आई है। पिछले सात महीनों में उत्तरी अरब सागर में अभियान की तेज गति को बरकरार रखा है।

समुद्री मार्गों की सुरक्षा को 40 युद्धपोत तैनात

नौसेना प्रमुख ने अन्य देशों के साथ अभ्यास करने के बारे में कहा, पिछले नौसेना दिवस के बाद से हमने 21 द्विपक्षीय, 9 बहुपक्षीय और 34 समुद्री साझेदारी अभ्यास किए हैं, पांच जंगी जहाजों की तैनाती की है और 13 संयुक्त ईजेडटी अभ्यास किए हैं। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि नौसेना ने महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को सुरक्षित करने और लगभग 5.6 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य के माल की सुरक्षा के लिए 40 प्रमुख युद्धपोत तैनात किए हैं। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारतीय नौसेना की टीमों ने हाल के अभियानों में 52 समुद्री डाकुओं को पकड़ा है और 2008 से नौसेना ने अदन की खाड़ी में निरंतर तैनाती बनाए रखी है और 138 जहाज भेजे हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में 40 जहाज समुद्री डकैती रोधी अभियानों में शामिल हैं और बल ने पिछले एक साल में समुद्र में 520 लोगों को बचाया है।

वर्ल्ड ब्रीफ

क्वात्रा ने की अमेरिकी सांसदों से बातचीत

वाशिंगटन। अमेरिका में भारत के राजदूत विनय क्वात्रा ने ऊर्जा, रक्षा और व्यापार जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने के लिए प्रभावशाली अमेरिकी सांसदों के एक समूह के साथ उपयोगी बातचीत की। क्वात्रा ने सोमवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि उन्हें अमेरिकी सीनेटर लिंडसे ग्राहम, रिचर्ड ब्लूमेंथल, शेल्डन व्हाइटहाउस, पीटर वेल्च, डैन सुलिवन और मार्कवेन मलिन की मेजबानी करने का मौका मिला। ये सभी सांसद वाशिंगटन स्थित इंडिया हाउस में पहुंचे थे। क्वात्रा ने भारत और अमेरिका के बीच मजबूत संबंधों के लिए उनके समर्थन पर आभार व्यक्त किया।

यूएई में प्रस्तुति देंगे अरिजीत और रहमान

दुबई। बॉलीवुड गायक अरिजीत सिंह 19 दिसंबर को अबू धाबी के एतिहाद अरीना में एक प्रदर्शन के साथ संयुक्त अरब अमीरात में एक नई संगीत श्रृंखला की शुरुआत करेंगे। कार्यक्रम के आयोजकों ने यह घोषणा की है। ऑस्कर विजेता ए.आर. रहमान भी अपने वंडरमेंट टूर के तहत 23 जनवरी, 2026 को इसी स्थान पर प्रस्तुति देंगे। उनकी प्रस्तुति के बाद 31 जनवरी को सितार वादक ऋषभ रिखीराम शर्मा दुबई के कोका-कोला एरिना में प्रस्तुति देंगे। इस शृंखला का आयोजन दुबई स्थित रियल एस्टेट कंपनी पैंथियन डेवलपमेंट द्वारा किया जा रहा है।

काला सागर में रूस के तीसरे टैंकर पर हमला

अंकारा। सूरजमुखी का तेल लेकर रूस से जॉर्जिया जा रहे एक टैंकर पर काला सागर में हमला किया गया। तुर्किये के समुद्री प्राधिकरण ने मंगलवार को बताया कि कुछ दिन पहले ही रूस के छद्म बेड़े में शामिल दो तेल टैंकर पर यूक्रेन की नौसेना ने ड्रोन से निशाना बनाया था। तुर्किये के समुद्री मामलों के महानिदेशालय ने बताया कि मिडवोल्गा-2 पर तुर्किये के तट से लगभग 80 मील दूर हमला हुआ। चालक दल के 13 सदस्यों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। पोत से आपात मदद का अनुरोध प्राप्त नहीं हुआ है।

पाकिस्तान में सुरक्षा बल केंद्र पर हमला

कराची। पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत में अर्धसैनिक बल के मुख्यालय के प्रवेश द्वार पर प्रतिबंधित बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) की एक महिला आत्मघाती हमलावर ने विस्फोट करके खुद को उड़ा लिया और इसके बाद काफी देर तक हुई मुठभेड़ में छह उग्रवादी मारे गए।

पुतिन के भारत दौरे पर एस-400, सुखोई 57 सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर होगी चर्चा

रूस के राष्ट्रपति दो दिन की भारत यात्रा पर गुरुवार को पहुंचेंगे नई दिल्ली

- राष्ट्रपति के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने दी जानकारी

नई दिल्ली, एजेंसी

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के चार दिसंबर से शुरू हो रहे भारत दौरे पर दोनों पक्षों के बीच एस-400 मिसाइल और सुखोई-57 लड़ाकू विमानों की खरीद सहित कई मुद्दों पर चर्चा होगी। पुतिन दो दिन की भारत यात्रा पर गुरुवार को नई दिल्ली आ रहे हैं। उनकी यात्रा से पहले राष्ट्रपति के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए यहां एक प्रेस वार्ता में कहा कि दोनों देशों के बीच रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, आपसी निवेश सहित कई मुद्दों पर बात होगी।

पेस्कोव ने प्रश्नों के जवाब देते हुए कहा कि एस-400 मिसाइल प्रणाली और सुखोई-57 पर भी बात होनी तय है। उन्होंने कहा एस-400 निश्चित रूप से एजेंडा का हिस्सा है। यह निश्चित रूप से हमारे एजेंडा में है। और मुझे कोई संदेह नहीं है कि इस पर चर्चा होगी। उनके साथ एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल आ रहा है जिसमें कई ऐसे सदस्य हैं जो इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे। ...उच्चतम

रूस के राष्ट्रपति पुतिन के प्रवक्ता दिमित्रि पेस्कोव

स्तर पर इसकी चर्चा होगी। सुखोई-57 और अमेरिका द्वारा एफ-35 भारत को बेचने के प्रयास के बारे में पूछे जाने पर पेस्कोव ने कहा, सुखोई-57 दुनिया के सर्वश्रेष्ठ (सैन्य) विमान हैं। यह आगामी यात्रा के दौरान निश्चित रूप से एजेंडा का हिस्सा होगा। हम विवरण के बारे में बात नहीं करेंगे। दुनिया में कुछ प्रतिस्पर्धी भी हैं और कुछ प्रतिस्पर्धी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं। कभी-कभी अनुचित प्रतिस्पर्धा के लिए वे गलत रास्ता भी अपना सकते हैं। लेकिन स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में शायद ही कोई सुखोई-57 का मुकाबला कर सके। उन्होंने कहा कि रूस का सैन्य उद्योग काफी अच्छा काम कर रहा है। उन्होंने कहा, पिछले चार साल में हमने अपना उत्पादन इस तरह से प्रबंधित किया है कि हम न सिर्फ अपनी सेना को यूक्रेन में उनके सैन्य अभियान के लिए हथियार देने में कामयाब रहे हैं, बल्कि हम निर्यात भी जारी रखने की स्थिति में हैं, और यह भारत के मामले में भी सच है। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना के मौजूदा हथियारों और उपकरणों में 36 प्रतिशत रूसी हैं जो काफी बड़ा आंकड़ा है। उन्होंने उम्मीद जतायी कि न सिर्फ यह स्थिति जारी रहेगी बल्कि ये आंकड़े और बढ़ेंगे। छोटे परमाणु रिएक्टरों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि इस पर भी चर्चा हो सकती है और रूस भारत को ये रिएक्टर देने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि दुनिया के देश रूस से ये रिएक्टर खरीदना चाहते हैं। रूसी अधिकारी ने कहा कि इनके अलावा मानवीय और वैज्ञानिक सहयोग, सांस्कृतिक सहयोग, उच्च तकनीक, फार्मास्यूटिकल, उत्तर-दक्षिण संपर्क मार्ग जैसे मुद्दों पर भी चर्चा होगी और कई महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर भी हस्ताक्षर किये जायेंगे। भारत को एक महत्वपूर्ण साझेदार बताते हुए उन्होंने उम्मीद जताई कि राष्ट्रपति पुतिन का यह दौरा उतना ही सफल रहेगा जितना एक साल पहले प्रधानमंत्री मोदी का मॉस्को का दौरा रहा था। रक्षा क्षेत्र के बारे में उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में रूस की विशेषज्ञता बढ़ी है और वह इसे भारत के साथ साझा करने के लिए तैयार है। उन्होंने ब्रह्मोस परियोजना का जिक्र करते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच रणनीतिक संबंध सिर्फ खरीद-बिक्री तक सीमित नहीं हैं, इसमें प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान भी शामिल है। पेस्कोव ने मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों में मैत्रीपूर्ण रुख के लिए भारत का धन्यवाद किया। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने यूक्रेन-रूस युद्ध पर भारत के रुख और युद्ध रोकने के प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों की भी सराहना की।

उन्होंने कहा कि भारत रूस का पक्ष सुनने के लिए हमेशा तैयार रहा है, जबकि यूरोपी देश बात ही नहीं करते। उन्होंने भारत के साथ चीन को भी रूस का महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार बताया और कहा कि वह भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों का सम्मान करते हैं तथा रूस दोनों देशों से साथ संबंध मजबूत करेगा।

भारत से सैन्य समझौते को ड्यूमा की मंज़ूरी

मॉस्को। रूस की संसद के निचले सदन 'ड्यूमा' ने राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की नई दिल्ली की राजकीय यात्रा से पहले भारत के साथ एक महत्वपूर्ण सैन्य समझौते को मंगलवार को मंजूरी दे दी। दोनों सरकारों के बीच 18 फरवरी को हस्ताक्षरित सैन्य साजो सामान संबंधी सहयोग के पारस्परिक आदान-प्रदान को प्रधानमंत्री मिखाइल मिशुस्टिन द्वारा अनुमोदन के लिए पिछले सप्ताह 'ड्यूमा' को भेजा गया था। 'ड्यूमा' के अध्यक्ष व्याचेस्लाव वोलोदिन ने सदन के पूर्ण अधिवेशन में कहा कि भारत के साथ हमारे संबंध रणनीतिक और व्यापक हैं तथा हम उन्हें महत्व देते हैं। हम समझते हैं कि आज समझौते को मंजूरी निश्चित रूप से हमारे संबंधों के विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। समझौता यह तय करता है कि रूस और भारत एक-दूसरे के यहां सैन्य टुकड़ियां, युद्धपोत और सैन्य विमान कैसे भेजेंगे और उनके बीच सैन्य साजो सामान सहायता किस तरह प्रदान की जाएगी। यह समझौता सैनिकों और सैन्य उपकरणों की तैनाती को नियंत्रित करेगा और साजो सामान संबंधी व्यवस्थाओं को भी तय करेगा।

चक्रवात के बाद भारत ने अग्रणी भूमिका निभाई

कोलंबो, एजेंसी

- श्रीलंकाई राष्ट्रपति कार्यालय ने भारत की भूमिका को सराहा

राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके के कार्यालय ने मंगलवार को कहा कि चक्रवात दितवा के बाद भारत ने तत्काल आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रयासों में अग्रणी भूमिका निभाई है। इस चक्रवात में 400 से अधिक लोग मारे गए और व्यापक तबाही हुई। राष्ट्रपति कार्यालय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके से बात कर हार्दिक संवेदना व्यक्त की और दोहराया कि भारत इस कठिन घड़ी में श्रीलंका और उसके लोगों के साथ मजबूती से खड़ा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को दिसानायके से बात की और उन्हें चक्रवात दितवा से प्रभावित सभी क्षेत्रों में पुनर्वास प्रयासों में निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया। टेलीफोन पर बातचीत में मोदी ने श्रीलंका में हुई जान-माल की हानि और तबाही पर संवेदना व्यक्त की और कहा कि भारत इस मुश्किल घड़ी में द्वीपीय राष्ट्र के लोगों के साथ पूरी एकजुटता और समर्थन के संग खड़ा है। श्रीलंका चक्रवात दित्वा के कारण व्यापक बाढ़, भूस्खलन और बुनियादी ढांचे को नुकसान से जूझ रहा है, जिससे कई जिले अलग-थलग पड़ गए हैं और देश की आपदा-प्रतिक्रिया क्षमता पर भारी दबाव पड़ रहा है। आपदा प्रबंधन केंद्र (डीएमसी) ने 16 नवंबर से चरम मौसम की स्थिति के कारण आई विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन में मंगलवार सुबह तक कम से कम 410 लोगों की मौत और 336 लोगों के लापता होने की पुष्टि की है। भारत ने ऑपरेशन सागर बंधु शुरू किया और एनडीआरएफ के 80 कर्मियों वाली दो शहरी खोज और बचाव टीम को द्वीपीय राष्ट्र में भेजा, जिससे पड़ोसी पहले की भावना की पुष्टि हुई। मंगलवार को यह घोषणा की गई कि श्रीलंका बाढ़ राहत सामग्री को सीमा शुल्क और लेवी से मुक्त करने की अनुमति देगा, जो आपदा प्रबंधन डीजी या रक्षा मंत्रालय के सचिव के नाम पर भेजी जाएं।

गर्भवती महिला को सुरक्षित निकाला

कोलंबो। भारत ने चक्रवात प्रभावित श्रीलंका में बचाव और राहत अभियानों को तेज करते हुए नौ माह की गर्भवती महिला को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया और उसे तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान की। भारतीय उच्चायोग ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में बताया कि पुट्टलम जिले में नौ माह की गर्भवती महिला को राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल ने सुरक्षित निकाल लिया और उसे चिकित्सा सहायता प्रदान की गई। इसमें कहा गया कि ऑपरेशन सागर बंधु उनके लिए जारी है।

हांगकांग आग का कारण पता लगाने को समिति गठित

हांगकांग। हांगकांग में एक बहुमंजिला आवासीय परिसर में स्थित इमारतों में पिछले दिनों लगी भीषण आग के कारण का पता लगाने और ऐसी त्रासदी रोकने के लिए सिफारिशें करने को लेकर एक न्यायाधीश की अध्यक्षता में स्वतंत्र समिति का गठन किया जाएगा। हांगकांग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जॉन ली ने निर्माण उद्योग में व्यवस्थागत बदलाव लाने का संकल्प जताया है। पुलिस ने मंगलवार को बताया कि और शव मिलने के बाद मृतकों की संख्या 156 हो गई है तथा करीब 30 अन्य अब भी लापता हैं। ली ने कहा कि हमें सच्चाई उजागर करनी होगी।

खालिदा के इलाज के लिए ब्रिटेन से आएंगे चिकित्सक

ढाका, एजेंसी

- लंदन में रह रहे जिया के बेटे लौट सकते हैं बांग्लादेश

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के स्वास्थ्य की गंभीर स्थिति के मद्देनजर ब्रिटेन से चिकित्सा विशेषज्ञों की एक टीम बांग्लादेश आएगी, ताकि निजी अस्पताल में चल रहे उनके इलाज का मूल्यांकन किया जा सके।

उनके निजी चिकित्सक ने मंगलवार को यह जानकारी दी। खालिदा जिया की तबीयत ज्यादा खराब होने के कारण उनके बेटे तारिक रहमान जल्द ही देश वापस लौट सकते हैं। पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने यह जानकारी दी। तारिक रहमान लंदन में एक दशक से अधिक समय से स्व-निर्वासन में रह रहे हैं। एवरकेयर अस्पताल के बाहर एजेडएम जाहिद हुसैन ने कहा कि जिया के इलाज की निगरानी कर रहे अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल बोर्ड में ब्रिटेन के विशेषज्ञ शामिल होंगे। हुसैन ने कहा कि ब्रिटेन के विशेषज्ञ आज उनकी जांच के लिए आएंगे।

बहन को इमरान खान से मिलने की मिली अनुमति

लाहौर। पाकिस्तान सरकार ने देश के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के स्वास्थ्य को लेकर अटकलों के बीच बड़ी संख्या में उनके समर्थकों के रावलपिंडी की अदियाला जेल के बाहर एकत्र होने के बाद, उनकी बहन को जेल में उनसे मिलने की मंगलवार को अनुमति दे दी। पूर्व क्रिकेटर खान (73) से मिलने पर एक महीने से अधिक समय से अघोषित प्रतिबंध था। खान अगस्त 2023 से कई मामलों में जेल में बंद हैं। मिलने की अनुमति ने देने से सोशल मीडिया पर ये अटकलें लगाई जा रही थीं कि क्या वह जीवित हैं या मौत हो चुकी है।

बेहतर हुई अमेरिका की शांति योजना

पेरिस, एजेंसी

- रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्ति योजना पर बोले राष्ट्रपति जेलेंस्की

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि ट्रंप प्रशासन की शांति योजना में किए जा रहे संशोधनों में प्रगति हो रही है और यह अब बेहतर लग रही है। उन्होंने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों से मुलाकात के बाद पेरिस में यह टिप्पणी की, जहां रूस के करीब चार साल से जारी युद्ध को समाप्त करने पर चर्चा हुई।

इसी बीच, रूसी राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास क्रेमलिन ने पुष्टि की कि व्लादिमीर पुतिन मंगलवार को अमेरिकी दूत स्टीव विटकॉफ से मिलेंगे। विटकॉफ की भूमिका पर तब सवाल उठे थे जब एक खबर आई कि उन्होंने पुतिन

के सलाहकार को यह सुझाव दिया था कि शांति योजना पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को कैसे मनाया जाए।

जेलेंस्की की पेरिस यात्रा उस बैठक के बाद हुई जिसमें अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने यूक्रेन-अमेरिका वार्ताओं को लाभप्रद बताया।

मूल कारणों के हल के बिना नहीं रुकेगा युद्ध

नई दिल्ली। यूक्रेन युद्ध रोकने के लिए अमेरिका की अगुवाई में जारी शांति वार्ता के बीच रूस ने एक बार फिर स्पष्ट किया है कि जिन कारणों से इस युद्ध की शुरुआत हुई थी उनके समाधान के बिना सैन्य अभियान नहीं रुकेगा। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के भारत दौरे से दो दिन पहले उनके प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि अमेरिका की मध्यस्थता काफी प्रभावी है, और उम्मीद जतायी की शांति वार्ता सफल रहेगी। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यूक्रेन की नाटो सदस्यता जैसे कुछ मुद्दों को लेकर रूस बिल्कुल समझौता नहीं करेगा।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 3 दिसंबर, बुधवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी 12.25 तक तत्पश्चात चतुर्दशी।

आज का पंचांग

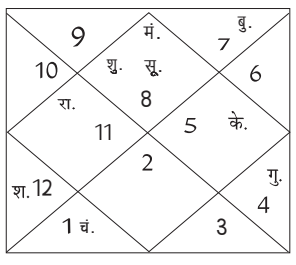

दिशाशूल- उत्तर, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल- मेष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र-भरणी 17.59 तक तत्पश्चात कृत्तिका।

मेष — आज जीवन में आ रहे परिवर्तनों को स्वीकारें। पति-पत्नी के बीच सहयोगात्मक और प्रेम व्यवहार बढ़ेगा। आपकी सफलताओं की लोग चर्चा करेंगे। लंबे समय से चला आ रहा तनाव दूर होगा। अस्थमा के रोगियों को अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए।

वृष — आज व्यवसाय में नया प्रयोग लाभकारी सिद्ध होगा। सरकारी कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि होगी। अच्छी संगत के कारण आपके कार्य सरलता से बन जाएंगे। साहित्य का अध्ययन कर सकते हैं।

मिथुन — आज आपकी प्रबंधन क्षमता की प्रशंसा होगी। शेयर मार्केट में संभलकर निवेश करें। पुराने मित्रों के साथ काफी अच्छा समय बितायेंगे। यात्राओं की योजना बना सकते हैं। नई स्किल्स सीखने के लिए बहुत अच्छा समय है।

कर्क — आज थकान और आलस्य आपके ऊपर हावी हो सकते हैं। दिल की अपेक्षा दिमाग से निर्णय लें। आपको कार्यक्षेत्र में उच्च अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। अभिमान से आपको दूर रहना चाहिए। गलतफहमी के कारण संबंधों में कटुता आ सकती है।

सिंह — आज बौद्धिक क्षमता का कुशल प्रयोग करेंगे। अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व में वृद्धि होगी। कर्मचारियों के साथ विवाद की स्थिति दूर होगी। घरेलू समस्याओं का समाधान होगा। मार्केटिंग संबंधी व्यवसाय में उच्च लाभ होने की संभावना है।

कन्या — आज रिसर्च संबंधी कार्यों में बाधा उत्पन्न हो सकती है। ट्रैफिक नियमों का सावधानी से पालन करें वरना आर्थिक दंड भुगतना पड़ सकता है। विरोधी आपके विरुद्ध षडयंत्र रच सकते हैं। मामा पक्ष के साथ अपने संबंध मधुर रखें।

तुला — आज कारोबार में बड़ी साझेदारी हो सकती है। आपके मन में नए-नए आइडियाज आ सकते हैं। मित्रों का उत्तम सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में उच्च पद मिल सकता है। धर्म-कर्म के प्रति आपका मन लगेगा। शत्रुओं के ऊपर आप भारी पड़ेंगे।

वृश्चिक — आज भौतिक विलासिता का आनंद उठाएंगे। संतान की नौकरी से संबंधित समस्या का समाधान होगा। अविवाहितों का विवाह तय हो सकता है। योजनाओं को अच्छी तरह से कार्यान्वित कर पाएंगे। इससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

धनु — आज व्यवसाय में बड़े सरकारी ऑर्डर मिलने की संभावना है। विवादित मुद्दों का कूटनीतिक समाधान मिलेगा। कार्यक्षेत्र का वातावरण थोड़ा अच्छा रहेगा। अधिकारी आपके विचारों से प्रभावित रहेंगे। पेट में वायु विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

मकर — आज धन समृद्धि में बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। दुष्ट लोगों की संगत से बचें। कार्यक्षेत्र में अपनी योग्यता का परिचय देंगे। नया कार्य आरंभ करने में कठिनाई होगी। मित्रों के साथ अच्छा समय बिताएंगे। बच्चों की पढ़ाई में परेशानियां होंगी।

कुंभ — आज व्यापार में बिक्री बढ़ने की संभावना है। आर्थिक समस्या दूर होगी। नई परियोजनाओं में धन निवेश कर सकते हैं। धैर्यपूर्वक आपको कार्य करना चाहिए। दैनिक दिनचर्या व्यवस्थित और अनुशासित रहेगी। किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है।

मीन — आज आपको अपनी फिटनेस पर ध्यान देना चाहिए। कार्यक्षेत्र में आपका अपमान हो सकता है। स्वास्थ्य खराब हो, तो मेडिकल चेकअप अवश्य कराएं। अपनी उपलब्धियों को लोगों से साझा न करें। मौसम की वजह से एलर्जी व बुखार की परेशानी होगी।

सुडोकू-179

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

1							2	
						6		
	5							
6						9		
					6			
		7						
2								6

सुडोकू - 178 का हल

5	7	4	1	8	9	2	3	6
9	3	8	4	2	6	5	1	7
2	6	1	7	3	5	8	4	9
8	1	9	6	5	4	7	2	3
7	5	6	3	1	2	9	8	4
4	2	3	8	9	7	6	5	1
6	8	7	2	4	1	3	9	5
1	9	2	5	7	3	4	6	8
3	4	5	9	6	8	1	7	2

वनडे और टेस्ट क्रिकेट मेरे खेल के मुताबिक है और मैं इसका अधिक लुत्फ उठाता हूं। मैं और वनडे खेलने के लिए उत्साहित हूं। जब रोहित और विराट एक ही टीम में होते हैं, तो आत्मविश्वास का स्तर एकदम अलग होता है।
-तिलक वर्मा, भारतीय बल्लेबाज

स्टेडियम

कानपुर नगर, बुधवार, 3 दिसंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

3 मैचों के लिए श्रीलंका जाएगी पाक टीम

लाहौर। पाकिस्तानी टीम अगले साल होने वाले टी-20 विश्व कप से पहले तीन मैचों की शृंखला के लिए श्रीलंका जाएगी। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने मंगलवार को इसकी पुष्टि की। पीसीबी ने कहा कि पाकिस्तान और श्रीलंका के बीच 7, 9 और 11 जनवरी को दम्बुला में तीन मैचों की टी20 अंतर्राष्ट्रीय शृंखला खेली जाएगी। टी-20 विश्व कप से पहले पाकिस्तान की टीम 30 जनवरी से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 शृंखला खेलेगी।

खेलो इंडिया से किशोरों को मिला उद्देश्य : टॉड

जयपुर। भारतीय टेनिस सर्किट में एक जाना-पहचाना नाम बन चुके ऑस्ट्रेलियाई कोच टॉड क्लार्क ने खेलो इंडिया की सराहना करते हुए कहा कि इससे किशोरों को उद्देश्य मिलता है। 2008 में भारत आने के बाद से क्लार्क ने देश की संस्कृति को अपनाया है। वर्तमान में वे ओडिशा स्थित कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी) में टेनिस निदेशक के रूप में काम कर रहे हैं और खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स राजस्थान 2025 में खिलाड़ियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। क्लार्क ने कहा कि उबाऊ किशोरावस्था से ज्यादा परेशान करने वाली कोई चीज नहीं होती। इन खेलों ने देशभर में युवाओं को खेल अपनाने, उसमें आगे बढ़ने और करियर बनाने का मौका दिया है।

आईटीटीएफ में भारत का अभियान समाप्त

चेंगदू (चीन)। भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा और उनकी टीम मंगलवार को स्टेज 1 के तीनों ग्रुप मैच हारकर आईटीटीएफ मिश्रित टीम विश्व कप 2025 टूर्नामेंट से बाहर हो गई हैं। जापान, ऑस्ट्रेलिया और क्रोएशिया के साथ ग्रुप 2 में शामिल, आठ सदस्यों वाली भारतीय टीम एक भी मैच नहीं जीत पाई। भारत अब आईटीटीएफ मिश्रित टीम विश्व कप टूर्नामेंट के तीनों एडिशन से पहले स्टेज में ही बाहर हो गया है।

आईपीएल नीलामी से ग्लेन ने नाम लिया वापस

सिडनी। आईपीएल में एक दशक के करियर में कुछ खास नहीं कर सके ग्लेन मैकसवेल ने अबुधाबी में 16 दिसंबर को होने वाली मिनी नीलामी से नाम वापस ले लिया। बिग शो के नाम से मशहूर 37 वर्ष के मैक्सवेल ने 2012 से हर आईपीएल (2019 को छोड़कर) खेला है। मैक्सवेल ने इंस्टाग्राम पर लिखा कि आईपीएल में कई यादगार सत्रों के बाद मैंने इस साल नीलामी से नाम वापिस लेने का फैसला किया है। यह फैसला है और लीग से जो कुछ भी मिला है, उसके प्रति कृतज्ञता जताते हुए लिया है।

इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज रोबिन स्मिथ का निधन

लंदन। इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज रोबिन स्मिथ का मंगलवार को ऑस्ट्रेलिया के पर्थ स्थित उनके घर पर निधन हो गया। वह 62 वर्ष के थे। स्मिथ को 80 और 90 के दशक में कर्टली एम्ब्रोस, कर्टनी वॉल्श, मैल्कम मार्शल और पैट्रिक पैटरसन जैसे वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाजों का सामना करने के लिए जाना जाता है। दाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने 1988 से 1996 के बीच 62 टेस्ट मैचों में 43.67 के औसत से 4236 रन बनाए थे।

सूर्यवंशी के नाबाद शतक के बावजूद महाराष्ट्र से हारा बिहार

कोलकाता, एजेंसी

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी

- 14 वर्ष की उम्र में तीसरा टी-20 शतक जड़ने वाले इकलौते बल्लेबाज बने वैभव

प्रतिभावान बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी की 61 गेंद में नाबाद 108 रन की पारी के बावजूद बिहार को मंगलवार को सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के ग्रुप बी मैच में महाराष्ट्र के खिलाफ तीन विकेट से हार का सामना करना पड़ा। बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर बिहार ने 14 साल के सूर्यवंशी की नाबाद पारी से तीन विकेट पर 176 रन बनाए। उन्होंने सात चौके और सात छक्के मारे। इसके साथ ही वह 14 वर्ष की उम्र में तीसरा टी-20 शतक जड़ने वाले दुनिया के इकलौते खिलाड़ी बने।

इसके जवाब में महाराष्ट्र ने कप्तान पृथ्वी साव की 30 गेंद में 66 रन की पारी के अलावा नीरज जोशी (30), रंजीत निकम (27) और निखिल नाईक (22) की पारियों से पांच गेंद शेष रहते 7 विकेट पर 182 रन बनाकर जीत दर्ज की। मोहम्मद इजहार और सकीबुल गनी ने दो-दो विकेट चटकाकर बिहार को मैच में बनाए रखा, लेकिन महाराष्ट्र ने अंततः जीत दर्ज की।

जाधवपुर यूनिसर्विटी मैदान पर गोवा ने मध्य प्रदेश को सात विकेट से हराया। मध्य प्रदेश के 171 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए गोवा ने सुयश प्रभुदेसाई (नाबाद 75) और अभिनव तेजराणा (55) के अर्धशतक से 18.3 ओवर में तीन विकेट पर171 रन बनाकर जीत दर्ज की। मध्य प्रदेश ने इससे पहले हरप्रीत सिंह के 80 रन की बदौलत छह विकेट पर 170 रन बनाए।

हार्दिक पंड्या के 77 रन से बड़ौदा ने पंजाब को सात विकेट से हराया

हैदराबाद। हरफनमौला हार्दिक पंड्या ने दो महीने बाद प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी करते हुए नाबाद 77 रन बनाए, जिसकी मदद से बड़ौदा ने ग्रुप सी मैच में पंजाब को 7 विकेट से हराया। पंड्या ने 42 गेंद में 7 चौके और 4 छक्के जड़े। पंजाब ने 20 ओवर में आठ विकेट पर 222 रन बनाए, जिसमें अभिषेक शर्मा के 19 गेंद में 50 रन शामिल है। पंड्या की पारी के दम पर बड़ौदा ने 19 .1 ओवर में तीन विकेट पर 224 रन बनाए। सितंबर में दुबई में एशिया कप सुपर फोर्स में श्रीलंका के खिलाफ खेलने के बाद पंड्या का यह पहला प्रतिस्पर्धी मैच था। उन्होंने चार ओवर गेंदबाजी करके 52 रन दिए और एक विकेट भी लिया। बड़ौदा इस समय आठ अंक लेकर तालिका में तीसरे स्थान पर है जबकि गुजरात शीर्ष पर और पंजाब दूसरे स्थान पर है। वहीं गुजरात ने पुडुच्चेरी को नौ विकेट से हराया। पुडुच्चेरी की टीम 13 .1 ओवर में 83 रन पर आउट हो गई, जबकि गुजरात ने जवाब में नौ ओवर में एक विकेट खोकर 84 रन बना लिए।

पहली बार त्रिपुरा से हारा दिल्ली, पडिक्कल के शतक से कर्नाटक की जीत

अहमदाबाद। दिल्ली का घरेलू सत्र में निराशाजनक प्रदर्शन जारी रहा जब मंगलवार को ग्रुप डी मैच में आईपीएल खिलाड़ियों की मौजूदगी के बावजूद उसे त्रिपुरा की कमजोर टीम के खिलाफ पहली बार 12 रन से हार मिली। रणजी ट्रॉफी में भी दिल्ली को जम्मू-कश्मीर से पहली बार शिकस्त मिली थी। दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) के अध्यक्ष रोहन जेटली और सचिव अशोक शर्मा को टीम चयन, सहयोगी स्टाफ के चुनाव और सरनदीप सिंह की नियुक्ति को लेकर सवालों का सामना करना पड़ सकता है। रणजी में दिल्ली को अपने आखिरी दोनों मैच जीतने के बावजूद नॉकआउट में पहुंचने के लिए किसी चमत्कार की जरूरत होगी। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में भी टीम चार में से दो मैच गंवाकर मुश्किल में है। त्रिपुरा के 158 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दिल्ली के बल्लेबाजों ने निराश किया और मणिशंकर मूरासिंह (19 रन पर दो विकेट) तथा विक्की साहा (29 रन पर दो विकेट) की गेंदबाजी के सामने 8 विकेट पर 145 रन ही बना सके। मूरासिंह ने इससे पहले नाबाद 25 रन की पारी भी खेली, जिससे त्रिपुरा ने पांच विकेट पर 157 रन बनाए।

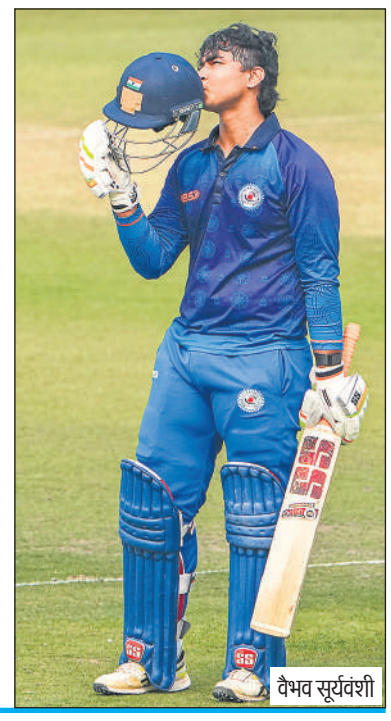

वैभव सूर्यवंशी

जीत के लिए कोहली-रोहित पर देश की नजरें

वनडे विश्व कप 2027 से पहले दोनों खिलाड़ियों के लिए हर मैच फिटनेस और फॉर्म को साबित करने का जरिया

- राची वनडे में जीत के सूत्रधार रहे दोनों खिलाड़ियों ने विश्व कप के लिए अपना दावा किया पुख्ता

रायपुर, एजेंसी

अफवाहों के बीच दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बुधवार को दूसरा वनडे और शृंखला जीतने के लिए भारत की उम्मीदें विराट कोहली के शानदार फॉर्म और रोहित शर्मा की दमदार मौजूदगी पर लगी होंगी। कोहली के 52वें वनडे शतक और रोहित की 57 रन की पारी के दम पर भारत ने रांची में पहले मैच में दक्षिण अफ्रीका को 17 रन से हराया। वनडे विश्व कप 2027 में अभी दो साल है और ऐसे में कोहली और रोहित के लिए हर मैच अपनी फिटनेस और फॉर्म को साबित करने का जरिया है।

मुख्य कोच गौतम गंभीर से बढ़ते मतभेदों का मसला भी अहम है। इसे लेकर लग रही अटकलों के बीच लगता है कि बीसीसीआई को कहीं न कहीं दखल देना होगा। भारत की जीत के सूत्रधार रहे रोहित और कोहली ने दक्षिण अफ्रीका में होने वाले विश्व कप के लिए अपना दावा पुख्ता कर दिया है। रोहित के प्रदर्शन से भारत ने अक्टूबर में ऑस्ट्रेलिया को सिडनी वनडे में नौ विकेट से हराया था। चयन समिति के प्रमुख अजित अगरकर और गंभीर ने विश्व कप में दोनों की भागीदारी को लेकर कुछ नहीं कहा है जो तनाव की वजह हो सकता है। पहला मैच जीतने के बावजूद भारत की चिंता कम नहीं हुई है।

लिस्ट ए क्रिकेट में प्रभावी प्रदर्शन करने वाले ऋतुराज गायकवाड़ को चौथे नंबर पर भेजा गया, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं दिखे। कार्यवाहक कप्तान केएल राहुल छठे नंबर पर उतरे। वॉशिंगटन सुंदर को बल्लेबाजी क्रम में प्रयोगों की आदत हो चुकी है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलकाता टेस्ट में तीसरे नंबर पर उतरने के बाद उन्हें पहले वनडे में पांचवें नंबर पर भेजा गया, लेकिन वह बड़ी पारी नहीं खेल सके। गेंदबाजी में उन्होंने तीन ही ओवर डाले और 18 रन दिए। हर्षित राणा ने नई गेंद से दो विकेट लिए, लेकिन बाद में काफी रन दिए। उन्हें इस पर नियंत्रण करना होगा खासकर जब 34वें ओवर के बाद सिर्फ एक ही गेंद से खेलना होता है। बल्ले और गेंद के बीच संतुलन के लिए आईसीसी के नए नियम के तहत उपलब्ध दो में से एक ही गेंद 34वें से 50वें ओवर के बीच इस्तेमाल की जा सकती है।

कुलदीप यादव ने 68 रन देकर 4 विकेट लिए। वह महंगे भले ही साबित हुए, लेकिन उनकी विविधतापूर्ण गेंदबाजी के दम पर दक्षिण अफ्रीका वापसी के प्रयास के बावजूद नाकाम रहा। दक्षिण अफ्रीका ने एक समय 3 विकेट 11 रन पर गंवा दिये थे लेकिन इसके बाद शानदार वापसी की। मार्को यान्सेन ने 26 गेंद में अर्धशतक और 39 गेंद में 70 रन बनाए। मैथ्यू ब्रीज्के ने भारत के खिलाफ पहला वनडे खेलते हुए 72 रन बनाए। दक्षिण अफ्रीका ने पहला वनडे कप्तान तेम्बा बावुमा और स्पिनर केशव महाराज के बिना खेला जिन्हें आराम दिया गया था। अब दोनों की वापसी से टीम को मजबूती मिलेगी। शहीद वीर नारायण सिंह स्टेडियम पर एकमात्र वनडे जनवरी 2023 में हुआ था जब पिच से मिलने वाली मदद से मोहम्मद शमी और मोहम्मद सिराज ने न्यूजीलैंड टीम को 108 रन पर आउट कर दिया था। भारत ने 30 ओवर बाकी रहते आठ विकेट से जीत दर्ज की थी। यहां दिसंबर 2023 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 मैच में भी भारत ने 20 रन से जीत दर्ज की थी।

भारत : केएल राहुल (कप्तान), रोहित शर्मा, यशस्वी जायसवाल, विराट कोहली, तिलक वर्मा, ऋषभ पंत, वाशिंगटन सुंदर, रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, नीतीश कुमार रेड्डी, हर्षित राणा, रुतुराज गायकवाड़, प्रसिद्ध कृष्णा, अर्शदीप सिंह, ध्रुव जुरेल।

दक्षिण अफ्रीका : तेम्बा बावुमा (कप्तान), एडेन मारक्रम, डेवाल्ड ब्रेविस, नांद्रे बर्गर, क्विंटन डी कॉक, मार्को यान्सेन, टोनी डी जॉर्जी, रुबिन हरमन, ओटनील बार्टमैन, कॉर्बिन बॉश, मैथ्यू ब्रीट्ज़के, केशव महाराज, लुंगी एनगिडी, रयान रिकेलटन, प्रेनेलन सुब्रायन।

मैच दोपहर 1:30 बजे

कोहली-रोहित की मौजूदगी में भारत का सामना करना कोई नई बात नहीं : बावुमा

रायपुर। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान तेम्बा बावुमा का मानना है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा की मौजूदगी वाली भारतीय टीम का सामना करना कोई नई बात नहीं है, लेकिन इससे मेजबान टीम को मजबूती मिलती है। बावुमा की अगुवाई में दक्षिण अफ्रीका ने दो टेस्ट मैचों की शृंखला में भारत को 2-0 से करारी शिकस्त दी थी। बावुमा तीन मैचों की वनडे शृंखला के शुरुआती मुकाबले में एकादश का हिस्सा नहीं थे, लेकिन वह बुधवार को खेले जाने वाले दूसरे वनडे में वापसी के लिए तैयार हैं।

रांची में खेले गए पहले मैच में कोहली के 52वें वनडे शतक और रोहित के 57 रनों की बदौलत भारत ने 17 रन से जीत दर्ज की थी। बावुमा ने शहीद वीर नारायण स्टेडियम में दक्षिण अफ्रीका के अभ्यास सत्र से पहले कहा कि इन दो खिलाड़ियों के आने से टीम को मजबूती मिलती है। जैसा कि हमने शृंखला की शुरुआत में कहा था। ये दोनों खिलाड़ी काफी अनुभवी और कुशल हैं। इससे टीम को फायदा ही होगा। यह ऐसी बात नहीं है जिसके बारे में हमें जानकारी न हो।

बावुमा ने कहा कि रोहित की मौजूदगी वाली भारतीय टीम ने 2007 में दक्षिण अफ्रीका में जब टी-20 विश्व कप जीता था तक वह स्कूली छात्र थे। हमने रोहित के खिलाफ खेला है। मुझे लगता है कि 2007 के टी-20 विश्व कप के समय मैं स्कूल में था। मेरा मतलब है, ये खिलाड़ी काफी समय से भारतीय टीम में है, इसलिए इसमें कोई नई बात नहीं है। ये विश्व स्तरीय खिलाड़ी हैं। उनके खिलाफ खेलना कोई नई बात नहीं है, हम उनका सामना कर चुके हैं। यह भी सही है कि उनकी मौजूदगी में हमें ज्यादातर मैचों में निराशा मिली है, लेकिन हमने उनके खिलाफ अच्छा समय भी बिताया है। यह सब इस शृंखला को और भी रोमांचक बनाता है। बावुमा ने इस बीच कहा कि दूसरे टेस्ट मैच के चौथे दिन के खेल के दौरान दक्षिण अफ्रीका के मुख्य कोच शुकरी कोनराड द्वारा इस्तेमाल किए गए 'ग्रोवेल (घुटना टेकने पर मजबूर करना)' शब्द पर उन्हें स्पष्टीकरण देने की कोई जरूरत नहीं है।

श्रो-डाउन विशेषज्ञों के खिलाफ दोनों दिग्गजों ने किया अभ्यास

रायपुर। द. अफ्रीका के खिलाफ दूसरे वन से पहले विराट कोहली और रोहित शर्मा ने अभ्यास सत्र में श्रो-डाउन विशेषज्ञों के खिलाफ जमकर अभ्यास किया। कोहली ने श्रो-डाउन विशेषज्ञ रघु (दाएं हाथ) और नुवान सेनेविरत्ने (बाएं हाथ) के खिलाफ कुछ करारे प्रहार किए। मुख्य कोच गौतम गंभीर भारतीय टीम के दोनों नेट पर नजर रखे थे। कोहली सत्र पूरा करने के बाद गंभीर से कुछ भी बोले बिना आगे बढ़ गए। कोहली के ड्रेसिंग रूम जाने के बाद रोहित भी ड्रेसिंग रूम की ओर बढ़े लेकिन उन्होंने थोड़ी देर रुक कर गंभीर से बात की। यशस्वी जायसवाल ने बड़े शॉट खेलने का अभ्यास किया तो वही ऋषभ पंत ने आखिर में अभ्यास करने वालों में शामिल थे।

आलोचना पर ध्यान दूंगा तो खेल नहीं पाऊंगा : राणा

मुख्य कोच गौतम गंभीर द्वारा पक्ष लेने के लिए निशाने पर रहने वाले तेज गेंदबाज हर्षित राणा का कहना है कि वह किसी भी शोर पर ध्यान नहीं देते क्योंकि ऐसा करने से वह खुलकर नहीं खेल पाएंगे। गंभीर के कार्यकाल में 23 साल के इस तेज गेंदबाज ने पिछले साल ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान पर्थ टेस्ट में पदार्पण के बाद भारत के लिए सभी प्रारूपों में पदार्पण किया है। हालांकि हर्षित ने अपने प्रदर्शन से सभी प्रारूपों में काफी प्रभावशाली प्रदर्शन नहीं किया है लेकिन उन्हें टीम के मुख्य कोच का पूरा समर्थन मिला है।

यान्सेन ने बल्ले से सुधार किया, वह अब बेहतरीन ऑलराउंडर : कालिस

जाक कालिस

मार्को यान्सेन

बेंगलुरु। दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज क्रिकेटर जाक कालिस ने कहा कि मार्को यान्सेन ने हाल के महीनों में अपनी बल्लेबाजी में जो सुधार किया है, वह उन्हें आधुनिक क्रिकेट के शीर्ष हरफनमौला खिलाड़ियों में जगह बनाने में मददगार होगा। यान्सेन ने भारत दौरे पर आक्रामक बल्लेबाज के तौर पर अपनी साख को मजबूत करते हुए गुवाहाटी में टेस्ट और फिर रविवार को रांची में पहले वनडे में तेजी से अर्धशतक बनाए। कालिस ने मंगलवार को एसए20 द्वारा आयोजित विशेष बातचीत के दौरान कहा कि उसका साल शानदार रहा है, है ना? उसमें हमेशा से क्षमता थी। बस उसे अपने खेल को समझने की जरूरत थी। जाहिर है अब वह इसे समझ गया है और अच्छा संतुलन बना रहा है, अपने समय के सर्वश्रेष्ठ हरफनमौला खिलाड़ियों में शामिल रहे कालिस ने कहा कि यान्सेन की गेंदबाजी शानदार रही है। कुछ वर्षों में उन्होंने बल्ले से अपनी प्रतिभा का पूरा इस्तेमाल नहीं किया था लेकिन अब उन्होंने इसमें सुधार किया है। वह अब बेहतरीन हरफनमौला हैं। मुझे लगता है कि वह एसए20 में एक बड़ी भूमिका निभाएंगे। बल्ले से योगदान देने के अलावा यान्सेन ने भारत के खिलाफ दो टेस्ट मैचों में 12 विकेट भी लिए थे। दक्षिण अफ्रीका ने इस शृंखला को 2-0 से जीत था। कालिस को एसए20 यान्सेन से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि उनकी टीम (सनराइजर्स ईस्टर्न केप) उसे अलग-अलग भूमिकाओं में इस्तेमाल कर सकती है। निचले क्रम में वह प्रभावी है, लेकिन उसकी बल्लेबाजी को देखते हुए टीम उसका इस्तेमाल कहीं भी कर सकती है। वह एक बेहतरीन ऑलराउंडर साबित होगा। दक्षिण अफ्रीका के लिए 166 टेस्ट मैचों में 45 शतकों के साथ 55.37 की औसत से 13289 रन बनाने वाले कालिस को कॉर्बिन बॉश से भी हरफनमौला प्रदर्शन की उम्मीद है। बॉश ने रांची वनडे में भारत के खिलाफ 67 रनों की पारी खेलकर और दो विकेट लेकर अपने कौशल की झलक दिखाई थी। कालिस ने कहा कि कहा कि एसए20 का दक्षिण अफ्रीका की क्रिकेट पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और खासकर युवा प्रतिभा को पहचानने में इसकी शानदार भूमिका रही है। कालिस ने उम्मीद जताई कि 26 दिसंबर से शुरू होने वाला एसए20 का चौथा सत्र आईसीसी टी20 विश्व कप से पहले दक्षिण अफ्रीका के खिलाड़ियों के लिए एक अच्छी तैयारी साबित होगा।

जूनियर महिला वर्ल्ड कप | कनिका सिवाच और हिना बानो शानदार हैट्रिक लगाकर स्कोरिंग में सबसे आगे रहीं

भारत की श्रेष्ठ शुरुआत, नामीबिया को 13-0 से रौंदा

सैंटियागो (चिली), एजेंसी

भारतीय टीम ने पूल सी के अपने पहले मैच में नामीबिया को 13-0 से रौंद कर महिला एफआईएच हॉकी जूनियर विश्व कप 2025 में अभियान की शुरुआत की। सेंट्रो डेपोर्टिवो डे हॉकी सेस्पेड एस्टाडियो नेशनल में हुए मुकाबले में भारतीय टीम के लिए कनिका सिवाच ने 12वें, 30वें, 45वें मिनट और हिना बानो 35वें, 35वें, 45वें मिनट में हैट्रिक लगाकर स्कोरिंग में आगे रहीं, जबकि साक्षी राणा ने 10वें, 23वें मिनट में दो गोल किए। बिनिमा धन ने 14वें, सोनम ने 14वें, साक्षी शुक्ला ने 27वें, इशिका ने 36वें, और मनीषा ने 60वें मिनट में एक-एक गोल किए।

भारत ने शुरू में ही लय बना ली और विपक्षी टीम पर लगातार दबाव बनाए रखा। 10वें मिनट में सफलता मिली जब साक्षी राणा ने एक तेज रिवर्स फ्लिक से गोल किया। कनिका सिवाच ने जल्द फिनिश के साथ दूसरा गोल किया। इससे पहले बिनिमा धन और सोनम के तेज स्ट्राइक ने पहले क्वार्टर के आखिर तक स्कोर 4-0 कर दिया। दूसरे क्वार्टर में राणा ने दूसरा गोल किया और साक्षी शुक्ला ने पेनल्टी-कॉर्नर ड्रैगफ्लिक को गोल में बदला। सिवाच ने हाफ-टाइम से ठीक पहले एक और गोल करके बढ़त को 7-0 किया। भारत ने तीसरे क्वार्टर में भी उसी लय से शुरुआत की। हिना बानो ने जल्दी-जल्दी दो गोल किए, जिसमें एक टॉप-कॉर्नर फिनिश था। इशिका ने एक रिबाउंड पर गोल करके स्कोर डबल-डिजिट तक पहुंचाया। बानो ने पेनल्टी-कॉर्नर डिफ्लेक्शन से हैट्रिक पूरी की और सिवाच ने भी हैट्रिक पूरी करके स्कोर को आखिरी क्वार्टर में 12-0 किया। मनीषा के आखिरी गोल ने 13-0 की जीत पूरी की। भारतीय टीम बुधवार को अगले ग्रुप-स्टेज मैच में जर्मनी भिड़ेगी।

एफआईएच पुरुष जू. हॉकी विश्व कप

फ्रांस क्वार्टर फाइनल में, ऑस्ट्रेलिया बाहर

चेन्नई। पिछले सत्र के रजत पदक विजेता फ्रांस ने बांग्लादेश को 3-2 से हराकर अपना अजेय क्रम जारी रखते हुए मंगलवार को एफआईएच पुरुष जूनियर हॉकी विश्व कप के क्वार्टर फाइनल में सीधे प्रवेश किया। इस जीत से फ्रांस पूल 'एफ' में नौ अंक लेकर शीर्ष पर है। फ्रांस ने इससे पहले कोरिया को 11-1 और ऑस्ट्रेलिया को 8-3 से हराया था। पूर्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया का दूसरे जूनियर विश्व कप खिताब का 28 साल का इंतजार जारी रहेगा क्योंकि टीम पूल एफ मैच में कोरिया को 3-1 से हराने के बावजूद क्वार्टर फाइनल के लिए क्वालीफाई करने में नाकाम रही। ऑस्ट्रेलिया ने एकमात्र खिताब इंग्लैंड के मिल्टन कैनेस में 1997 में जीता था। खिताबी दौड़ से बाहर हो चुकी चिली ने पूल बी में ओमान पर सांत्वना जीत दर्ज की।

हाईकोर्ट ने बजरंग और विनेश की याचिका की खारिज

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने भारतीय कुश्ती महासंघ के दिसंबर 2023 में हुए चुनाव को चुनौती देने वाली बजरंग पूनिया, साक्षी मलिक, विनेश फोगाट और सत्यव्रत कादियान की याचिका खारिज कर दी क्योंकि अलग अलग तारीखों पर भी वे पेश नहीं हुए। तीनों की उम्मीदवार अनिता श्योराण को हराकर संजय सिंह उस समय अध्यक्ष बने थे।

न्यायाधीश मिनी पुष्करना ने 27 नवंबर को सुनवाई करते हुए कहा कि इस दौरान एक भी याचिकाकर्ता मौजूद नहीं था और दो सुनवाई में भी वे नहीं आए। लगता है कि मामले को आगे ले जाने में याचिकाकर्ताओं की रुचि नहीं है। पहलवानों ने आरोप लगाया था कि डब्ल्यूएफआई चुनाव अच्छे और पारदर्शी माहौल में नहीं हुए थे। उन्होंने चुनाव प्रक्रिया में अनियमितताओं के आरोप लगाए थे। याचिकाकर्ताओं के सुनवाई के दौरान पेश नहीं होने पर अदालत ने याचिका रद्द कर दी।

सरकार ने एशियाई पैरा खेलों में जाने की 161 सदस्यीय दल को दी मंजूरी

नई दिल्ली, एजेंसी

- दुबई में 7-14 दिसंबर तक होने वाले आयोजन में शामिल होगा भारतीय दल

खेल मंत्रालय ने दुबई में 7-14 दिसंबर तक होने वाले एशियाई युवा पैरा खेलों के लिये 161 सदस्यीय भारतीय दल को मंजूरी दे दी लेकिन अतीत में विदेश में कुछ अधिकारियों और खिलाड़ियों के गायब होने की घटनाओं को देखते हुए सभी की पृष्ठभूमि की जांच भी अनिवार्य कर दी है।

सूची में 99 खिलाड़ियों (61 पुरुष और 38 महिलाएं), 62 कोचों, सहयोगी स्टाफ और दल के अधिकारियों के नाम है। मंत्रालय ने दल के लौटने के 30 दिन के भीतर प्रदर्शन पर भी विस्तृत रिपोर्ट मांगी है, जिसमें एक्शन फोटो और अन्य विजुअल हैं। भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) को भेजे पत्र में कहा गया, अतीत में विदेश में कुछ अधिकारियों और खिलाड़ियों के गायब होने की घटनाओं से मंत्रालय का मानना है कि दल के सदस्यों और अधिकारियों की पृष्ठभूमि की भारतीय खेल प्राधिकरण या राष्ट्रीय खेल महासंघों द्वारा पूरी जांच कराई जाये।

पीसीआई महासचिव जयवंत गुंडू हम्मानावर अकेले अधिकारी है जिनकी यात्रा सरकार के खर्चे पर नहीं होने के आधार पर मंजूरी मिली है। वह दल प्रमुख भी होंगे। मंत्रालय ने कहा कि पीसीआई यह सुनिश्चित करेगी कि पीसीआई की कार्यकारी समिति, किसी राष्ट्रीय खेल महासंघ या अन्य खेल ईकाई में पदधारी कोई व्यक्ति, जिसका नाम सूची में है, उसकी लागत सरकार द्वारा वहन नहीं की जाएगी। कुछ शीर्ष पैरा एथलीटों ने बड़े टूर्नामेंटों के दौरान सहयोगी स्टाफ और व्हीलचेयर सहयोगियों के गायब होने के मसले पर चिंता जताई थी। खिलाड़ियों के गायब होने का कोई मामला प्रकाश में नहीं आया है, लेकिन अधिकारियों द्वारा विदेशी स्पर्धाओं को 'छुट्टियों की तरह' मनाने की शिकायतें मिलती रही हैं। शीर्ष सूत्र ने बताया कि अक्टूबर में एशियाई पैरा टेबल टेनिस चैंपियनशिप के दौरान व्हीलचेयर पर निर्भर कोच अपने बेटे को सहयोगी के रूप में ले गया और बीजिंग में स्पर्धा के दौरान दोनों गायब हो गए। दोनों खरीदारी और घूमने में व्यस्त थे। कोच मैच देखने भी नहीं आया और ऐसा काफी समय से हो रहा था।